ज्ञानाञ्जलि

वर्ष 2014-2015

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ. प्र.)

बैच द्वारा 'बी'-ग्रेड प्रमाणित

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

ाएँ से दाएँ) श्री जे.पी. सिंह, डॉ. मोनिका सिंह, डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या), श्रीमती रंजना जैन
(बाएँ से दाएँ) डॉ. किशोर कुमार, श्री धीरज कुमार, डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ.अनीता रानी राठौर,
श्री संजीव कुमार, डॉ. सत्यन्त कुमार

सम्पादक मण्डल

एँ से दाएँ) डॉ० दीप्ति वाजपेयी, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या), डॉ. दिव्या नाथ,
दाएँ) डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. मिन्तु, श्रीमती दीक्षा, डॉ. जीत सिंह आनन्द, डॉ. अरविन्द कुमार या

ज्ञानाञ्जलि

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर- गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)

नैक द्वारा 'बी'–ग्रेड प्रमाणित

अंक - अष्टम्

वर्ष - 2015

प्रधान सम्पादक

डॉ० अर्चना सिंह

संरक्षक

डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग

प्राचार्या

:- सम्पादक मण्डल :-

डॉ० दिव्या नाथ

डॉ० निधि रायज़ादा

डॉ० दीप्ति वाजपेयी

डॉ० जीत सिंह

डॉ० नेहा त्रिपाठी

डॉ० अरविन्द कुमार

डॉ० मिन्तु

डॉ० दीक्षा

डॉ० नीलम शर्मा

श्री प्रमोद कुमार मिश्र

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

शस्य श्यामला बादलपुर की हरी भरी उर्वर धरती पर जन–गण मंगल करने के हित, विद्या दीप जलाया है।

गंगा यमुना की धारायें इसके तट पावन करती

मुक्त प्रदूषण शीतल छाया, तन मन को पुलकित करती

शान्ति समन्वय नैतिकता हित ज्ञान का दीप जलाया है।

शस्य श्यामला .....

खेत–खेत क्यारी–क्यारी में, नित्य नया जीवन भरती

श्रम सीकर सिंचित यह माटी चन्दन सा जग महकाती

बाल पुष्प का सौरभ माटी चन्दन अगरु जलाया है

शस्य श्यामला .....

इसका है इतिहास निराला गाथा गायन अलबेला

मिहिर भोज की कीर्ति कथा से इसका मस्तक गर्वीला

आगत भी है परम्परागत विद्या दुर्ग सजाया है।

शस्य श्यामला .....

आजादी के प्रथम युद्ध की साक्षी है पावन धरती

बुद्ध तथागत की करुणा भी ममता का संचय करती

समरस की सुन्दर संध्या में रंजन द्वीप जलाया है।

शस्य श्यामला .....

भव्य भारती के पदतल में करें अर्चना करें नमन

रमा विजय श्री मिले सभी को, जितेन्द्रिय सब बने युवा जन

ज्ञान सूर्य से मिटे तिमिर सब, ज्योतिर्पुंज जलाया है।

शस्य श्यामला .....

ऊर्जा बौद्धिकता मानवता शुचिता पावनता और सृजन

विद्या मन्दिर बादलपुर का आओ कर लें अभिनन्दन

विद्या हर घर–घर तक पहुँचे ज्ञान का शंख बजाया है

शस्य श्यामला .....

अनुक्रमणिका

1. कुलगीत	कु.मा.रा.म. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर	
2. संदेश	कुलपति चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ	
3. संदेश	निदेशक, उच्च शिक्षा, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद	
4. संदेश	क्षेत्रीय, उच्च शिक्षा अधिकारी, मेरठ	
5. शिक्षा के प्रति समर्पित विनम्र–सरल स्वभाव प्रेरणा स्त्रोत	प्राचार्या	
6. सम्पादकीय	सम्पादक	
हिन्दी अनुभाग		**13-33**
7. पत्रकारिता का स्वरुप	**कु. मोनिका**, एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष	14–16
8. वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता	**कु. नीता**, एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष	16–18
9. मेरे विचार	**बेबी शुक्ला**, एम.ए., (हिन्दी) प्रथम वर्ष	18
10. सफलता की ओर	**प्रियंका भाटी**, एम.ए. प्रथम वर्ष	18–19
11. मेरे अंश	**ममतेश चौधरी**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	19–20
12. क्षेत्रीय समाचार पत्र आम आदमी की आवश्यकता	**ममतेश चौधरी**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	20
13. संदेश पुराने साल का	**कु. प्रियंका कर्दम**, बी.एस.सी. प्रथम (गणित)	21–22
14. अंधविश्वास	**कु. प्रियंका कर्दम**, बी.एस.सी. प्रथम गणित	22–23
15. थोड़ा हंस ले	**कु. पूजा बैसोया**, बी.ए. प्रथम	23
16. दर्द भरी दास्तां से मंजिल की ओर	**कु. मीनाक्षी**, बी.ए. तृतीय वर्ष	24
17. परीक्षा	**कु. ललिता बैसोया**, बी.एस.सी. प्रथम (गणित)	24
18. नेता से साक्षात्कार	**कु. पूजा**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	25
19. प्रकृति (कविता)	**कु. शालिनी चतुर्वेदी**, बी.एस.सी प्रथम वर्ष	25
20. मेरी माँ	**रीतू नागर**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	26
21. दास्तान–ए–कॉलेज	**कु. पूजा**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	26
22. सत्यता	**कु. मनीषा चौहान** बी.एस.सी. प्रथम वर्ष	27
23. भारत देश	**काजल चौधरी**, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (गणित)	27
24. प्लास्टिक से मत करना प्यार	**नेहा नागर**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	28
25. एड्स को मिटाना है	**रीतू नागर**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	28
26. क्षणिकाएँ	**मीनाक्षी कसाना**, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष	29
27. जिन्दगी का किस्सा	**निशा सिंह टाईगर**, बी.कॉम द्वितीय वर्ष	29
28. कुछ कविताऐं	**पूजा बैसोया**, बी.ए. प्रथम वर्ष	30
29. तूफान में फंसी नन्हीं सी जान	**कु. अमृता**, एम.ए. (हिन्दी)	30
30. कैन्टीन	**निशा सिंह टाईगर**, बी.कॉम द्वितीय वर्ष	31
31. माँ–बाप, गुरु अपने	**कु. ज्योति**, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष	31
32. हिन्दी	**सोनिया**, एम.ए. (हिन्दी)	31
33. मंत्री जी का बर्थ–डे	**कु. ज्योति**, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष	31
34. कॉलेज का आखिरी दिन	**कु. शिल्पा**, एम.ए. (हिन्दी)	32
35. कर्म पन्थ	**ममतेरा चौधरी**, एम.ए. (हिन्दी)	32
36. जिन्दगी	**रूबी डाहालियाँ**, बी.ए.	33
37. 'विश्वास'	**रूबी डाहालियाँ**, बी.ए.	33
38. आज का आदमी	**कु. शिल्पा**, एम.ए. (हिन्दी)	33

संस्कृत अनुभाग

41. रामायणम्	**ज्योति**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	34-47
42. माघे सन्ति त्रयो गुणाः	**मनोज**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	35–36
43. उत्तमं हिं धनं विद्या	**साधना**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	36–37
44. परोपकारः	**गिन्नी रानी**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	37–38
45. अग्निपुराणे तपसो महत्वम्	**श्रीमती कनक लता यादव**, असिस्टेन्ट प्रो.	39–40
46. किं कर्तव्यम्	**गीता**, बी.ए. प्रथम वर्ष	41
47. प्रतीकेषु प्रयुक्तानि संस्कृतवाक्यानि	**चित्रा**, बी.ए. प्रथम वर्ष	41
48. प्रहेलिका	**संजू**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	42
49. न आवश्यकं किमपि	**मनोज**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	42
50. मित्रं लघु अपि वरम्	**रूबी**, बी.ए. प्रथम वर्ष	43
51. सुभाषचन्द्रः	**अन्नु**, एम.ए. प्रथम वर्ष	4
52. सदाचारः	**अंजू**, एम.ए. प्रथम वर्ष	4
53. भ्रष्टाचारः	**मोनिका रानी**, एम.ए. द्वितीय वर्ष	44–45
54. श्रीमद्भगवत्गीता के दार्शनिक संप्रत्यय	**डॉ. दीप्ति वाजपेयी**, विभागाध्यक्ष संस्कृत	4
English Section		46–47
55. Child Labour	**Meenu Rani**, M.A. IV	48-66
56. Why India poor and backward	**Meenakshi Kasana**, B.Com. II	4
57. Read My Dear Friends Read	**Shalu Singhal**, M.A. II	4
58. Faith	**Soni**, M.A. IV	5
59. My Mother	**Jyoti Sharma**, M.A, IV	5
60. Life's Truth	**Priya**, M.A. IV	5
61. Chemical analysis of back Benchers	**Mona Rani**, M.A. IV	5
62. Jokes	**Mansi Sharma**, M.A. IV	5
63. Things in Life Never to Forget	**Pooja Bhadana**, M.A. IV	5
64. Accounts of My Life	**Pooja Bhadana**, M.A. IV	5
65. Funny Definitions	**Sweta Dagar**, M.A. II	5
66. Riddles	**Sweta Dagar**, M.A. II	5
67. Funny Jokes	**Fozia**, M.A. IV	5
68. Know Our India	**Fozia**, M.A. IV	5
69. Life is a Challenge	**Bhavna Singh**, M.A. IV	5
70. Girl's Safety	**Asha Rani**, M.A. IV	5
71. Love and Time	**Shailendri**, M.A. II	5
72. Happiest Man	**Bhavana Singh**, M.A. IV	57-5
73. Murder of English	**Bhavana Singh**, M.A. IV	5
74. Balance is the Ultimate Key to a Healthy Life	**Pratibha**, M.A. Eng. IV Sem.	5
75. A Glass of Milk - Paid in full	**Resham Nagar**, M.A. IV	6
76. Aim of Education	**Meenakshi Kasana**, B.Com	6
77. Strange But True	**Sangeeta Sharma** M.A. II	6
78. Cry of an aborted female foetus	**Manisha Bhati**, M.A. IV	6
79. Time To Learn	**Mona Rani**, M.A. IV	6
80. Miss You Dad	**Nisha Singh Tiger**, M.A. IV	6
81. Bollywood Films in Student's Life	**Monika Yadav**, B.Com. II Year	6
82. Fun Facts	**Ritu Nagar**, B.Com. II Year	6
83. Jungle Truth	**Monika Yadav**, B.Com. II Year	6

84. Mathematics	**Monika Yadav,** B.A. II Year	64
85. The Best Things in Life	**Monika Yadav,** B.A. II Year	64
86. Rules	**Monika Yadav,** B.A. II Year	64
87. Story - The Real King	**Sakshi Adhana,** M.A. IV	65
88. Story - Unity is Strength	**Sakshi Adhana,** M.A. IV	65
89. Beti Bachao, Beti Padhao Yojana	**Asha Gautam,** M.A. IV English	66

समाचारिका **67-100**

90. वार्षिक आख्या–सत्र 2014–15	**श्रीमती रंजना जैन**, प्रभारी अंग्रेजी विभाग	68–69
91. राष्ट्रीय सेवा योजना	**डॉ० दीप्ति वाजपेयी**, कार्यक्रम अधिकारी	70–71
92. महिला सशक्तिकरण की ओर एक कदम महिला प्रकोष्ठ	**डॉ० दिव्या नाथ**, प्रभारी महिला प्रकोष्ठ	72–73
93. साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद्	**डॉ० अनिता रानी राठौर**, परिषद प्रभारी	74
94. बी०एड० सम्बद्धता	**डॉ० दिव्या नाथ**, प्रभारी / सलाहाकार	75
95. समान अवसर केन्द्र	**डॉ० अर्चना वर्मा**, प्रभारी	76
96. बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम	**डॉ० अर्चना वर्मा**, प्रभारी	77
97. ई०एस०पी०डी० क्लब	**श्रीमती रंजना जैन** (संयोजक) **श्रीमती दीक्षा** (सह–संयोजक) **श्री अरविन्द यादव** (सदस्य)	77
98. राष्ट्रीय सेमिनार	**डॉ० दीप्ति वाजपेयी**, संयोजक	78–79
99. सेमिनार आख्या	**डॉ० किशोर कुमार**, संयोजक राष्ट्रीय सेमिनार	80–82
100. डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र	**डॉ० ममता उपाध्याय**, एसो०प्रो० राजनीति विज्ञान	83–84
101. राष्ट्रीय कैडेट कोर	**नीलम शर्मा**, केयरटेकर एन.सी.सी	85
102. रेंजर्स	**डॉ० सुशीला**, प्रभारी	86–87
103. हिन्दी साहित्य परिषद्	**डॉ० अर्चना सिंह**, हिन्दी विभाग	87
104. संस्कृत परिषद्	**डॉ० दीप्ति वाजपेयी**, परिषद प्रभारी	88
105. अंग्रेजी परिषद्	**श्रीमती रंजना जैन**, परिषद् प्रभारी	88–89
106. इतिहास परिषद्	**डॉ० निधि रायजादा**, परिषद् प्रभारी	89–90
107. राजनीतिशास्त्र विभागीय परिषद्– 2014–15	**डॉ० दिव्या नाथ**, परिषद् प्रभारी	91
108. अर्थशास्त्र परिषद्	**श्रीमती भावना यादव**, परिषद् प्रभारी	92
109. समाजशास्त्र परिषद्	**डॉ० ने०पी० सिंह**, विभाग प्रभारी	92
110. गृह विज्ञान परिषद्	**डॉ० संगीता गुप्ता**, परिषद् प्रभारी	93
111. भौतिक विज्ञान परिषद्	**डॉ० ऋचा, परिषद्** प्रभारी	94
112. संगीत परिषद्	**डॉ० बबली अरुण**, परिषद प्रभारी	94
113. भूगोल परिषद्	**कनक कुमार**, परिषद् प्रभारी	95
116. वार्षिक क्रीड़ा समारोह	**डॉ० सत्यन्त कुमार**, परिषद् प्रभारी	96–97
117. जन्तु विज्ञान परिषद्	**डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा**, परिषद् प्रभारी	97
118. आख्या शिक्षाशास्त्र विभाग	**डॉ० सोनम शर्मा**, परिषद् प्रभारी	98
119. चित्रकला विभाग	**डॉ० सुनीता शर्मा**, परिषद् प्रभारी	98
120. महाविद्यालय परिवार		99–100

भले ही तुम्हारा सूर्य बादलों में ढ़क जाए,
आकाश उदास दिखायी दें,
फिर भी धैर्य धरो कुछ हे वीर हृदय,
तुम्हारी विजय अवश्यंभावी है।

शीत से पहले ही ग्रीष्म आ गया,
लहर का दबाव ही उसे उभारता है,
धूप छाँव का खेल चलने दो,
और अटल रहो वीर बनो।

जीवन में कर्तव्य कठोर है,
सुखों के पंख लग गए हैं,
मंजिल दूर, धुंधली सी झिलमिलाती है?
फिर भी अंधकार को चीरते हुए बढ़ जाओ,
अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ।

कोई कृति खो नहीं सकती और,
न कोई संघर्ष व्यर्थ जाएगा,
भले ही आशाएं क्षीण हो जाएं,
और शक्तियां जवाब दे दें।
हे वीरात्मन् तुम्हारे उत्तराधिकारी
अवश्य जनमेंगे
और कोई सत्कर्म निष्फल न होगा

यद्यपि भले और ज्ञानवान कम ही मिलेंगे,
किन्तु जीवन की बागड़ोर उन्हीं के हाथों में होगी
यह भीड़ सही बातें देर से समझती है
तो भी चिन्ता न करो, मार्ग प्रदर्शन करते जाओ।

तुम्हारा साथ वे देंगे, जो दूरदर्शी हैं
तुम्हारे साथ शक्तियों का स्वामी है।
आशीषों की वर्षा होगी तुम पर,
ओ महात्मन,
तुम्हारा सर्वमंगलम हो!

- स्वामी विवेकानन्द

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT

Office { 0121-2760554
0121-2760551
Fax { 0121-2762838
0121-2760577
Mobile 09412780999

पत्रांक : एस०वी०सी० / 19 / 5057
दिनांक 30.03.2015

श्री विक्रम चन्द्र गोयल
कुलपति
Vikram Chandra Goel
Vice-Chancellor

'संदेश'

जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानांजलि"** का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका ज्ञानोपयोगी एवं रोजगारोन्मुख उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु छात्राओं को प्रेरित करेगी। महाविद्यालय द्वारा छात्राओं को मानसिक एवं बौद्धिक रुप से सुदृढ़ बनाने हेतु किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन करने हेतु मेरी शुभकामनायें।

(विक्रम चन्द्र गोयल)
कुलपति

डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग
प्राचार्या,
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर–203207 (गौतमबुद्ध नगर)

उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
Directorate of Higher Education Education, U.P. Allahabad

0532 –2623874(का.)
0532–2423919(फैक्स)
0532–2256785(आ.)

डॉ० महेन्द्र राम
उच्च शिक्षा निदेशक,
उ०प्र० इलाहाबाद।

'संदेश'

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर की वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानांजलि"** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से छात्राओं में सृजन हेतु एक नवीन चेतना का भाव जागृत होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका महाविद्यालय की प्रगति, शैक्षिक वातावरण के साथ ही महाविद्यालय में होने वाली गतिविधियों का सही चित्रण प्रस्तुत करेंगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग
प्राचार्या,
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

भवदीय
29.03.2015
डॉ० महेन्द्र राम

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, मेरठ, उ.प्र.

दूरभाषः 0120 –2400444
9456676006
OFFICE,
Regional Higher Education Officer,
Meerut

पत्र संख्या 005 / दिनांक 13–04–2015

ीं. जे.एस. नेगी
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी,
मेरठ।

'संदेश'

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि **कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर** अपनी वार्षिक पत्रिका **''ज्ञानांजलि''** का अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि आपकी पत्रिका से महाविद्यालय के प्राध्यापकों, विचारकों और छात्राओं की ज्ञान–प्रतिभा की सार्थक अभिव्यक्ति होगी तथा इसे नया आयाम मिलेगा। **''ज्ञानांजलि''** के सफल प्रकाशन हेतु मैं प्राचार्या, प्राध्यापकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्राओं को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

(जे. एस. नेगी)

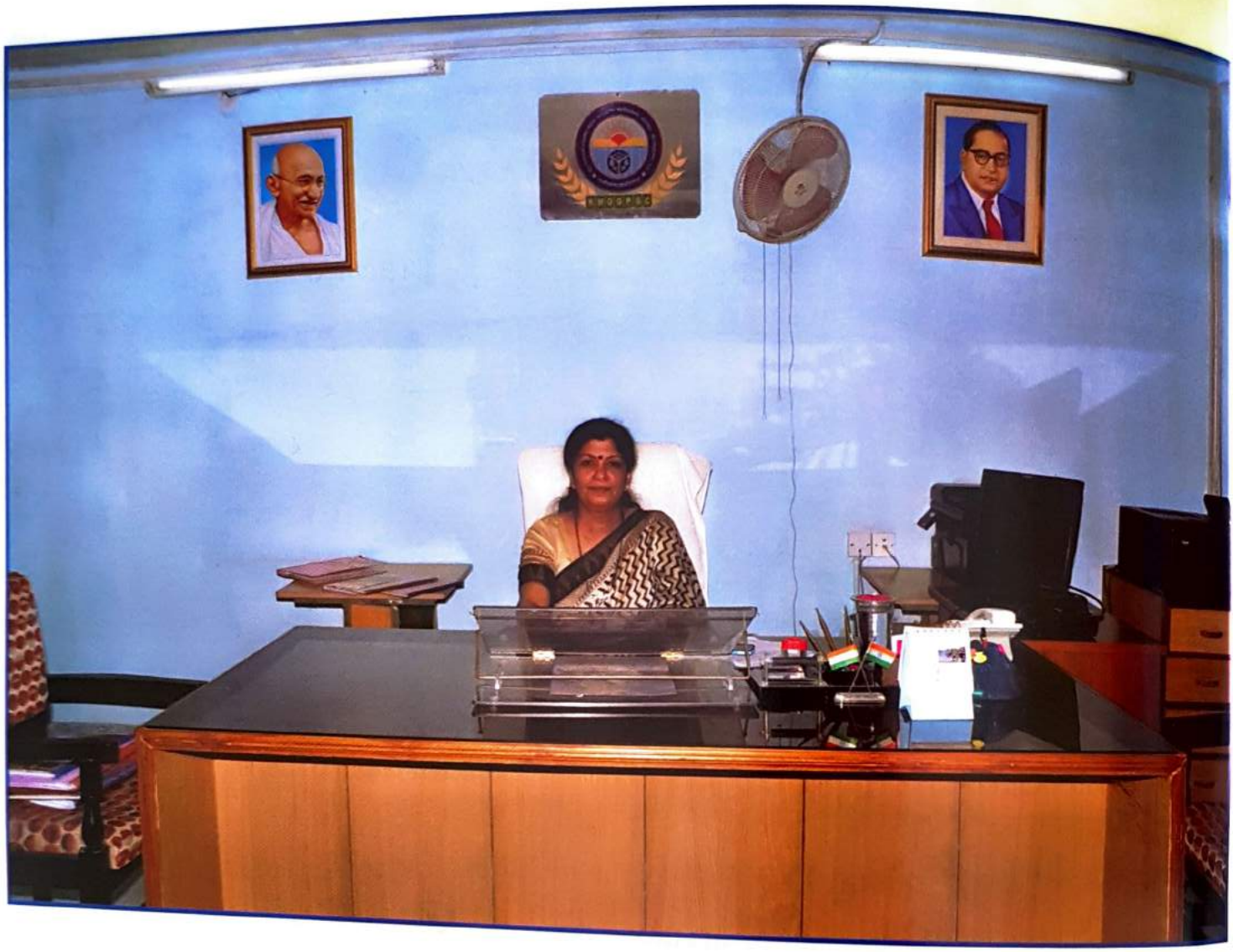

शिक्षा के प्रति समर्पित विनम्र - सरल स्वभाव प्रेरणा स्त्रोत

- डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग
प्राचार्या

'प्राचार्या की कलम से'

'असत्' से सत् की ओर, तमस् से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत्व की ओर अग्रसर करने वाली शिक्षा न केवल विद्यार्थियों में अन्तर्निहित मानवीय गुणों को प्रस्फुटित करती है वरन् उनके सर्वांगीर्ण विकास की सम्भावनाओं को बहुमुखी आयाम देती है।

शिक्षा द्वारा छात्र–छात्राओं के सर्वतोन्मुखी अभ्युदय के दृष्टिगत शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों के मानसिक संवेगों एवं क्षमताओं का इस प्रकार विकास करते हैं जिससे वह श्रेष्ठ मानव व कुशल नागरिक बनकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सके। इस हेतु महाविद्यालय बहुविध प्रयासों के माध्यम से राष्ट्र व समाज को सभ्य, सुसंस्कृत एवं ऊर्जावान युवा–शक्ति प्रदान करने के लिए कृत संकल्प है साथ ही नारी शक्ति संवर्धन में अपनी सजग भूमिका का निर्वाह करते हुए उनमें आत्मविश्वास व आत्मसम्मान के भावों का वर्धन करते हुए सामाजिक व्यवस्था में उनके योगदान को स्वीकृति दिलाने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है।

इस क्रम में महाविद्यालय की एक बड़ी उपलब्धि नवीन सत्र 2015–16 से बहुप्रतीक्षित बी.एड. पाठ्यक्रम का संचालन है। ग्रामीण अंचल की छात्राओं को उत्तम प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर व रोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में महाविद्यालय में बी०एड० कक्षाएँ प्रारम्भ होना मील का वह पत्थर है जो अवश्य ही छात्राओं की उड़ान को एक नवीन गति प्रदान करेगा।

महाविद्यालय पत्रिका ज्ञानांजलि नवपल्लवित प्रतिभाओं के हृदय में स्वतः सृजित सुकोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है जो प्रति सत्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास में अपना विशिष्ट योगदान प्रदान कर रही है।

मैं छात्राओं के सुदृढ़ एवं उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए ज्ञानांजलि के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ।

प्राचार्या

डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग

' सम्पादिका की कलम से '

कृति प्रतिदिन नवीन रुप में हमारे समक्ष उपस्थित होती है। संसार के चित्रपटल पर नवीन रंग, नवीन चित्र अंकित करती रहती है। सूर्य की किरणें जल थल पर अपना शीतोष्ण प्रभाव ही नहीं उत्पन्न करती अपितु विभिन्न पदार्थों को विभिन्न रंगों से प्रकाशित करती हैं। प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ अपने आस–पास अनेक चित्रों का सृजन करता रहता है। प्रकृति की इस लीला को देखकर चैतन्य मनुष्य का हृदय दोलित हो उठता है और उसी क्षण वह अपने हृदय पर पड़ने वाले इन प्रभावों को व्यक्त करने को उत्सुक हो उठता है। इन प्रभावों को व्यक्त करने के लिए उसके पास अनेक माध्यम और साधन हैं अभिव्यक्ति को इन्हीं माध्यमों को ही सृजन कहते हैं। सृजन का ही एक रुप साहित्य है जो कि मानव जीवन का मुखरित रुप है।

जब हमारे अन्तःकरण में आत्मा का प्रकाश हो हृदय में अनुभूति और भावनाओं का स्पन्दन हो तब मानव का यह अनुभव और अनुभूतियाँ पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से मानव विचार की अभिव्यक्ति का संवाहक बन जाती है। महाविद्यालय के नवपल्लवित प्रतिभाओं की कल्पनाशीलता, समापन, सहजता, संलिप्तता एवं मार्गिकता से ओत प्रोत रचनाएं छात्राओं की रचनात्मकता एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति को उजागर करते हैं।

विद्यालय में सत्र पर्यन्त संचालित होने वाली गतिविधियों के विवरण के साथ छात्राओं की बौद्धिक रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने वाले लेख कविताएं, कहानियों व अन्य रचनाओं को संजोए ज्ञानांजलि का यह अंक पाठकों एवं विद्वानों को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है।

यह शिक्षण संस्था निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित कर रही है। इसकी प्रगति एवं उपलब्धियों का सम्पूर्ण श्रेय महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग को जाता है जो महाविद्यालय के सतत विकास हेतु पूर्ण लगन, निष्ठा एवं उत्साह से प्रयासरत रहती हैं। हम शासन निदेशालय और विश्वविद्यालय के सहयोग के भी आभारी हैं।

ज्ञानांजलि के प्रस्तुत अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाओं के संदेशों द्वारा हमारा उत्साहवर्धन करने के लिए मैं श्री महेन्द्रराम, शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा उ०प्र०, श्री विक्रम चन्द गोयल कुलपति चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ एवं प्रो० जे.एस. नेगी, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी मेरठ के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। मैं महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनके पग पग पर स्नेहिल मार्गदर्शन व निर्देशन से पत्रिका का यह स्वरूप हमारे सामने है।

मैं समस्त संवर्गिय संपादक मण्डल एवं सहयोगी प्राध्यापक / प्राध्यापिकाओं एवं महाविद्यालय परिवार के प्रति आभारी हूँ जिन्होने महाविद्यालय पत्रिका का कलेवर सुसज्जित कर पत्रिका को उच्च स्तरीय स्वरुप प्रदान किया। मैं महाविद्यालय पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की कृतिकार छात्राओं को बधाई देती हूँ और कामना करती हूँ कि उनकी कृतियों की सुगन्ध दिगदिगन्त तक व्याप्त हो महाविद्यालय को गौरवान्वित करें।

डॉ० अर्चना सिंह

हिन्दी-अनुभाग

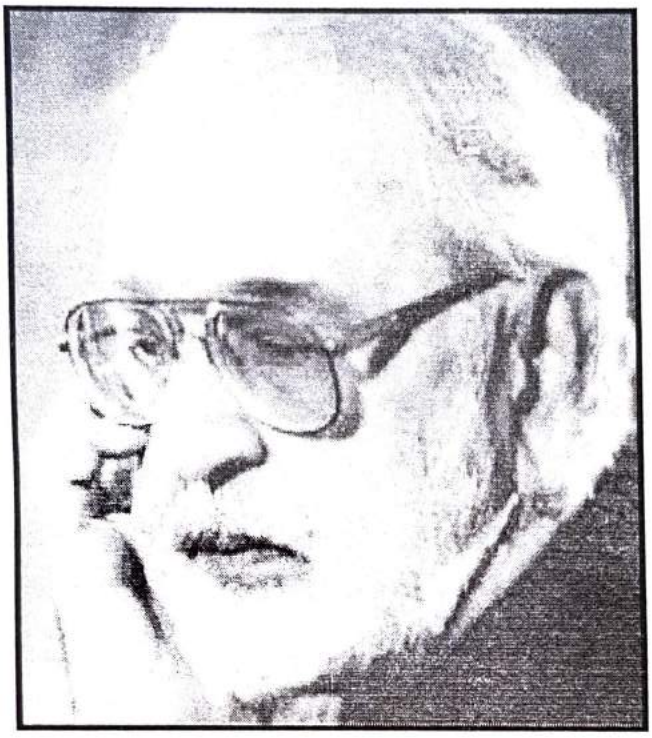

– सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

ओ मेरे पुण्य-प्रभव
मेरे आलोक स्नात, पद्म-पत्रस्थ जल बिन्दु
मेरी आँखो के तारे, ओ ध्रुव, ओ चंचल
ओ तपोजात
मेरे कोटि-कोटि लहरो से मँजे एकमात्र मोती
ओ विश्व प्रतिम
अब तू इस कृति सीप को अपने में समेट ले
यह परिदृश्य सोख ले।
स्वाति बूँद! चातक को आत्मलीन तू कर ले
ओ वरिष्ठ! ओ वर दे! वर ले!

सम्पादक मण्डल

डॉ० जीत सिंह
डॉ० मिन्तु

छात्र सम्पादिका

कु० अमृता
एम०ए० चतुर्थ सत्र

पत्रकारिता का स्वरुप

कु० मोनिका
एम० ए० (हिन्दी) द्वितीय वर्ष

श्री वेण्डेल फिलिप्स ने एकदम ठीक कहा है कि – "आज समाचार – पत्र (पत्रकारिता) एकबारगी जनवर्ग का माता पिता, स्कूल–कॉलेज, शिक्षक–थियेटर, आदर्श और उदाहरण परामर्शदाता और साथी हो गया है। इसी से वह एक ऐसी शक्ति बन चुका है जो एक ओर तो सत्ता पर अंकुश रखती है और दूसरी ओर जन–मानस की भावनाओं को व्यक्त करती है। वह एक ऐसा कर्म यंत्र है जो जगत भर के आँख–कान खोलता है, सबके लिए देखता सुनता है सब साथ और सबके पास रहता है और उसको न्यूज यानि नॉर्थ, ईस्ट, ईस्ट वैस्ट, साउथ के हाल चाल से परिचित करता हैं। वरन् व्यक्ति मन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने, उसको निरन्तर सक्रिय बनाये रखने, नवीनतम् जानकारियों से परिचित बनने और सब मिलाकर सजीव–सा बने रहने का दायित्व–बोध भी यह कराता है।

सामाजिक ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो कह सकते हैं कि पत्रकारिता मनुष्य की सामाजिक भावना और समाज को जानने समझने का ही एक परिणाम है।

सामाजिक बौद्धिक–वैज्ञानिक –साहित्यिक साधन है – पत्रकारिता जिसको, जिसको अंग्रेजी में जर्नलिज्म (Journalism) कहा जाता है व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'जर्नलिज्म' मूलतः फ्रेंच शब्द 'जर्नी से बना है, जिसका शब्दार्थ होता है प्रतिदिन का कार्य और उसका विवरण प्रस्तुत करना सत्रहवीं – अठारवीं शताब्दी में इसके लिए लैटिन शब्द 'डियूनल' का भी प्रयोग किया जाता है।

इसी तरह हिन्दी का पत्रकारिता शब्द 'पत्र' या पत्ता' से व्युत्पन्न है। प्राचीन काल में भारत में भोजपत्रों पर लिख अब जाता था फलतः लिखित सामग्री को भी 'पत्र' कहा गया, जो बाद में अर्थ संकोच से संदेश–समाचार आदि के अर्थ हेतु प्रयोग किय जाने लगा। 'पत्रकार' पत्र पर समाचारादि लिखने वाले को कहा जाता है। सारांश में कह सकते हैं कि 'पत्रकारिता' शब्द प्रायः तीन रुपों में प्रयुक्त होता है– पत्रकार वाला भाव या अवस्था, पत्रकार का कर्म तथा पत्रकार सम्बन्धी कार्य–कर्तव्य–उदेश्य आदि की सैद्धान्तिक जानकारी का विवेचन प्रस्तुत करने वाले काम के लिए प्रयुक्त किया जाता है। आज सामान्यतः पत्रकारिता (Journalism) शब्द में समाचार संप्रेषण से पत्रिकाओं का सम्पादन प्रकाशन तक एवं सम्बन्धी सिद्धान्त ज्ञान तक का अर्थ समाहित किया जाता है और निश्चयतः अब तो यह एक समय–समय पर विभिन्न विद्वानों ने 'पत्रकारिता' का आशय और स्वरुप स्पष्ट करने के लिए उसको अपने–अपने ढंग से परिभाषा बद्ध भी किया है। कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्नलिखित है ।

(1) समाज एवं समय के सन्दर्भ में सजग और सचेत या जागरुक रहकर नागरिकों में दायित्व–बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं ।"

– कमलापति त्रिपाठी

(2) ज्ञान और विचार, शब्दों एवं चित्तों के रुपों में दूसरे तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।"

– रामकृष्ण रघुनाथ खडिलकर

(3) "पत्रकारिता एक प्रकार से सूचना देने वाला मौसमी पक्षी होता है।"

– डॉ० सुशीला जोशी

उपर्युक्त परिभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में हम पाते हैं कि अधिकांश विद्वानों ने या तो पत्रकारिता को व्युत्पत्तिक आधार पर परिभाषित किया है। या फिर एक ही बात को शब्द बदल –बदल कर कहा है। निःसन्देह, कम से कम विषय की दृष्टि से, आज भी पत्रकारिता को पुनः परिभाषित किये जाने की जरुरत है इसका क्षेत्र और कार्य–कलाप जितना अधिक किया जा रहा है, उतना ही अधिक इसकी जरुरत बढ़ती जा रही है (सर्वज्ञात है कि साज–सज्जा तक ही सीमित नहीं रही है, वह तो दिन–प्रतिदिन वैविध्यमयी और विविधमयी और साहित्यिकता (भाव–शैली आदि) अधिक बढ़ती जा रही है। समग्रतः उसका शास्त्रीय तथा सैद्धान्तिक ढांचा भी फलता–फूलता जा रहा है। अब तो वह एक स्वतन्त्र विषय हैं और इसी अपने आप के स्वतन्त्र –गहन विवेचन की मांग करता है जो जो निःसन्देह यथा शीघ्र पूरी होनी चाहिए।

पत्रकारिता के प्रकार : जीवन की और नित्य जीवन साधन की अधिकता ने पत्रकारिता को बहुआयामी परिदृश्य प्रदान किया है। आज का पत्रकार किसी बंधे–बंधाये संकीर्ण दायरे में रहने के लिए विवश नहीं है अपितु वह अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुसार अपने लिए विशिष्ट क्षेत्रों में चयन करता है। पत्रकारिता के इसी बहुआयामी परिदृश्य के आधार पर पत्रकारिता के विभिन्न रुपों की संक्षेप में निम्न प्रकार प्रस्तुति कर सकते हैं –

1. अनुसंधात्मक, अन्वेषी अथवा खोजी पत्रकारिता :– पत्रकारिता जासूसी और वकालत का सशक्त साधन है। 'वांशिंगटन पोस्ट' के दो संवाददाता वर्नस्टाइन और वुडवर्थ ने अपनी प्रतिभा तथा तत्परता के बल पर गुप्तचर का युगान्तकारी कार्य किया, फलतः 'वाटरगेट कांड' से सत्ता परिवर्तन हुआ।

2. आर्थिक पत्रकारिता :– जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अर्थ से प्रभावित है। प्रत्येक व्यक्ति अर्थोपार्जन हेतु रात–दिन लगा रहता है। अर्थ सम्बन्धित क्रिया – कलापों को अभिव्यक्ति देने हेतु आर्थिक पत्रकारिता का विकास हुआ मुद्रा बाजार, पूंजी बाजार, वस्तु बाजार, पंचवर्षीय योजना, ग्रामोद्योग, बजट राष्ट्रीय आय के समाचार अब पाठकों को आर्थिक आकर्षक प्रतीत होते हैं।

3. ग्रामीण पत्रकारिता एवं कृषि पत्रकारिता :– प्रारम्भिक लोक–कलाओं, लोक संस्कृति के प्रचार–प्रसार, कुटीर उद्योगों के विकास हेतु प्रयासरत, हरित एवं श्वेत क्रांति द्वारा ग्रामीण विकास हेतु समर्पित पत्रकारिता को ग्रामीण पत्रकारिता कहना उपर्युक्त ही है कुछ व्यक्तियों ने इसे ही कृषि पत्रकारिता कहा है।

4. व्याख्यात्मक पत्रकारिता :– पहले व्याख्यात्मक पत्रकारिता का क्षेत्र बड़ा विचित्र था, लेकिन विज्ञान के वरदान स्वरुप अब समय बदल गया है। अब अनेक समाचार, एजेन्सियों कार्यरत् है जो पलक झपकते ही समाचार पहुँचाने का कार्य कर देती है।

5. विकास पत्रकारिता :– प्रारम्भ में पत्रकारिता का आशय लिया गया था कि इसका सम्बन्ध मात्र राजनीति से है। राजनीति के अतिरिक्त विभिन्न योजनाओं, विकास–कार्यक्रमों, तकनीकी अभिवृद्धि आदि से पत्रकारिता का कोई सम्बन्ध नहीं माना जाता था, किन्तु अब स्थिति यह नही हैं। अब तो पत्रकारिता सामाजिक, आर्थिक प्रविधिक एवं वैज्ञानिक विकास पर प्रभाव डालती है वही विकास पत्रकारिता के नाम से जानी जाती है। 'योजना' केन्द्रीय सरकार की ऐसी ही पत्रकारिता है।

6. खेल पत्रकारिता :– समाचार के साथ यदि उससे सम्बन्धित फोटो भी प्रकाशित होते हैं। खेलों के सम्बन्ध में समाज में जगरुकता, जिससे इसमे प्रबुद्ध वर्ग की जागृति हुई है। इस सम्बन्ध में 'खेल–खिलाडी, क्रिकेट सम्राट, स्पोर्टस वीकली, खेल युग आदि कई पत्रकारिता प्रकाशित होती हैं।

7. फोटो पत्रकारिता :– समाचार के साथ यदि उससे सम्बन्धित फोटो भी प्रकाशित हो तो समाचार मूल्य में वृद्धि होती है तथा इस ओर पाठक का ध्यान आकर्षित हो जाता है। फोटो पचकार समाचारों से सम्बन्धित चित्र लेते हैं ।

8. संदर्भ पत्रकारिता :– संदर्भ पत्रकारिता में कार्यरत व्यक्ति सम्पादकों, स्तम्भ लेखकों संवाददाताओं और प्रशासनिक अधिकारियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार संदर्भों की आपूर्ति द्वारा समर्थता प्रदान करता है यह पत्रकार पत्रकारिता और पुस्तकालय विज्ञान में प्रशिक्षित विश्व कोष होते हैं, जो सभी के सहायता पुरानी कतरनों लेखों, सन्दर्भ ग्रन्थों, फोटो की प्रस्तुति द्वारा करते हैं।

9. संसदीय पत्रकारिता :– संसद के दोनो सदनों, विधान सभाओं एवं परिषद की कार्यवाही आदि का सावधानीपूर्वक अवलोकन एवं प्रस्तुति इस पत्रकारिता के अन्तर्गत की जाती है। संसद की पत्रकार दीर्घ सुप्रतिष्ठित पत्रकार राष्ट्र की चौथी सत्ता के रुप जाना है। संसदीय कार्यवाही को पत्रों–पत्रिकाओं एवं रेडियो, टेलीविजन पर प्रस्तुत करना ही पत्रकारिता का लक्ष्य है।

10. फिल्म पत्रकारिता :– चित्रपट अथवा फिल्म पत्रकारिता का आज के समय में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक पत्र अथवा पत्रिका में इसका अलग कॉलम होता है। चित्रपट पत्रकारिता सामाजिक – सांस्कृतिक क्रान्ति लाने वाले एक सशक्त माध्यम है ।

11. वृतान्त पत्रकारिता :– विशिष्ट स्थान पर आयोजित मेला सामारोह, प्रतियोगिता आदि का 'आँखों देखा हाल' प्रस्तुतीकरण वृतान्त पत्रकारिता के अन्तर्गत आता है। इसके सजीव प्रसारण में लगे पत्रकारों में आवाज की गुणवत्ता, निष्पक्षता, भाषा पर अप्रतीम अधिकार, घटना–ज्ञान एवं उत्तरदायित्व बोध होता हैं।

12. रेडियो एवं टेलीविजन पत्रकारिता :– समाचार बुलेटिन समाचार दर्शन सामयिक समीक्षा, व्याख्यात्मक सामृगी ध्वनि सम्पादन, समाचार वाचन एवं विविध प्रकार की प्राविधिक जानकारी को रेडियो पत्रकारिता के अन्तर्गत किया जाता है। ध्वनि व चित्र के प्राविधिक ज्ञान, लेखन एवं वाचन की क्षमता तथा इलैक्ट्रॉनिक जानकारी द्वारा टेलीविजन पत्रकारिता में सफलता प्राप्त की जा सकती हैं।

पत्रकारिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालकों की कभी समाप्त न होने वाली जिज्ञासु प्रवृत्ति की शान्ति के लिये मनोरंजन से भरपूर पत्र–पत्रिकाएँ निकाली जा रही हैं। इन पत्र–पत्रिकाओं में पत्रकार बालकों की रुचियों के चयन रंगीन चित्रों के सम्पादन, चुटकले हास्य–व्यंग्य और कार्टून कामिक्स के द्वारा बाल पत्रों को अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आज पत्रकारिता का क्षेत्र उतना ही व्यापक एवं विस्तीर्ण हो चुका है जितना की स्वयं मानवीय जीवन । इसके लिए अब किसी संकीर्ण राजनीतिक समाचार के स्तम्भ से बंधा रहना नहीं पडता। अब प्रबुद्ध पत्रकार अपनी रुची एवं मानसिक आवश्यकता के अनुसार पत्रकारिता के बहुआयामी परिदृश्य से कोई भी क्षेत्र चयन कर उन्नति के शिखर पर अरोहण कर सकता है।

वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता

कु० नीता
एम०ए० द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

प्रस्तावना : कालक्रम से कबीर पन्द्रहवीं शती के कवि थे। यही उनका जीवन काल है और यही कृतित्व काल है। कबीर मात्र भक्तिकाल के सहज तथा जमीनी भक्त कवि ही नहीं थे वरन् एक बडे समाज सुधारक भी थे। कबीरदास ने जाति–पाति का विरोध कर एक समरस आडम्बरहीन सर्वतोभावेन सुखी और समुन्नत मानव समाज का आदर्श दिया। ऐसे पाखण्ड तथा आडम्बर हीन समाज की स्थापना पर जोर दिया जिसमें सर्वजन बिना आत्महीनता का शिकार हुए अपनी और सामाजिक उन्नति कर सकें। सामाजिक दृष्टि से कबीर–काव्य का वर्ण्य विस्तृत और व्यापक है।

जीवन परिस्थितियाँ : कबीर की जन्म तिथि विवादग्रस्त है। कारण है–तत्सम्बन्धी अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्यों की भिन्नता। 'गुरुयस्सादी जैदेव नाम' वाले अन्तः साक्ष्य के अनुसार कबीर जयदेव और नामदेव के पश्चात् उत्पन्न हुए । ये तो सिकन्दर लोदी सम्बन्धी बहिःसाक्ष्य इनको और भी बाद का बना देता है। इसी आधार पर इनका जन्म–वर्ष सम्वत् 1456 निश्चित करते हैं। डॉ० मुरारी लाल सुरस ने इन सबका खण्डन–मण्डन करके काशी को ही कवि का जन्म स्थान माना है। जैसा की अन्तःसाक्ष्यों और बहिःसाक्ष्यों से भी सत्य प्रतीत होता है कि हिन्दी के अधिकांश आलोचक भी जिसकी पुष्टि करते है। अतएव निर्भ्रान्त रुप से 'काशी' ही की कवि की जन्मस्थली है। जीवन के अन्तिम काल में वे मगहर में जा पहुँचे थे। प्रामणिकता की दृष्टि से इनकी मृत्यु संवत् 1575 ही सत्य प्रतीत होता है और यही अधिक मान्य–प्रचलित है।

काव्यधारा :– कबीर सन्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। यह सन्तकाव्य धारा के ज्ञानमार्गी शाखा के कवि हैं। उनका काव्य संतकाव्य की सभी विशिष्टताओं से युक्त होने के कारण संतकाव्य का अभिन्न अंग है। संतकाव्य की इस परम्परा में कबीर का स्थान एक पथ–प्रदर्शक का है। उन्होंने एक ओर एक सन्तकाव्य को प्रतिष्ठा दिलायी, तत्सम्बन्धी विशेषताओं से युक्त सबल काव्य–कृतित्व प्रदान किया और दूसरी और समकालीन और आगे के कवियों का पथ–प्रदर्शन भी किया। कबीर को सन्तकाव्य का प्रधान और प्रतिनिधि कवि सर्वथा न्यायोचित है।

कबीर : एक समाज सुधारक के रुप में :– कबीर का जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। यही उनका जीवनकाल है और यही कृतित्व–काल। इस समय भारत विशेषतः उत्तरी भारत में मुसलमान वर्ग आ चुका था वरन् जम भी चुका था। हिन्दु समाज में जाति, वर्ण, छुआछुत आदि नाना संकीर्णतायें व्याप्त थी। उच्च वर्ग निम्न वर्ग को सर्वथा उपेक्षित और हेय मानता था। इन सब कुरीतियों का विरोध कर उन्हें समाप्त कर दिया। कबीर एक अच्छे समाज सुधारक के रुप में विद्यमान है। उन्होंने सामाजिक विषमताओं का डटकर विरोध किया।

कबीर की सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकताः

कबीर ने सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण का वर्णन निम्न प्रकार किया है –

मूर्ति पूजा का खण्डन :– कबीर भक्तिकाल के प्रमुख कवि थे। सन्त कबीरदास ने मूर्तिपूजा का डटकर विरोध किया। भक्तिकाल के सभी प्रर्वतकों ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया। कबीर मूर्ति पूजा के धोर विरोधी थे। कबीरदास ने मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कहा–

पाहन पूँजू हरि मिले, तो मै पूजूँ पहार।
ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार।।

सामाजिक अन्याय का विरोध :– मध्यकाल के अधिकांश संत कवि समाज के निम्न वर्ग से सम्बन्धित थे। उन्होंने अपने जीवन में सामाजिक विषमता और तद्जनित अन्यायों को देखा–भोगा था। उनमें विरोध की भावना आवश्यक ही नहीं स्वाभाविक भी थी। महाराष्ट्र के संतों में विरोध का यह स्वर सरल–सहज था किन्तु कबीर में आकर तो यह आक्रोश और कटुतर बन गया। सच तो यह है कि इन व्यंगोक्तियों ने उनको सुधारक और युग नेता बना दिया। कबीर ने रुढ़िगत सामन्ती दुराचार और अन्यायी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध डटकर लड़ना सीखा और सिखाते हैं निम्न उदाहरण भी इस मत की पुष्टि करते हैं –

एक बूंद एक मल मूतर एक चाम एक गूदा।
एक जाति ते सब उपजा क्या बाभन क्या सूदा।।

साम्प्रदायिकता का विरोध :– संत काव्यधारा का समय भारतीय समाज में हिंदुओं व मुसलमानों के आरम्भिक सह–अस्तित्व का काल था। जिसमें दोनों सम्प्रदायों के आरम्भिक सह–अस्तित्व का काल था। जिसमें दोनों सम्प्रदायों के लोगो के मध्य अपरिचय अविश्वास व विरोध का माहौल हावी था अभी पारस्परिकता की भावना पैदा नहीं हो सकी थी। संत कवियों ने प्रगतिशीलता का परिचय देते हुए दोनों धर्मों की विदूषी मानसिकता से भरे लोगों को फटकारा है और सौहार्द की सीख दी है –

अरे इन दोउन राह न पाई।
हिदुंन की हिंदुआई देखी, तुरकन की तुरकाई।।

जाति–पाँति का विरोध :– कबीर ने अन्धविश्वासों, आडम्बरों एवं कुरीतियों का बोलबाला था। कबीर ने इन सबका विरोध करते हुए दिशा देने का पूर्ण प्रयास किया। उन्होंने जाँति पाँति के भेदभाव को दूर करते हुए शोषित जनों के उद्धार का प्रयत्न किया तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल दिया। उनका मत था –

जाति पाँति पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।

नारी विरोध :– कबीर मूलतः नारी के नहीं वरन उसके 'कामिनी' रुप के विरोधी थे। इनका सबसे बड़ा कारण तत्कालीन समय मे समाज में नारी के इसी भोग्य रुप की प्रधानता का होना है। माया को कामिनी रूप प्रदान कर कबीर भी, अन्य सन्तों की भाँति नारी को व्याज्य बताते हैं। उनके मतानुसार नारी नरक का द्वार, अवगुणों की जन्मदाता, मोहिनी ठगिनी, विषैली, भुंजगिनी न जाने क्या–क्या है। क्या–क्या है। कबीर का सही नारी विरोध मुखरित हुआ मिलता है –

'नारी की झांई परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति जो, नित नारी संग।।

लोककल्याण की भावना :– कबीर मात्र विरोधी नहीं है। उनके व्यंग्य विरोध का मूलोद्देश्य लोक–कल्याण करना है। सच्ची मानवता की प्रतिष्ठा करना है।

वर्तमान समय में देखा जाए तो उनकी यह मान्यता सही है। आज के समय में मानव अपने जीवन के प्रारम्भ से लेकर किसी न किसी क्रिया कलाप से जुडा रहता है। वह अपने सम्पूर्ण जीवन को अपनी मानवीय गुण उजागर नही होते तथा अपने जीवन के अन्त में वह यह न कर पाने का क्षोभ भी प्रकट नहीं कर पाता ।

वर्तमान समय में 'कबीर' की प्रासंगिकता :– कबीर ने एक समाज सुधारक के रूप में सामाजिक एवं धार्मिक दोनों ही प्रकार की मानयताओं का अंकन अपने काव्य में किया। उन्होंने निर्गुण ब्रह्म की उपासना, मूर्तिपूजा का खण्डन, सामाजिक अन्याय का विरोध, साम्प्रदायिकता का विरोध जाति पाँति का विरोध, नारी विरोध, लोक कल्याण की भावना, सभी विशेषताएँ अपने जीवन से ही ग्रहण की है।

वर्तमान समय मे देखा जाए तो कबीर की ये सभी मान्यताएँ आज भी दृष्टव्य है। आज के जनसमूहों में धार्मिक मान्यताएँ कुछ इस प्रकार है :–

1. भारतीय समाज में मनुष्य अलग–अलग देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना करता है– कोई कृष्ण, कोई राम, कोई अल्लाह, कोई ईशा की अराधना करता है। कबीर ने भी सगुण भगवानों के नामों को लेकर भगवान का गुणगान निराकार रुप में ही किया।
2. कबीर ने जिन बाह्य आड़म्बरों का खण्डन अपने काव्य में किया वह आज के वर्तमान समय में भी व्याप्त है – जैसे – मूर्ति पूजा, पूजा पाठ, मस्जिद–मन्दिर, आदि स्थानों को भी अधिक मान्यता दी है।
3. लोक कल्याण की भावना आज भी आधुनिक कवियों में देखने को मिलती है ये कवि अपने काव्य के विषय लोक कल्याण को ध्यान में रखकर ही करते है।
4. वर्तमान समय में भी नारी के प्रति पुरुष वर्ग का नजरिया आज भी यही देखने को मिलता है। वे नारी को गृहस्थ जीवन तथा घर से ही बाँधकर रखना चाहते हैं। आज की नारी पुरुषों से सभी क्षेत्रों में कन्धे से कन्धे मिलाकर चल रही है।

5. कबीर ने जाति पाँति के विरोध पर बल दिया लेकिन आज भी मनुष्य जाति में धर्म, वर्ग संघर्ष देखने को मिलता है। मनुष्य अपने धर्म को उच्च दूसरे धर्मों को तुच्छ नजरिये से तथा घृणा की दृष्टि से देखता है।

मेरे विचार

बेबी शुक्ला
एम०ए० प्रथम वर्ष (हिन्दी)

'दिल'

प्रत्येक जीवित प्राणी में दिल होता है, जैसे–हाथी, शेर, मेंढक आदि इसी तरह मनुष्य के पास भी दिल होता है मगर सबकी बनावट अलग–2 होती है। मनुष्य के शरीर में दिल का बड़ा महत्व है। दिल मनुष्य के शरीर का राजा है दिल शीशे से भी ज्यादा नाजुक होता है कि साँस लेने से भी टूट जाता है। दिल फूल की तरह कोमल है कि जरा सी हवा चलने से भी बिखर जाता है मगर कुछ दिल हीरे से भी ज्यादा सख्त होते है जैसे हलकू और चंगेज खाँ का दिल।

'दोस्ती'

दोस्ती हजारों प्रकार की होती है, जैसे औपचारिक दोस्ती, मतलबी दोस्ती, पत्र मित्रता, सच्ची आदि। दोस्ती नदी के पानी की तरह झिलमिल करता रिश्ता है तथा बारिश की नन्हीं बूँदों की भाँति नाजुक व कोमल है तथा चाँद की रोशनी की भाँति सुन्दर है।

'समय'

मनुष्य के जीवन में समय का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। समय गुजरने के बाद वापस नहीं आता। समय किसी का साथी नहीं है। समय का कोई भरोसा नहीं है । समय किसी के लिए न रुका और न रुकेगा। समय एक कीमती जवाहर की भाँति है इसलिए इसका पल पल पालन करना चाहिए। अन्यथा गया समय वापस नहीं आता और मनुष्य बाद में पछताता है। हमें चाहिए कि हम समय का सदुपयोग करें।

'ज्ञान'

ज्ञान एक ऐसा समन्दर है जिसका न कोई किनारा है न कोई गहराई ज्ञान रोशनी है और ज्ञान अन्धेरा। ज्ञान–अज्ञान को दूर करता है और मनुष्य को जीने का ढंग बताता है। ज्ञान जितना भी सीखो उतना ही कम है निश्चित रूप से ज्ञान से मनुष्य के जीवन में निखार आता है ज्ञान ऐसी दौलत है जिसे खर्च करने से वह घटता नहीं परन्तु बढ़ता ही जाता है।

'कदम'

कदम सदैव सोच समझकर उठाना चाहिए क्योंकि उठाए हुए कदम वापस नहीं लौटते और अपने पीछे निराशा छोड़ जाते हैं।

'कलम'

कलम सदैव सोच समझकर उठाना चाहिए क्योंकि इसकी धार तलवार से भी अधिक तेज और हानिकारक होती है।

सफलता की ओर

प्रियंका भाटी
एम०ए० प्रथम वर्ष

सफलता क्या है इसका कोई निश्चित मापदण्ड नहीं है। सफलता शब्द का अर्थ भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न–भिन्न होता है। सफलता के मापदण्ड का निर्धारण समय, परिस्थितियों व इच्छा शक्ति के आधार पर किया जाता है। जैसे एक विद्यार्थी के लिए सफलता का अर्थ परीक्षा में पास होना या फिर उच्च स्थान प्राप्त करना भी हो सकता है। एक व्यापारी की सफलता उसके व्यापार की प्रगति है। सफलता से अभिप्राय उन सपनों के, जो मानव में देखे जाते हैं, के साकार होने से है।

मेरे विचार में जब आप ऐसा महसूस करते हैं कि आपने इस कार्य को भली –भाँति कर लिया है जिसे आप करना चाहते थे, तो इसलिए आपने उस कार्य में सफलता प्राप्त कर ली है। स्वयं में संतुष्टता ही सफलता का प्रथम संकेत है।

सफलता की प्राप्ति कैसे ?

सफलता प्राप्ति का यह सूत्र हमेशा याद रखना चाहिए –

सफलता = प्रेरणा + परिश्रम + धीरज

यहाँ प्रेरणा से अभिप्राय मनुष्य के अन्दर की उस स्थिति से है जो उसे किसी कार्य विशेष को करने के लिए प्रेरित करती है। प्रेरणा की तीव्रता ही मनुष्य को परिश्रम करने के लिए बाध्य करती है। प्रेरणा की उत्पत्ति इच्छा शक्ति से होती है। मानव के अन्दर किसी विशेष कार्य को करने की इच्छा शक्ति जितनी अधिक होगी, मानव की प्रेरणा भी उतनी अधिक होगी। कार्य करने की इच्छा शक्ति ही मानव को उद्देश्य प्राप्ति करने हेतु श्रम करने को बाध्य करती है। सफलता प्राप्ति के मार्ग में परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। परिश्रम के बिना इस संसार में किसी भी वस्तु की प्राप्ति सम्भव नहीं है। परिश्रम ही वह तत्व है जो आपको सफलता दिलाने में सक्षम है। कहा भी गया है "परिश्रम ही वह कुँजी है जो भाग्य के ताले को खोल सकती है।

परिश्रम ही वह आधारभूत शिला है । जिस पर सफलता के भवन का निर्माण किया जा सकता है। विद्वानों ने परिश्रम को जीवन व ईश्वर की उपासना कहा है – **"Work is Worship"** परिश्रमी व्यक्ति ही सफलता के सोपानों पर चढ़ते चले जाते हैं। कहा भी गया है – **"God helps those who help themselves."** अर्थात् भगवान भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं जानते हैं। जो व्यक्ति परिश्रम करने से कतराते हैं। वे ही व्यक्ति भाग्यरुपी बैसाखी का सहारा लेकर चलते हैं। किसी विद्वान ने सत्य ही कहा है– "दैव दैव आलसी पुकारा" परिश्रम ही वह मन्त्र है, पारस है, मणि है जो आपके लिए सफलता के द्वार खोल देगा।

वेदों में कहा गया है कि उठो, जागो और तब तक चलते रहो जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो, जाए। इसी को ही हमें अपना आदर्श वाक्य बनाना चाहिए। सफलता प्राप्ति के मार्ग में धैर्य ही वह साथी है जो हमें प्रेरणा व शक्ति प्रदान करता है। जर्मनी में एक कहावत है – "धैर्य एक कड़वा पौधा है पर उस पर फल मीठे आते हैं।"

सफलता की राह में आने वाली मुश्किलों का हमें धैर्य के साथ समाना करना चाहिए। शेक्सपीयर ने कहा है – "चाहे धैर्य – थकी घोड़ी हो परन्तु चलेगी अवश्य।" इन्हीं तीनों उपस्करों प्रेरणा, परिश्रम व धैर्य के साथ हमें अपनी सफलता के मार्ग पर चलते जाना है।

मेरा अंश

ममतेश चौधरी
एम०ए० द्वितीय वर्ष

कभी कभी कुछ ऐसे लम्हें जिन्दगी में दाखिल हो जाते हैं, जिनके दाखिल होने से कुछ खट्टी–मीठी यादें जन्म ले लेती हैं। उन्ही भीनी–भीनी यादों के समंदर मे आज भी वो समय याद है जब एक माँ की छोटी सी नन्हीं सी बेटी श्रेयसी सोच रही थी "अरे मैं कब बड़ी हो जाऊँगी ?" श्रेयसी रोजाना माँ से कहती "आज मैं थोड़ी बड़ी लग रही हूँ ना" पर माँ श्रेयसी की बात सुनकर सिर्फ मुस्कुरा देती ।

कितने सुन्दर थे वो लम्हे सुहाने।
जहाँ लम्हें हमें मिलते हंसने के बहाने।।

फिर श्रेयसी धीरे–धीरे समय के साथ बड़ी होने लगी। मेधावी तो वह थी ही परन्तु उसकी जिज्ञासा के घोड़े हर समय दौड़ते रहते। हर समय उसके मन में कोई सवाल होता था। अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए। कुछ सवाल माँ से पूछती, कुछ अपनी दोस्ती से, और यदि कोई न सुनता तो अपने आप से बातें करती थी। हर सवाल का खुद ही जवाब देने की कोशिश करती।

उन ऊंचाइयों को पाने के लिए अभी उड़ाने तो बाकी हैं।
उन लहरों में चाहतों की कश्ती चलाना अभी बाकी है।

हर समय मानों उसकी आँखो में नया स्वप्न होता था। हर समय महाराणा के चेतक की तरह हवा से बाते किया करती थी, कभी यहां तो कभी वहाँ। वह वास्तविकता में रहते हुए भी मानों एक काल्पनिक शहर में रहती थी। उस शहर में सिर्फ उसके जान पहचान के लोग रहते थे, अनजान व्यक्तियों के लिए उसके शहर में मानो कोई जगह ही नही थी। ऐसा नही था कि वह अपने शहर में किसी को दाखिल नहीं करना चाहती थी, उसका शहर तो पुष्पक विमान के समान था जिसमें चाहे उतने लोग बिना किसी परेशानी के आ सकते थे। दाखिल होने के बाद किसी को कोई कभी महसूस न होती। ऐसा था श्रेयसी का यादों का शहर।

इन यादों की लहरों में करती हूँ आपका स्वागत
यदि डूब जाओ इन यादों की लहरों मे तो होगी वो इबादत

बात करने में वह थोड़ा संकोची थी, परन्तु जब वह बोलना शुरू करती थी तो मानों शब्दों की बाह उमड पड़ती थी। इस बात को रोकने का कार्य कोई न कर पाता, अर्थात् जब श्रेयसी एक बार बोलना शुरू करती तो फिर चुप होने का नाम ही नहीं लेती थी। थोड़ी चुलबुली थोड़ी नटखट मनमोहिनी परोपकारी और न जाने क्या–क्या गुण थे इस लड़की श्रेयसी में । बहुत ही अनोखी थी वो।

क्षेत्रीय समाचार पत्र आम आदमी की आवश्यकता

ममतेश चौ
एम०ए० द्वितीय

पत्रकारिता के बदलते आयामों के साथ–साथ समाचार पत्रों के स्वरूप भी बदला है। राष्ट्रीय स्तर के समाचार–पत्रों का वर्चस्व घटा है और क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने अपने क्षेत्रों में एक अलग विशिष्ट पहचान बनाई है। क्षेत्रीय समाचार पत्रों की महत्ता इस बात से भी आकी जा सकती है कि राष्ट्रीय समाचार पत्रों के साथ क्षेत्रीय समाचार–पत्र भी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता बन गये हैं। इन पत्रों में प्रकाशित समाचारों की विश्वसनीयता को भी नकारा नहीं जा सकता। कभी–कभी तो कोई महत्वपूर्ण समाचार राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में प्रकाशित होने से पूर्व क्षेत्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका होता है।

प्रत्येक व्यक्ति यह जानना चाहता है कि उसके आस–पास क्या घट रहा है। आर्थिक एवं राजनैतिक घटनाओं के अतिरिक्त सामाजिक घटनाओं से भी आज का नागरिक अवगत होना चाहता है और यह सच है कि उस समाज, जिसमें वह रह रहा है, का एक सीमित दायरा होता है उस समय के क्रिया कलापों का ज्ञान केवल क्षेत्रीय समाचार – पत्रों के द्वारा ही हो पाता है।

राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में राष्ट्र एवं विश्व के उन समाचारों को ही पढ़ पाते हैं। उन सामाजिक पत्रों के लिए एक छोटे शहर में हो रही सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ कोई महत्व नहीं रखती जब तक कोई घटना राष्ट्रव्यापी समाचार का स्वरूप न ले। परन्तु एक आम नागरिक का सर्वप्रथम अपने शहर से सरोकार होता है व अपने शहर में हो रही समस्त गतिविधियों के विषय में अधि से अधिक जानकारी रखना चाहता है अपने शहर के सुख दुख, अच्छाई–बुराई उन्नति अथवा अवनति के साथ व भावनात्मक स्वरूप से गहरे जुड़ा होता है। क्षेत्रीय समाच पत्रों ने आम नागरिक की दुखती रग को पकड़ा है। उस मनोभावों को समझा है। अब तो राज्य स्तर समाचार–पत्रों में भी विभिन्न शहरों से सम्बन्धित समाच के लिए अलग पेज प्रकाशित किये जाने लगे हैं और य कारण है कि इन समाचार पत्रों की माँग दिन–प्रतिदि बढ़ती जा रही है।

इसी प्रकार क्षेत्रीय भाषा के समाचार–पत्रों का विस्तार हुआ है इनकी माँग में वृद्धि हुई है। केवल अप भाषा का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति की दुविधा भी समाप्त गई है कि वह अपने आस–पास के समाचारों से किस प्रक अवगत हो।

अतः हमको यह बात माननी पड़ेगी कि क्षेत्रीय समाचार-प का आज हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। ह अपने समाज से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है औ क्षेत्रीय समाचार पत्रों से जुड़े पत्रकार बन्धु भी साधुवाद पात्र है जो अभावों से जूझते हुए भी अपने कार्य क्षेत्र में द योद्धा की भाँति डटे हुए विजय की ओर अग्रसर है। समा सदैव उनका ऋणि रहेगा।

लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो, हर क्षण उसी का चिन्तन करो। उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो।

-स्वामी विवेकानन्द

संदेश पुराने साल का

कु० प्रियंका कर्दम (मू० छात्रा)
बी०एस०सी० प्रथम (गणित)

31 दिसम्बर की रात को, जब सब ये थे सोच रहे।
कि क्या नया हम करें, जो नया साल मने।।
कैसे पुराने को करे विदा, और नये का स्वागत करें।
नये साल के स्वागत की, क्या–क्या तैयारियाँ करें।।
कौन क्या–क्या करेगा, और कौन क्या–क्या लायेगा।
कौन करेगा सफाई, और यहाँ सजायेगा।।
पुराना साल उन सब की बातें दूर खड़ा सुन रहा था।।
अपने सारे कपड़े और समान को पैक कर रहा था ।।
सोच रहा था एक दिन मेरी भी खुशियाँ बाँटी जा रही थी ।
मेरे स्वागत के लिए नयी–नयी, तैयारियाँ की जा रही थी ।
मुझे भी तो नया साल मुबारक, कहा जा रहा था।
मेरी खुशियां बाँटने के लिए कोई कहीं फोन, तो कोई जा रहा था।।
मैं भी पुराने को देखकर, बड़ा इतरा रहा था। उसकी मायूसी पर हँसकर, अपना रौब जमा रहा था।।
उस समय पूरे देश क्या, पूरी दुनिया में मेरा हंगामा था ।
मुझे मुबारक देने वालों में किसी की बुआ, तो किसी का मामा था।।
मेरा भी स्वागत फूलों की माला, बम–फुलझड़ियों से हुआ।
जहां भी गया लोग मुझे सलाम कर, देते मुझे दुआ।।
रंग था मेरा गोरा–गोरा काला कोट मैंने पहना था।
सारा सामान ले आया, क्योंकि यहीं पर मुझे रहना था।।
पर जैसे–जैसे समय बीता बुरा लेने लगा मेरा हाल था।
बीमार मैं रहने लगा और दर्द से बेहाल था।।
न तन पर अब कपड़ा रहा और न सर पर अब बाल था।
अब सोच रहा हूँ जे बीत गया वो कैसा अद्भुत काल था।।
जैसे–जैसे बूढ़ा हुआ लोगों को नहीं मेरी कद्र रही।
पहले की अच्छाई और बाद में बुराई पर बुराई सही।।
मेरा नाम लेने को भी मिला ढूंढे से कोई नहीं।
अब तो हो गया हूँ बूढ़ा और मुझमें सहने की शक्ति नहीं।।
प्रदूषित हुआ है, जल यहां का और प्रदूषण से हुआ मैं काला।
टलग–अलग है। लोग यहाँ और एकता को पापियों ने मार डाला।।
पास खड़ी मैं सुन रही थी उस पुराने साल की बातें।
और सोच रही थी आखिर क्यों है परेशान पुराना साल जाते–जाते।।
पास गया मैं उनके और कहा मैं हूँ प्रियंका कर्दम।
मुझे ही अपना दोस्त समझो, और मुझे ही समझो हमदम।।
क्या है तुम्हें परेशानी और क्या है तुम्हें गम।
जो भी मन में शंका या दुविधा है बता दो मुझे एकदम।।
तब बोले बाबा इस दुनिया को इसका महत्व बता दो।
इस जग में भाइयों का प्रेम और एकता वापस दिला दो।।
मैं बाहर गयी तो देखा बाबा का कहा सब कुछ सच था।
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई सबका अपना अलग दल था।
तब मैं उनके पास गयी और पुराने साल का हाल सुनाया।
कहा प्रदूषण क्यों फैला है यहां ये कैसा प्रदूषण काल बनाया।।
क्या इसे ही स्वागत कहते हैं। जो बम–फुलझड़ियों से जग है, सजाया।
मैने कहा धुआं फैलाकर क्या तुम नया साल मना रहे हो।
स्वागत कर रहे हो या दुनिया को जला रहे हो।।
अरे एकता भी न छोड़ी जो इस दुनिया से एक इंसान बनाया।
उनकी समझ में न आया तब मैंने उन्हें खुलकर समझाया,
कहा दुनिया बनाई देशों को बनाया, देशों में भी राज्यों को बनवाया।
राज्यों को भी एक न छोड़ा, उनमें भी गांव शहरों को बंटवाया।।
शहरों की तो बात ही छोड़ो किसने वहां जाना–जनवाया।
गांवो में भी एकता को न छोड़ा, उसके बीच भी सडकों को बनवाया।।
केवल एक ही परिवार बचा तो उसमें भी झगड़ों को फैलाया।
सोचा थोड़ा इसी में जी लें, तो प्रदूषण ने जीना दुश्वार बनाया।।
अब कहां वो आजाद, भगत सिंह जो आजादी के लिये लड़े थे।
कुछ मरे, कुछ तड़पे कुछ थे जिन्होंने दर्द सहे थे।।

खैर छोड़ो अब इन बातों को, केवल इतना अब तुम जान लो।
कुछ भी हो अब तो इस दुनियां में एकता लाने की ठान लो।
नया साल इंसानियत से मनाओ, कुछ तो तुम अब जान लो।
मत झगड़ो तुम एक दूसरे से ही बस इतनी बात मेरी मान लो।।

अब तो आजादी भी आ गयी देश में अब न दिन दुख के रहे।
अब उनकी समझ में आ गयी ये बात, और सभी ने मिलकर
शब्द कहे।।

" जब हिन्दू लाये दिया।
और मुस्लिम तेल भरें।।
सिख बनायें बाती।
और इसाई साथ जले।।
सही दशा में नया साल।
उसी दिन है मने ।।"

अन्धविश्वास

कु० प्रियंका कर्दम (भू० छा
बी०एस०सी० प्रथम (

एक बार की मैं बात बताऊं, बहुत ध्यान से तुम्हें समझाऊं।
सोकर उठी थी मैं एक बार दिन था शायद वो सोमवार।।
दातुन करके, पीकर चाय, पराठे के साथ लिया अचार। पूरा
पराठा खा भी नहीं पायी तभी मन में आया एक विचार।।
सोचा क्यों न मिसेज शर्मा से मिलकर, खेतों के लगाऊं एक
चक्कर थोड़ी दूर चली भी न थी कि रास्ते में पड़ा था एक
पत्थर ।।

सीधी चल रही थी और मन में थी मगन।।
कुछ सोच रही थी और देख रही थी गगन।।
पत्थर से टकरायी और जाकर गिरी मुंह के बल।
पैरो में लग गयी चोट लेकिन फिर भी गयी संभल।।
लंगड़ाते हुए थोड़ी दूर चली फिर बैठ गयी थककर।
सोचा पहले करुं आराम फिर फिर चलूंगी थोड़ा
डटकर।।

उठकर चली भी न थी कि सामने से सजी-धजी मिसेज
शर्मा आ रही थी।

चल रही थी जैसे कितनी थकी हो और चेहरे पर उदासी
छा रही थी। उठकर गई मैं उनके पास और पूछा
उदासी का कारण।

कहा सूरत तुम्हारी क्यों है रोनी और नया रुप क्यों किया है।
धारण।। बिना कुछ बोले, मुंह को खोले पहले थी वह बहुत
रोई। बोली आंखों में सपने संजोये कल रात थी मैं सोई
कहा बी.ए. का पेपर भी मैंने पास किया था।। सोचा था
एक दिन मैं भी मैडम बनूंगी। एक कंधे पर पर्स टांगकर
फैशन में चलूंगी।। मैंने पूछा पर हुआ है क्या यह तो
बताओ। रोना-धोना बन्द करो और सही-सही समझाओ
बोली सुबह उठी और नहाने गयी बात सुनो तुम कर्दम।
काम पूरा होने वाला था मेरा जिसके बारे में सोचती
हरदम। कि आज मेरा दिल्ली में बी.एड. का इन्टरव्यु
और आज सप्ताह के शुरु का दिन भी अच्छा था।। पहले
मैंने बालों को सुलझाया, फिर नया हेयर स्टाइल बनाया
पावर पक्का पाऊडर लगाया फिर चूड़ी-कंगनों का से
सजाया।। तैयार होकर शीशे के सामने अच्छी
देखी-भाली। काम न किया था एक भी मैंने क्योंकि हो जा
फिर मैं काली।। काली के नाम पर एक बहुत जरुरी
याद आयी थी। ड्रेसिंग टेबल में झुककर देखा तो
लवली क्रीम न पायी थी।। दौड़कर गई और क्रीम लायी
D.C. की दुकान से 1. उधार कर आयी थी पैसे क्योंकि
भी कुछ पैसे उधार थे।। आते -2 देर हुई रुक गयी थी
काम से। फिर लाकर खोली क्रीम और लगायी बड़े
।। क्रीम पाऊडर के होते हुये भी कुछ कमी लग रही थी।
ये क्या परफ्यूम की बोतल तो मेरे पर्स में ही थी।। परफ्यू

लगाकर घर से निकली सोचा बड़ा इम्प्रेशन जमाऊंगी। सोचा
उधर से मिठाई लाऊंगी क्योंकि नौकरी पक्की करके ही
आऊंगी। मैं जा रही थी तभी एक बिल्ली मेरा रास्ता काटकर
चली गयी। मेरे सारे सपने और अरमानों पर पानी फेंक कर
चली गयी। अब आधे रास्ते से ही तुम्हारे सामने आ रही हूँ।
अपने सारे सपनों को भूलाकर वापस घर जा रही हूँ। शायद
मेरे नसीब में नहीं था बनना टीचर। अब तो खराब ही हो गया
हो मेरा फ्यूचर। मैंने कहा जरा धीरे बोलो, हो ये बात बड़े राज
की। पता चले कि पड़ोसी सुन ले और ले आयें बिल्ली आज
ही। फिर जब भी तुम किसी अच्छे काम के लिए बाहर
जाओगी। तो वापस खुश नहीं बल्कि रोयामुंह ही वापस
लाओगी। क्योंकि वह बिल्लियों से तुम्हारा रास्ता कटवायेगा।
और कोई भी बिगड़ा काम बन नहीं पायेगा।। क्या आज भी
है। अंधविश्वास जब सोचने लगी प्रियंका । क्या आज भी
बहती है। इस देश में उल्टी गंगा।। फिर मैंने उन्हें। (मिसेज
शर्मा को) बड़े ही प्यार से समझाया । आज के युग का जो
पाठ था वो सारा पढ़ाया।।

मैंने कहा कि पढ़-लिख कर भी क्यों तुम्हारे मन में बैठा
है अन्धविश्वास।

21वीं सदी की होकर भी तुम 10 वीं सदी की लगाये
हुये हो आस।।

अगर बिल्लियों के रास्ता काटने से न तुम्हारा कोई काम
चले।
क्यों लोग गायें, भैंसों को राखे, सब बिल्लियां ही क्यों न
पाले। क्यों वैज्ञानिकों ने दिमाग लड़ाया, बन्दूक, बम, जहर
बनाने को। क्यों रिश्वत, चुगली, तलवारें बनी अपने रास्ते से
हटाने को। क्यों अमेरिका ने परमाणु बम छोड़ा, हिरोशिमा,
नागसाकी पर विस्फोट कराने को।
क्यों नहीं छोड़ी बिल्लियां घर-घर के रास्ते कटवाने को ।।
मैंने जो तुम्हें समझाया हो पहले उसे ध्यान से समझो, सुनो।
जैसे भी तुमको समझ में आये फिर उस पर तुम अमल करो
।।
इन्टरव्यु देने जाओ और नौकरी की आस करो ।
सलैक्ट जरुर होऊंगी प्रभु पर विश्वास करो।
अब भी समझ न आया हो तो घर जाकर तुम काम करो।
जीवन की इस मेहनत को घर में ही बर्बाद करो।।
आँख में आसूँ भरकर बोली सब समझ गई मैं एकदम।
खोल दी तुमने आँखे मेरी, दिया मुझे नया जीवन।।
हंसकर चली गयी वो क्योंकि जाग गया उसका विश्वास ।
एक संदेश उनके लिए जो अब भी हो अन्धविश्वास।।
कतर्व्य पर ध्यान दो और मेहनत पर लगाओ आस।
प्रभु पर करो विश्वास और त्याग दो ये अन्धविश्वास।।

थोड़ा हंस ले

कु० पूजा बैसोया
बी०ए० प्रथम

1. लड़कीः ट्रैन में एक लड़के से बोली, क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ ?
   लड़काः 'हाँ हाँ बिल्कुल अपनी ही सीट समझो।
   लड़कीः 'क्या मैं आपकी बोतल से थोड़ा पानी पी सकती हूँ।
   लड़काः 'हाँ हाँ जरुर।
   लड़कीः अगला स्टेशन कौन सा है भैया ?
   लड़काः 'मेरे दिमाग में कोई कैमरा लगा है। क्या ? जल्दी सीट खाली करो, मुझे नींद आ रही है।

2. डेंटिस्टः आपका दांत निकालना पड़ेगा।
   संताः कितने पैसे लगेंगे।
   डेंटिस्टः 200 रुपये।
   संताः 'यह लो पचास रुपये। थोड़ा सा ढीला कर दो निकाल मैं खुद लूँगा।

"दर्द भरी दास्तां से मंजिल की ओर"

कु० मीनाक्षी
बी०ए० तृतीय व

क्या सुनाऊँ इस जमाने को दर्द भरी दास्तां चुकानी पड़ती है
जहाँ बेटी होने की सजा,
क्यों होता है बेटी के साथ यह व्यवहार जिसे देख दहलती
नहीं किसी की आत्मा,
रोती है यह बेटी जब अपने ही मन मे तो घुट–घुटकर
चुकानी पड़ती है उसे जाँ,
होता है यह कैसा व्यवहार अपने ही घर में जहाँ माँ बाप ही
देते है बेटी को सजा,
जिस आंगन में पली–बड़ी थी यह बेटी उसी आँगन ने
छीननी चाही खुशियों की चाह,
समझा था जिसे बेटी ने दोस्त यहाँ पर उसी ने मिटा दी
जिन्दगी की राह,
खुशियों के पलों को समेटे हुए चली जाना है अब एक दि
बुलन्दियों की राह,
बस अब बहुत हो चुका जिन्दगी में दुख बहुत सहा हर ए
का जुल्म यहाँ, मैं हूँ क्या बेटी भी छू सकती है मंजिलों क
ऊँचाई जहाँ,
देश को भी होगा गर्व एक दिन बेटी पर यही है बेटियों क
सच्ची और नेक राह,
बस अब बहुत हो चुकी "दर्द भरी दास्तां क्योंकि अब बे
चुनने चली अपनी मंजिलों की राह !!

परीक्षा

कु० ललिता बैसो
बी०एस०सी० प्रथम (गणि

आ गई सिर पर परीक्षा
किन्तु घबराना नहीं
हो विषय कितने कठिन भी
अंक कम लाना नहीं
मन लगाकर खूब पढ़ना
खेल–खेल में रोना नहीं
और थक्कर नींद में
समय बहुमूल्य इसको व्यर्थ
में खोना नहीं और
असफल हो अकेले में रोना नहीं
ठान लो कुछ करके दिखाना है
घमंड पर करना नहीं
चूमकर नभ के शिखर भी
नम्रता खोना नहीं।

जीवन में भाग्यवादी मत बनिए। कर्म पर विश्वास रखें अर्थात् कर्म करते रहिए।

नेता से साक्षात्कार

कु० पूजा
एम०ए० प्रथम वर्ष (हिन्दी)

मैं हूँ पत्रकार
मेरा एक नेता से हुआ साक्षात्कार
मैंने पूछा–भारत की अर्थव्यवस्था इतनी धीमी गति से क्यों
क्या आपने कोई पुस्तक पढ़ी है
जिसमें राजनैतिक दांव पेचों को लगी झड़ी हैं ?
नेताजी थोड़े मुस्कराये अपनी प्रशंसा सुन फूलें न समाए
कहने लगे मेरे पाँच हैं पुत्र
जो है मेरी सफलता के सूत्र
पहला पुत्र है 'घोटाला' जिसके अन्तर्गत है काण्ड हवाला।
दूसरा बेटा है 'दलबदल' यह है सभी समस्याओं का हल।
तीसरा बेटा है 'भ्रष्टाचार' इससे है बेड़ा पार।
जिसने इसको फैलाया एक बार वह करता इसका उपयोग।
चौथा बेटा है 'शोषण' इसी से होता हमारा पोषण
इसके बिना न करता नेता कोई शासन
पाँचवा हमारा बेटा नहीं बेटी है नाम इसका है बेईमानी
ये है नेताओं का रोग खानदानी
इसी का है आज बोलबाला
ईमानदारी का तो मुँह है काला
फिर नेताओं ने चक्षद्वार खोले
और तेजी से बोले अब हम आज्ञा चाहते हैं
अभी हमको विरोधी पार्टी के दफ्तर जाना है
अपना दल बदल कर आना है।

प्रकृति (कविता)

कु० शालिनी चर्तुवेदी
बी०एस०सी० प्रथम वर्ष

हरियाली के कपड़े पहने,
फल फूलों के सुंदर गहनें
लगती बिल्कुल हरी पत्तियाँ
प्यारी–प्यारी हरी पत्तियाँ,
ऊपर छतरी सी छाई है,
थोड़ी नीचे भी आई हैं।
बिछी दरी सी हरी पत्तियाँ
प्यारी–प्यारी हरी पत्तियाँ
मन करता है, इन्हे उठा लें,
दाँतो से कुतरें या खा लें
मीठी–मीठी हरी पत्तियाँ
प्यारी–प्यारी हरी पत्तियाँ
चिड़ियाँ आती हैं सुस्ताने
दाना खाने प्यास बुझाने
पानी की अंजुरी पत्तियाँ
प्यारी–प्यारी हरी पत्तियाँ
हाथ हवा में हिला रही हैं
जाने किसको बुला रही हैं
फूलों की सहचरी पत्तियाँ
प्यारी–प्यारी हरी पत्तियाँ ।

मेरी माँ

रीतू नाग
एम०ए० प्रथम वर्ष (हि०)

मन्दिर से पावन, फूलों – सी कोमल
कोयल से भी मीठी बोली जिसकी
ममता की मूरत, मेरे जीने की जरुरत
हर बात निराली है उसकी

जन्म दिया, गोद में खिलाया, उंगली पकड़ चलना सिखाया
माँ सिवाय कौन है दूजा, बात करूँ मैं जिसकी
अपनी चिन्ता किये बिना हर काम वह मेरा करती
मृदुल मोहिनी सुन्दर छवि से, जीवन में प्राण भरती है।

जैसे गहरे कजरारे बादल सूखी धरती पर बरसे
वैसे ही उसके शीतल स्पर्श से, मेरा मन और तन हरसे।।
बिना उसके सब नीरस लगता, कुछ भी न मन को भाता
एक पल बिछुड़ना पड़े तो, मुझको उस दम रोना आता।।

एक पल बिछुड़ना पड़े तो, मुझको उस दम रोना आता।।

मुझको रोता देख लपक कर बाहों में भर लेती ऐसे
पंख फैलाकर चिड़िया अपने, बच्चों को ढक लेती जैसे।।
जीवन की दुर्गम राहों में, जब असफलताएँ आती हैं
हाथ थाम कर मेरा मुझको, जीवन का पाठ पढ़ाती है।।

स्वर्ग सी सुखद मेरे समस्त सुखों की आकर
धन्य हुआ है मेरा जीवन ऐसी प्यारी माँ को पाकर।।

दास्तान -ए-कॉलेज

कु० पूजा
एम०ए० प्रथम वर्ष (हिन्दी)

जिन्दगी को रंगीन बनाता है कॉलेज
सपने हसीन दिखाता है कॉलेज
रंग–ढंग दुनिया के सिखाता है कॉलेज,
मान–सम्मान बढ़ाता है कॉलेज।।

स्टूपिड को जैन्टल बनाता है कॉलेज,
स्टूडेन्ट से फैशन कराता है कॉलेज,
एक से एक मॉडल दिखाता है कॉलेज
सोए अरमान जगाता है कॉलेज,
पत्थर दिल को भी पिघलाता है कॉलेज

आँखों में बातें कराता है कॉलेज
आदमी को सभ्य बनाता है कॉलेज,

बोलने का लहजा सिखाता है कॉलेज,
मंच भय को भगाता है कॉलेज
सपनों में भी याद आता है कॉलेज,

सुबह–सुबह जल्दी उठाता है कॉलेज,
समोसे, चाय चाऊमीन खिलाता है कॉलेज
भरी जेबों को खाली कराता है कॉलेज
एक नई पहचान दिलाता है कॉलेज

भटके को रास्ता दिखाता है कॉलेज
मीठी सी यादें छोड़ जाता है कॉलेज,
जवानी को केवल चाहता है कॉलेज,
याद बस याद, आता है कॉलेज ।।

सत्यता

कु० मनीषा चौहान
बी०एस०सी० प्रथम वर्ष

पंचतत्व की बनी जो काया
माया को जिसने भरमाया
इन्द्रियों के रस हैं सब छूटे
रिश्ते–नाते केवल झूठे
आधि –व्याधि का शाश्वत घेरा
खेल लिया नाटक बहुतेरा
हुआ भंग ज्यों मोह तो साधो
क्यों अब रोक करें !
आ, अब लौट चलें!
कब का छूटा माँ का आँचल
बिखर गयी कब की वो बाखल
दादी की वो मधुर लोरियाँ
कन्हा संग खेली सभी छोरियाँ
स्वप्न सजी वो परी कथाएँ
गयी छूट, हैं शेष व्यथाएं
युग के घातक प्रहारों से
बचें किधर किस ओट चलें।
आ, अब लौट चलें!
रोते आये ये इस जग में
खाली हाथ पथिक हम मग में
मिली हमें सौगात सांस की
जलती भट्टी हाड़–मांस की

खत्म हुए सब कोयला–कंडी
जली सदा, अब होती ठंडी
तज अपना इहलोक यहीं पे,
चल परलोक चलें!
आ, अब लौट चलें!
काया अपनी साथ छोड़ती
सांसें जीवन आस छोड़ती
मधुमासों के थके हैं घोड़े
पतझड़ ने सब पत्ते तोड़े
'जीव अगर और शरीर फानी'
कहते सभी गुणी और ज्ञानी
बस दो बूंद गिरा पानी को
क्यों अब होंठ चलें!
आ, अब लौट चलें!
जीवन भर मेले ही मेले
किंतु है जाना सिर्फ अकेले
रहे साथ मंजिल–दर–मंजिल
गुम हैं अब वो, कहाँ हैं ओझल
चलने की अपनी बारी
सोती है ये दुनियाँ सारी
क्यों बे–बात जगायें जग को
चल अनटोक चलें!
आ, अब लौट चलें!

भारत देश

काजल चौधरी
बी०एस०सी० प्रथम वर्ष (गणित)

प्यारा भारत देश हमारा
जग भर में वह सबसे न्यारा।
यहाँ की धरती उगले सोना,
हमें नहीं पड़ता कुछ खोना।
सूरज सबसे पहले दमके
चंदा भी है रात में चमके।

कुछ–कुहक कर कोयल बोले
कानों में मिसरी सी घोले।
गाँवों की शोभा देख निराली,
है खेतों में छाई हरियाली।
ऐसा प्यारा देश हमारा,
हम सबको प्राणों से प्यारा

प्लास्टिक से मत करना प्यार

नेहा नागर
एम०ए० प्रथम वर्ष (हिन्दी)

प्लास्टिक से मत करना प्यार
यह धीरे–धीरे छिप–छिप कर करता है वार,
प्लास्टिक के लंच बॉक्स में खाने का
स्वाद हो जाता है बेकार
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

प्लास्टिक की पॉलीथिन का इस्तेमाल
पशुओं का बन रहा है काल
रंग–बिरंगे पेंसिल बॉक्स और कलर बॉक्स से
करने लगे हैं प्रकृति का साज श्रृंगार
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

नए स्टाइल के हैयर बैंड और बॉल पेन से
क्या जीत लोगे तुम संसार ?
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

प्लास्टिक शॉपिंग बैग ले विभिन्न दुकानों से
क्या कहलाओगे तुम नवाब ?
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

प्लास्टिक प्लेट, ग्लास, कटोरी से,
सीख रहे हो नए संस्कार
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

धीमा–धीमा जहर है प्लास्टिक,
हम खुद जा रहे हैं मौत के द्वार
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

क्या धरती माँ की रक्षा हेतु
उसका वजूद नहीं सकते नकार ।
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

अगर गौर से देखो समझो
तो प्लास्टिक को तोड़ हजार,
क्यों आधुनिक बनने की होड़ में समझे नहीं,
पनपते हरियाले जीवन का सार
कृपया प्लास्टिक से मत करना प्यार,
यह धीरे–धीरे छिप छिप करता है वार
प्लास्टिक से मत करना प्यार।

एड्स को मिटाना है !

रीतू नागर
एम०ए० प्रथम वर्ष (हिन्दी)

भयानकता का मुँह फैलाए
एड्स महामारी बनकर आयी
पश्चिम की ऐसी यह सौगात
फैल रही बिन देखे जात
निर्दयता की है यह जननी
जैसी करनी वैसी भरनी
शादी की लक्ष्मण रेखा मत लाँघो
मस्ती छोड़ो, सर पे कफन न बाँधो
श्रेष्ठ है एक से ही वफादारी
पहले समझो अपनी जिम्मेदारी
समाज से छुपकर किया गया काम
कर देगा तुम्हें बदनाम
यदि सावधानी नहीं अपनाओगे
एड्स के चक्रव्यूह में फँस जाओगे
एक दिन भेद खुल ही जायेगा
तन–मन–धन सब लुट जायेगा
शराब, गाँजा, भाँग, ड्रग्स न लेना
सुरक्षित उपाय, अपनाकर एड्स से बचना
यदि सन्तों जैसी रखी अपनी चादर बेदाग
एड्स क्या, सभी रोग जायेंगे भाग।।
खुद बचेंगे, औरों को बचायेंगे
इस धरती से एड्स को मिटायेंगे

क्षणिकाएँ

मीनाक्षी कसाना
बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

फूलों से बेहतर है वे कांटे सब
जो फना हो गए अपने चमन के लिए,
देवता से बेहतर है वे आदमी
जो मरते हैं अपने वतन के लिए
मेरी भी तमन्ना है कि मैं जिऊं
अपने वतन के लिए
मैं जिऊं या मरूँ बस
तिरंगा हो मेरे कफन के लिए।
बढ़–बढ़ कर चूमती रहें
खुशियां आपके कदम
भूले से भी न आएं
आप सबकी जिन्दगी में गम।
फूल ही फूल बिछे हों आपकी राहों में
आंसू भी कभी न आए आपकी निगाहों में
भविष्य में आपका हर पल ऐसे गुजरे
जैसे स्वर्ग आ गया हो आपकी बाहों में।
ए खुदा मेरे सभी दोस्तों
को जमाने भर की खुशी देना
अगर कोई गम आए तो
उसे मेरा पता देना।

जिन्दगी का किस्सा

निशा सिंह टाइगर
बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

कहते है अजीब सा रिश्ता है कोई ये जिन्दगी
आती–जाती सांसो का किस्सा है कोई
न जाने कब टूट जाये इसकी डोर
फोर भी चलती–ठहरती आँखो का बोझ है कोई
अंधकार से भरा हुआ है रास्ता इसका
फिर भी उस पर गिरती–संभलती मुसाफिर है कोई
उम्मीदों की रोशनी को बाहों में भरकर
आशा और निशा के बीच झूलती
कहानी का हिस्सा है कोई
कहते है बड़ी बेवफा है ये जिन्दगी
मरने और जीने के बारे में सोचती
हुई हकीकत है कोई
फिर भी मेरे दोस्तो बहुत प्यारी है जिन्दगी
सबको नहीं मिलती ऐसी बेजुबान हम राही है कोई।

प्राचीन धर्मों ने कहा 'वह नास्तिक है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता' या धर्म कहता है 'नास्तिक वह है जो स्वयं में विश्वास नहीं करता'

-स्वामी विवेकानन्द

कुछ कविताऐं

झूठ

चाहे सोने के फ्रेम में घड दो
आईना झूठ बोलता ही नहीं।
– स्व. कृष्ण 'नूर'

चटपटी शायरी

मेरे घर चोरी हुई मचा जोर का शोर
सबसे ज्यादा शोर खुद मचा रहे थे
चोर।

दोहा

पूजा बैसोया
बी. ए. प्रथम वर्ष

फफक –फफक गेहुँ कहें, सिसक –सिसक के धान
खेतों में फसलें नहीं उगने लगे मकान
रस ले, रंग ले, रुप लें, होते रहें निहाल, जैसे ही टूटे
पके, छोड़ चले फल डाल।

माँ - बाप

नींद अपनी भुला कर सुलाया हमको
आँसू अपने गिरा कर हँसाया हमको
कभी दर्द न देना उन आँसुओ को
खुदा ने माँ–बाप बनाया जिनको।

तूफान में फंसी नन्हीं सी जान

कु० अमृत
एम० ए० हिन्दी

साँसें चलती हैं, थमती हैं, बदलती हैं,
उसकी हर एक हलचल के बाद,
काश! कोई रुप हलचल को रोक दे।
हमारी इन थमती हुई साँसों को कोई टोक दे,
कह दे इस दरिया की लहरों से,
कि या तो छोड दे मेरी साँसों को
इन नर्म हवाओं के साथ या फिर
थाम दे इन्हें सदा के लिए

साँसों की चलती, थमती और बदलती इस स्थिति से
वो छूट जायेगा।
मरने या जीने के बाद, वो चैन से रह पायेगा।
इतनी–सी ख्वाहिश है इस नन्हीं जान की
रोक दे कोई दरिया में आते इस तूफान को
रुकते हुए तूफान को देखकर
साँसो की चलती, थमती, बदलती स्थिति भी रुक
जायेगी।
तभी इस नन्ही सी जान में जान आयेगी।

कैन्टीन

निशा सिंह टाइगर
बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

टिक्की, ब्रेड–पकौड़े और पैटीस,
की खुश्बू मुझे जब आती है।
कैसे करूँ दिल लगा कर पढ़ाई,
जीभ मेरी ललचाती है।
सर बोर्ड पर जब समझाते हैं,
ध्यान कैन्टीन पर चला जाता है।
अपनी गलतियों के कारण,
डाँट सुननी भी पड़ जाती है।
हाय! दोस्तों क्या बतलाऊँ,
यह कैन्टीन बहुत सताती है।
कैसे करूँ इस मन को काबू,
मेरी तो कक्षा भी वहीं आती है।

माँ - बाप, गुरु अपने

कु० ज्योति
बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

माँ – बाप बिना हर आशीष अधूरा।
गुरु बिन हर ज्ञान अधूरा।।
अपनों के बिना घर परिवार अधूरा।
जो माया पीछे भागे उसका जीवन ही अधूरा।।
अन्धे बनकर भटक रहे, जाने न सत्यार्थ को।
माया मोह में पागल हो गए, भूल गए माँ – बाप को।।
कोई बना कितना भी जग में, जाना न असली ज्ञानार्थ को।
शौहरत मोह में पागल हो गए, भूल गए गुरु ज्ञान को।।
आधुनिकता में इतना खोए, जाने न प्राचीनता के अर्थ को।
अपने तो अब बोझ बन गए, गैर पा रहे शान को।।
मूढ़ बने क्यों भटक रहे हो, पहचान लो सत्यार्थ को।
सुख–दुख तो जीवन की लीला, क्या दोष दे भगवान को।।

हिन्दी

सोनिया
एम०ए० हिन्दी

मेरे देश की शान है हिन्दी
मेरे मन का ज्ञान है हिन्दी
भारत की संस्कृति देखो
जैसे एक मशाल है हिन्दी
ना कोई भेद ना कोई जाति
बोली एक समान है हिन्दी
अपनों को अपनों से जोड़ती
ऐसी एक मिसाल है हिन्दी
भाषा में भाषा हिन्दी
सुर के संग में ताल है हिन्दी
गुरु वेद का ज्ञान है हिन्दी
मैंने तो यह माना है
जीवन का आधार है हिन्दी
मैडम जो हमें सुनाए
उनके गुणों का गान है हिन्दी

मंत्री जी का बर्थ-डे

कु० ज्योति
बी०कॉम०
द्वितीय वर्ष

मंत्री जी का बर्थ–डे आया
घोटालों का केक मंगाया
भृष्टाचार की छुरी लेकर
अपने जैसों को पार्टी में बुलाया
मंत्री जी का बर्थ–डे आया।
छुरी केक पर तब यों चलाई
गर्दन ज्यों हो किसी गरीब की भाई
गरीब भूख–भूख चिल्लाएँ
नेता केक खाकर मौज मनाएँ।
कब तक होगा भ्रष्टाचार?
जनता कब तक रहेगी लाचार?
कब तक यहाँ राज्य राम का
बेबस जनता कब सोएगी पाँव पसार?

कॉलेज का आखिरी दिन

कु० मि
एम० ए० (हि

डगर देखती थी इस दिन की कब से,
आगे के सपने सजा रखे थे न जाने कब से।

बड़े उतावले थे यहाँ से जाने को,
जिंदगी की अगली मंजिल पाने को ।।

पर न जाने क्यों ? दिल में आज कुछ और आता है,
समय रुक जाये यह भी चाहता है।

जिन बातों को लेकर रोते थे, आज उन पर हँसते है।
कहा करते थे ..... बड़ी मस्ती से तीन साल चले गये।

पर आज क्यों लगता है कि कुछ पीछे रह गये कैंटीन में मस्ती किस के साथ करुँगी।

वो हसीन पल अब मैं किस के साथ जीऊँगी।
वो दोस्त कहाँ से मिलेंगे जो हर पल लड़ें,
पर फिर भी तुम्हारे साथ हर मुश्किल में खड़े।

वो बेवजह की बातों पर रुठना मनाना,
वो घंटो फोन पर बातें बनाना, बसों के धक्के, वो रास
के किस्से।

"न जाने ये फिर कब होगा'
मेरी खुशी में, सच में खुश कौन होगा"
मेरे गम में मुझसे ज्यादा दुःखी कौन होगा'

कह दो दोस्तों ! ये दोबारा कब होगा .....
कह दो दोस्तों ! ये दोबारा कब होगा .....

कर्म पथ

ममतेश चौधर
एम० ए० (हिन्दी

जीवन तुम्हें मिला मानव का,
इसलिए तुम कर्म करो।
रहे ध्यान जिसमें हित हो,
ऐसा कार्य तुरंत करो।
फल देना है काम प्रभु का,
तुझे नेक बन चलना है।
आँधी आये या तूफाँ,
एक कदम न रुकना है।
पुरुष उद्यमी खुश रहते हैं।,
और आलसी रोते हैं।
करते हैं कुछ काम लोग,
कुछ नींद चैन की सोते हैं।

नहीं ज्ञान है जिन्हें कर्म का
अज्ञानी वो होते हैं सुख में सुखी
दुखी में दुख हो, मित्र हमारे होते है।
अपना और पराया क्या है ?
मिथ्या हैं सारे नाते
सुख दुख का क्रम तो चलता है।
जिसे भोगने हम आते।।
काम मिला है जो भी हमको,
करना है हँसते गाते।
सीखो और सिखाओ ऐसा
नाम रहे जाते–जाते।।

जिन्दगी

रुबी डाहालियाँ
बी० ए०

देखो तो ख्वाब है जिन्दगी,
पढ़ो तो किताब है जिन्दगी,
सुनो तो ज्ञान है जिन्दगी,
मिलो तो महान है जिन्दगी,
दुःखी हो तो वीरान है जिन्दगी,
खुशी हो तो आराम है जिन्दगी,
पहले माँ के हाथों में झूमती है जिन्दगी,
फिर निश्चल प्रेम के मामले में झूलती है जिन्दगी,
जब मौत का पैगाम आता है, सोती है जिन्दगी,
उसके पीछे रोती है कई जिन्दगी, और
प्यारा सा अरमान है जिन्दगी,
चंद दिनों की मेहमान है जिन्दगी,
हम कहते हैं ईश्वर का –
दिया वरदान है जिन्दगी।
वह स्पर्श ही क्या जिस स्पर्श
में अपनों का अरमान न हो,
वे वादे ही क्या जिन वादों को
निभाने का विश्वास न हो,
वे सुर ही क्या जिन्हें सुनकर
फिर सुनने की प्यास न हो,
वे कंठ ही क्या जिन कंठों में
'माँ सरस्वती का वास न हो
भगवान का दिया कभी अल्प नहीं होता,
जो बीच से टूट गया वो संकल्प नहीं होता
हार को लक्ष्य से दूर ही रखना क्योंकि
जीत का कोई विकल्प नहीं होता।

परिवार से बड़ा कोई धन नही
पिता से बड़ा कोई सलाहाकार नही,
माँ की छांव से बड़ी कोई दुनिया नही,
भाई से अच्छा कोई भागीदार नही
बहन से बड़ा कोई शुभ चिंतक नही इसलिए
'परिवार के बिना जीवन नहीं'

'विश्वास'

रुबी डाहालियाँ
बी० ए०

विश्वास एक छोटा–सा शब्द है
उसको पढ़ने में तो सेकेण्ड लगता है,
सोचो तो मिनट लगता है,
समझो तो दिन लगता है,
पर साबित करने में सारी जिन्दगी लग जाती है।

ये जरुरी नहीं है कि हर रोज मन्दिर ,
जाने से इंसान धार्मिक बन जायें
लेकिन कर्म ऐसे करने चाहिए कि
इंसान जहां भी जाये,
मन्दिर वहां बन जाये।

आज का आदमी

कु० शिल्पा
एम० ए० (हिन्दी)

आश्रय देने पर, सिर चढ़ जाता है।
उपदेश देने पर, मुड़कर बैठता है।
आदर करने पर, खुशामद करता है।
उपकार करने पर, अस्वीकार करता है।
विश्वास करने पर, हानि पहुँचाता है।

क्षमा करने पर, दुर्बल समझता है।
प्यार करने पर, आघात करता है।
सुख के समय, ईर्ष्या करता है।
रोते हुए पैदा होता है, शिकायतें करते हुए जीता है,
और निराश होकर मर जाता है, इसी को आदमी कहते हैं।

संस्कृत अनुभाग

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दकम्॥

सम्पादक मण्डल

डॉ० दीप्ति वाजपेयी
सुश्री नीलम शर्मा
श्री प्रमोद कुमार मिश्र

छात्रा सम्पादक

कु० पूजा शर्मा
एम०ए० चतुर्थ स

बी०एड० सम्बद्धता हेतु निरीक्षण मंडल

(सत्र - 2015-16 से महाविद्यालय में बी०एड० की कक्षाऐं संचालित)

उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा अनुदानित राष्ट्रीय सेमिनार - 14 फरवरी 2015

महिला सुरक्षा एवं सम्मान के संरक्षण में शिक्षा की भूमिका

माँ सरस्वती के सम्मुख द्वीप प्रज्ज्वलन कर सेमिनार का शुभारम्भ करते अतिथिगण एवं प्राचार्या महोदया

अध्यक्षीय उद्बोधन प्रदत्त करती हुई मुख्य अतिथि श्रीमती एनी रज़ा

समापन सत्र की विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुनीता गोदरा को पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत करती हुई डा० आशा रानी

परिचर्चा का आनन्द लेते हुए प्रतिभागी गण

स्मारिका के विमोचन का अविस्मरणीय पल

विशिष्ट अतिथि उम-ए-कुल-सुम अपने विचार व्यक्त करती हुई

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ० अश्वनी कुमार गोयल को स्मृति चिन्ह् भेंट करती हुई प्राचार्या महोदया।

मुख्य वक्ता प्रो० जे०के० पुण्डीर द्वारा उद्बोधन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र राष्ट्रीय सेमिनार - 19 मार्च 2015

''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की प्रासंगिकता''

माँ सरस्वती के सम्मुख द्वीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए मुख्य अतिथि महोदय

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अपना उद्बोधन देते हुए प्रो० संजीव कुमार शर्मा

मुख्य वक्ता प्रो० संजीव कुमार शर्मा अपना उद्बोधन देते हुए

संगोष्ठी में उपस्थित विद्वतजन परिचर्चा का आनन्द लेते हुए

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित महाविद्यालय के डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत संचालित विभिन्न गतिविधियाँ

अंतर्राष्ट्रीय दिवस - 13-2-15 "उमड़ते सौ करोड़" महिला हिंसा के खिलाफ NACDOR चेयरमैन अशोक भारती डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र की समन्वयक डॉ० सीमा देवी एवं सलाहकार समिति की सदस्या डॉ० ममता उपाध्याय व अध्ययन के पंजीकृत छात्राओं को सम्मानित करते हुए।

राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी की चर्चा-परिचर्चा में भाग लेते मंचासीन अतिथिगण

राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी दीप प्रज्वलन करते अतिथिगण एवं प्राचार्या - महाविद्यालय

अन्तर्राष्ट्रीय दिवस- 'उमड़ते सौ करोड़' मंचासीन अतिथिगण

अंतर्राष्ट्रीय दिवस - 13-2-15 "उमड़ते सौ करोड़" महिला हिंसा के खिलाफ महाविद्यालय के प्रांगण में उपस्थित प्राध्यापक गण एवं छात्रायें

डॉ० अम्बेडकर अध्ययन की समन्वयक- डॉ० सीमा देवी द्वारा युवांग ग्रुप को सम्मानित करते हुए

युवांग ग्रुप द्वारा 'महिला अहिंसा' पर नाट्य प्रस्तुति

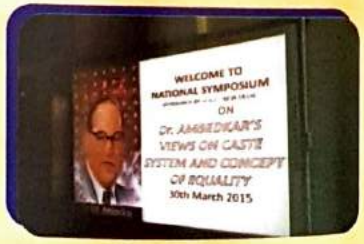

रामायणम्

ज्योति
बी. ए. द्वितीय वर्ष

महर्षिवाल्मीकिः संस्कृतस्यादिकविः तस्य रामायणं च आदिकाव्यमिति सर्वं विदितमेव। स तेषु विश्वकविषु अग्रणी, येषां वाणी देशविशेषस्य जीवानां मनोरंजनं न करोति, अपितु निखिलविश्वस्य जीवानां कल्याणं सम्पादयति। 'रामायणम्' भारतीयसाहित्यस्य प्रथममहाकाव्यमस्ति, तथा विश्वसाहित्यस्य प्राचीनतम महाकाव्यानामपेक्षा भाषाभाव–छन्द–रचनाविधान–रसव्यंजना प्रभृति–सर्वदृष्टिषु एका उत्कृष्टा कृतिरस्ति, नास्ति–अत्र सन्देहः।

सप्तसु काण्डेषु विभक्तोऽयं ग्रन्थः। तत्र बालकाण्डं अयोध्याकाण्डं, अरण्यकाण्डं, किष्किन्धाकाण्डं, सुन्दरकाण्डं, युद्धकाण्डं, उत्तरकाण्डं च सन्ति। एषु बालकाण्डे सप्तसप्तति तमाः सर्गाः, अयोध्याकाण्डे एकोनविंशाधिकशततमाः (119) सर्गाः, अरण्यकाण्डे पंचसप्ततितमाः (75) सर्गाः, किष्किन्धाकाण्डेसप्तषष्टितमाः (67) सर्गाः, सुन्दरकाण्डेअष्टषष्तिमाः (68) सर्गाः, युद्धकाण्डे अष्टविंशतिअधिक शततमाः (128) सर्गाः, उत्तरकाण्डे एकादशोत्तरशततमाः (111) सर्गाश्च सन्ति। एषु चतुर्विंशतिसहस्त्राणि श्लोकानि सन्ति।

भगवतो रामचन्द्रस्य जीवनवृत्तमाद्योपान्तं चित्रितम्। अत्र अयोध्यायां 'दशरथो' नाम राजा बभूव। कौसल्या, कैकयी, सुमित्रा, इति तिस्रो धर्मपत्न्य आसन्, तस्य। वशिष्ठस्य–अनुमत्या ऋष्यशृङ्गो नाम महर्षिः पुत्रकामेष्टिम् अनुष्ठितवान्। ततः कौशल्या श्रीरामं, कैकयी भरतम्, सुमित्रा लक्ष्मणशत्रुघ्नौ यमलौ च सुषुवे। तेषु रामलक्ष्मणौ विश्वामित्रो यज्ञरक्षायै स्वाश्रमं निनाय, तत्र स अस्त्रविद्यां चाध्यापयामास।

एकदा सीतास्वयंवरसमये महर्षिविश्वामित्रस्ताभ्यां सह मिथिलां जगाम। रामस्तत्र शैवं धनुर्विशेषुं गुरोरनुज्ञां प्राप्य लीलया नमयन् बभंज। तदा सीतां रामः, उर्मिलां लक्ष्मणः माण्डवीं भरतः तथा श्रुतकीर्तिं शत्रुघ्नः परिणयति स्म। राज्याभिषेकस्यावसरे दशरथस्य मनोरथः कैकेय्या विफलित आसीत्। चर्तुदशवर्षपर्यन्तं वनवृत्या रामेण वनं वर्तितव्यम्, एतादृशं वरं प्राप्य सीतया लक्ष्मणेन च सह रामः पितृवाक्यगौरवाद् वनं प्रविवेश। तत्र रामस्य राक्षसैः सह महद् युद्धम् जातम्। तेन खरदूषणादि–चतुर्दश–सहस्त्राणांरक्षसां रणे मारणं कृतम्, ततः सीताहरणं जातम्। अथ सुग्रीवं वानरपतिं तद्भ्रातुर्बालिनो वधाद् उपकृतं हनुमत्प्रभृतिभिर्वानर सैन्यैरूपं सलक्ष्मणो रामः सेतुमार्गेण लंकां जगाम्। शरणां गतं विभीषणं स्वपक्षे कृत्वा सपरिजनं रावणं दृष्टवा रामः सीता प्रत्यानिनाय, अयोध्यां प्रत्यावर्त्य च चिरं धर्मेण राज्य शशॉस। एतावता कथा–एव सारभूता।

न केवलमेतावत् सारमेव प्रतिपादितं वाल्मीकिना, अपितु भारतीयसंस्कृतेः यथार्थरूपं प्रतिबिंबितं तत्र। सिद्धरसप्रबन्धोऽयं ग्रन्थः उक्तमान्दवर्धनेन–

सन्ति सिद्धरसप्रख्या ये च रामायणादयः।
कथाश्रया न तैर्योज्या स्वेच्छा रसविरोधिनी।।

अस्य महाकाव्यस्य महती विशिष्टता–उदात्तता वर्तते। पात्राणां चरित्रचित्रणे, प्रसंगानां वर्णने, प्राकृतिकचित्रणे, सौन्दर्यस्य स्फूर्तौ च सर्वत्र उदात्तता स्वाभाविकरूपेण शोभते। सीतारामयोः पावनचरित्रमेव–अस्य काव्य–मन्दिरस्य पीठस्थली वर्तते शोभनगुणानां भव्यपुंजस्वरूपो रामोऽस्ति। रामशब्दस्य महिमा–एतादृशी वर्णने–

भर्जनं भवबीजानाम् अर्जनं सुख–सम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम्।।

रावणाय मारीचस्य–एष उपदेश आसीत्।

रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानामिव वासवः।।

कथंचिद् एकेन कृतेन–उपकारेण रामस्तुष्यति। आत्मवत्तया शतमपि–अपकारणां न स्मरति। तस्य–आल्हादिनी शक्ति–स्वरूपां जानकी आसीत्। भ्रातृस्नेहस्य पराकाष्टा समस्तकाव्ये मिलति। हृदयगतभावनानां कीदृशी अभिव्यक्तिरियम्–

देशे देशे कलत्राणि दैश देशे च बान्धवः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।।

करूणरसप्राधान्यमिदं महाकाव्यमिति तु विश्रुतमेव श्लोकत्वमागतां। भावपक्षेण सांक कला–पक्षस्य–अवहेलना नैव वर्तते। विविधालंकाराणां समायोजना नैसर्गिकी अस्ति। किं बहुना–पितृभक्तिः, पुत्रवात्सल्यं, भ्रातृस्नेहः, मित्रभावः, स्वामिभक्तिः, पातिव्रत्यम्, एकदारनियमः, जनरंजनम्, धर्मानुरोधप्रभृत्ति गुणानाम् उदाहरणे न कोऽपि ग्रन्थो जगति–ईदृशी वर्तते, नोपलभ्यते परवर्तिकवीनामुपजीव्यमिदं महाकाव्यम्। अत्र वाल्मीकिना स्वयमेवोक्तम्–

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायण–कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

माघे सन्ति त्रयो गुणाः

मनोज
एम. ए. द्वि

संस्कृतकाव्यमन्दाकिनी खलु माधुर्यमयी सौन्दर्यमयी विविधतामयी च सती सतत मोहयति मनीषिणां मानसानि तत्र क्वचित् कालिदासस्य अनुपमलावण्यसंवलिता उपमाश्चमत्कुर्वन्ति, कुत्रचित् भारवेरर्थगाम्भीर्यं गरिमा महिमानमातनोति, अन्यत्र दण्डिनः श्री हर्षस्य च पदलालित्य–लीला विलासमाकलयति, इतरत्र च माघे त्रयाणामप्येतेषां गुणानां संगमः संगमस्नानमिवानन्दयति स्वान्तं सहृदयानां अत एव सुष्ठुक्तं साहित्य समालोचकैः–

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
नैषधे पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

माघस्य प्रतिभाया इदं वैलक्षण्यं यत्तेन उपमार्थ–गौरवपदललित्यानां त्रयाणामपि प्रयोगे साफल्यं लब्धम्।

माघस्य उपमा– माघस्य उपमाः खलु हृदयहारिण्यः। तद्यथा शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे पीताम्बरः पूर्णेन्दुसुन्दरमुखश्च श्रीकृष्णः वाडवानलज्वालाभिर्व्याप्तः समुद्र इव चित्रितः कविना–

स तप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः
कठोरताराधिपलांछनच्छविः।
विविद्युते वाऽवजातवेदसः शिखाभि
राश्लिष्ट इवाम्भ सां निधिः।। (शिशुपालवधम् 1–20)

जीवने भाग्यपुरूषार्थयोः काव्ये च शब्दार्थयोः– संतुलनं उपमया इत्थं वर्णितं माघेन–

नालम्बते दैष्टिकतां न निषीदति पौरूषे।
शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते।।

एवमेव सेनाया विजयस्य फलभोक्ता साक्षिमात्रः कविना सांख्यशास्त्र प्रतिपादितः उदासीन पुरूष इव चित्रित।

इत्थं माघस्य उपमासु शास्त्रीयं पाण्डित्यमपि विद्योतितम्।

रैवतकपर्वतवर्णने माघेन पर्वतमुभयतः वर्तमानी सूर्याचन्द्रमसौ गजस्य उभयपार्श्वयोर्विलम्बमानेन घण्टाद्वयेन उपमितौ–

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जा
वहिमरूचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्

वहति गिरिरयंविलम्बिघण्टाद्वय–
परिवारितवारणेन्द्र लीलाम्।। शिशुपालवधम् 4–20।।

इयमुपमा संस्कृतकाव्यवाङ्मये बहुचर्चिता संजाता। उपमया माघः 'घण्टामाघः' इत्युपाधिना विभूषितः।।

माघस्य अर्थगौरवम्– माघेन स्वकाव्ये प्रयुक्त अर्थगौरव समुपन्यस्तम्। अर्थगौरव समन्वितासु प्रायशः शाश्वतसत्यानां तथ्यानां च समावेशो दर्शितः तत्र अर्थान्तरन्यासस्य छटा अपि सौन्दर्यं वर्धयति। मानवस्य स्वभावस्तथैव जन्मान्तरे तमनुगच्छति यथा साध्वी पतिव्रता स्त्री–

सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला–
पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।। शिशुपालवधम् 1–72

त्र विद्यते दर्शनशास्त्रप्रतिपादितस्य
नर्जन्मसिद्धान्तस्यापि सुरम्यः समावेशः। मानवस्य
वाभिमानमेव तस्य जीवनम्। यश्च अपमानेऽपि
न्तुष्टस्तस्मात्तु तद्रजः एव श्रेष्ठं यदाहतं सत् आहन्तुरेव
रः आक्रमति–

दाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः।। शिशुपालवधम् –2
46

घस्य इयं मान्यतां अस्ति यत् स्वाभिमानमेव जनस्य
स्तविकं धनम्–

दाभिमानैकधना हि मानिनः।। शिशुपालवधम् 1–67

ल्पैरेव शब्दैः गुढातिगूढभावनां विज्ञापनमर्थगौरवस्य
णभूतम् तच्च माघकाव्ये पदे–पदे अवलोकयते। माघस्य
र्थगौरवान्विताः काश्चन सूक्तायस्तु
हृदयसमाजेऽतिप्रसिद्धाः ताश्च समासतः प्रस्तूयन्ते–

क) गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो
भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।। शिशुपालवधम्
–14।।

ख) सर्वः स्वार्थ समीहते।। शिशुपालवधम् 2–65।।

ग) अनुहुं कुरूते धनध्वनि–
न हि गोमापुरूतानि केसरी।। शिशुपालवधम्
5–25।।

घ) हतविधिलसिताना– हा विचित्रो विपाकः।।
शिशुपालवधम्–64।।

ङ) समय एव करोति बलाबलम्।। **शिशुपालवधम्** 6–44।।

माघस्य पदलालित्यम्– पदविन्यासपटुता माघस्य विशेषता वरीवर्ति। अत एव माघकाव्ये पदे–पदे पदलालित्यमवलोक्यते। माघस्य संगीतमयी पदयोजना सततमाह्लादयति चित्तम्। तद्यथा–

मधुरा मधुबोधितमाधवी मधुसमृद्धिसमेधितमेघया।
मधुकराङ्गनया मुहुरून्मदध्वनिभृतानिभृताक्षरमुज्जगे।।
शिशुपालवधम् 6–20।।

अत्र वसन्तऋतौ मधुकराङ्गनायाः गुंजारव एव माधुर्यमयैः वर्णे–रूपवर्णितः। माघस्य पदलालित्यं प्रायशो यमकालारलङ्कृत विद्यते। अधोलिखितं पद्यमस्य प्रसिद्धमुदाहरणम्–

नवपलाशपलाशवनं पुरः
स्फुटपरागपरागतपंकजम्।
मुदुलतान्तलतान्तमलोकयत्
स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।। शिशुपालवधम् 6–2।।

एवमन्यापि सन्ति माघस्य पदलालित्यमयानि पद्यानि येषु पदानि नृत्यन्त इव विलोक्यन्ते।

इत्थं माघस्य पदलालित्यमपि सततं प्रशंसनीयम् डपर्युक्तविवेचनेनं स्वतः सिद्धमिदं यत्–माघ उपमार्थगौरवपदलालित्यानां त्रयाणामपि समन्वये प्रवीणतामवाप।।

उत्तमं हि धनं विद्या

साधना
एम. ए. द्वितीय वर्ष

वेद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
द्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः पशुः।।"

ुती खल्वियं विशिष्टता विद्याधनस्य यदिदं यथा–यथा यीक्रियते अन्येभ्यो दानेन तथा–तथा वर्धत एवान्यहं द्विगुणं गुणंचेति।

ाहुरभिज्ञाः–

"अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं सरस्वत्या विराजते।
व्ययतो वृद्धिमायति क्षयमायाति संचयात्।।"

द्यानामर्जने दुखमर्जितानां च रक्षणे, नाशे दुखम् यादि। अत्रेत्थं समुदियात् प्रश्नः– तर्हि कि कृता वा थ्वशिष्टता धनान्तरादिवद्याधनस्य तुल्यत्वे क्लेशानामिति।' इयमेव विशिष्टता यदव्ययीभाव इति। उक्तमेव किल प्राग भूयोभूयो दीयमानमपीदं विद्याधनम् उपचीयत एवेति। न जानीमो वयं पुनर्दुरपह्नवास्य नितरां सत्यसंवादिता महानपरोऽयं विशेषः। विद्याधनस्य यदिदं कल्पते महते आनन्दविशेषाय, बोधयति च मनुजान् कथं वात्मनः जन्मसहभूः पाशविकी प्रवृत्तिः प्रहातव्या कथं च वा दैवी शक्तिः सम्पादनीयेति। अपि च विभिन्नरूपा विद्या भिन्नानि चाभीष्टानि सम्पादयितुमीष्टे मनुजस्येति नूनं महानयं विशेषो विद्याधनस्य। अत एवाह कश्चित् पाश्चात्यपण्डितः का वा विद्यां कथं वोपकरोति मानवे तद्बुद्धो च गुणानाधातुमिति।

बेकनमहाशय उपदिशति–'चित्तस्य चांचल्यमपाकर्तुं गणितशास्त्रमभ्यसनीयम्। विवेकसम्पादनार्थं विद्वच्चरितं परिशीलनीयम्। ऊहापोहशक्त्यै प्राड्विवाक स्मृतिरनुशीलनया'' इति।

इदं पुनरत्रावधारणीयम्– द्वेऽपीमे परापरे विद्ये तदैव प्रयच्छतः फलमत्युत्तमं यदैते परस्परमुपकुरुत इति। विश्रुतमेव किलेदं श्रुतिषु यदपरैव विद्या श्रद्धानैरन्तर्यैणान्वास्यमाना परायै विद्यायै सम्पादयत्यर्हतां मनुजानाम्, ऋते तु केभ्यश्चिदङ्गुलीगणनीयेभ्य आजानुसिद्धेभ्य। अपरा अपि विद्या तदैव प्रभवति लोके क्षेमं सम्पादयितुं यदा साध्यात्मिकी परा विद्या अस्याः नियमनं कुर्वीत। अयं च विशेषः अधिगतायां यथार्थतः परायां विद्यायां सर्वथापि निवृत्तिः अपराया विद्यायाः। अपरा पुनः सर्वदापि पराया समुपस्कृतैव विन्दते योगक्षेमसाधनताम्। अन्यथा कीदृशं वा भवेत् फलमिति प्रत्यक्षत एव पश्यामोऽस्मिन्काले यत्र हि आध्यात्मिकतागन्धशून्या अधुनातनी विद्या कुक्षिंभरतैकपरायणाजनेयति नैकान्नुपशन् मन्ये परापरयोर्विद्ययोस्सादृश्येनेदृशी वर्णयितुं शक्या 'अवरा विद्या' इति, यथा हि नित्यप्रसृतया आचार्याः पाठकाश्च 'अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा' इति न्यायेन विशन्तो दृश्यन्ते अन्धतामिस्त्रम्। अतश्च सात्त्विकी एव विद्या आत्मनः न केवलमुत्तमधनताम्, उत्तमोत्तमधनतामपीष्टे सम्पादयितुम् तत् समर्थितं केनापि विचक्षणेन–

'विद्या लोचनमद्भुतं परपदं पश्यन्ति यद्वैभवात्।
विद्यैका तरणिर्दृढा भवमहाम्भोधि तितीर्षोः कृते।
''नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति विद्यासमं तपः।''

विनयस्तु स्वस्य परेषां च शान्तयुपलब्धेर्मूलम्। अनेन विहीनः पुरुषः सर्वदा सर्वत्र च परेषां विभूतिमसहमानः ईर्ष्याक्रोधद्रोहमोहासम्पनो न शक्नोत्यात्महितायाचरितुम् यावन्न पश्यत्यामानं परेषु परांश्चात्मनि तावदविनीतः सः पुरुषो मानाभिभूतः क्रोधग्नौ प्रदह्यत एव।

अपरस्तु–

'यावनात्मनि वेदात्मा तावानात्मा परात्मनि।'
'य एवं सततं वेद सोऽमृतत्वाय कल्पते।'

विद्या ददाति विनयमिति पूर्णतः सत्यं किन्तु प्रसंगेऽस्मिन् किंरूपा विद्येति विमर्शार्हः प्रश्न। नास्ति सर्वं विद्यानामयो यद्वयं विश्वविद्यालये शिक्षामहे। वास्तविकी विद्या सूक्तिर्या परिभाषिता–

विद्यया देवलोकः।
'सा विद्या या विमुक्तये'।
'विद्यया विन्दतेऽमृतम्।'
'विद्ययामृतमश्नुते।
अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।
'कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया तु प्रमुच्यते।'

विद्यासन्धिः।
'विद्ययां तपसा चिन्तया चोपलभ्यते ब्रह्म'
'अध्यात्मविद्या विद्यातः।

इयमेव हि सिरध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सिंहस्य सुप्तस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।। पचतंत्र

परोपकारः

गिन्नी रानी
एम. ए. द्वितीय वर्ष

''परोपकाराय सतां विभूतयः' शास्त्रेषु विश्रुतमेवेयं सूक्तिः। परेषाम् अन्येषां मानवानां पशुपक्षिकीटपतङ्ग आदिजीवजन्तूनां वा उपकारः परहितः परोपकार उच्यते। परहितभावनारामन्वितो मानवः स्वशरीरस्य लक्ष्यं परहितमेव स्वीकरोति यतः स विचारवान्, बुद्धिमान्, कर्त्तव्याकर्तव्यकर्मविवेचनसक्षमश्च। अन्यस्य जीवस्य विपत्तिकाले यदा सर्वे मानवाः तत्कष्टनिवारणार्थं चेष्टां कुर्वन्ति, स्वधनं, शरीरं, सर्वस्वमपि अर्पयन्ति, सदैव ते मानवतागुणसम्पन्न उच्यन्ते। स एव परोपकारशब्देन उच्यते। ईदृशानां मानवानां विषये सत्यमेवोक्तम्–

धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
तन्निमित्तो वरं त्यागो विनाशे नियते सति।।

भारतीयशास्त्रेषु परोपकारस्य महत्त्वं सर्वाधिकं वर्णितम्। अष्टादशपुराणेषु तु अस्यैव गरीयतमा चर्चा विद्यते–

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
परोपकारपुण्याय पापाय परपीडनम्।।

एषः परोपकारः परमो धर्मः। एष एव मार्गः सताम्। न केवलं सगुणेषु सत्त्वेषु अपितु निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु साध्वो दयां कुर्वन्ति। तेभ्यः स्वशरीरमपि– अर्पयन्ति महर्षिच्यवनस्य जीवनमपि– एतादशमासीत्। यो मत्स्यादिजलजन्तुभिः सह परोपकाराय जीवनार्पये उद्यतो बभूव। दधीचिः देवानां कार्यसाधनाय स्वकीयानि अस्थीनि परार्थभावनयैव ददौ। महाराजः शिविः स्वमासं कपोतरक्षणार्थं श्येनाय प्रादात्। बोधिसत्वेनापि विचारितम्, 'कदा नु स्वगात्ररपि परेषा हितं कुर्याम्' इति निश्चित्य देवतानामपि मनांसि विस्मायन् स्वां तुनुमुत्ससर्ज। अन्येऽपि कोटिशाः पुरुषाः परार्थे स्वप्राणान् तत्यजुः। स्वतन्त्रताप्राप्यर्थमसंख्याः नेतारः, युवकाः युवतयः, नराः, नार्यश्च स्वप्राणान् स्वतन्त्रताबलिवेदीम् अर्पयामासुः। एतत् सर्व परोपकारम् एव। तेषामत्र न कोऽपि स्वार्थः महात्मागाँधी– सुभाषचन्द्र बोस– सरदार वल्लभभाईपटेल– चन्द्रशेखर आजाद– भगतसिंहादयः महापुरुषाः एतादृशा आसन् ये परोपकारार्थमेव मृतवन्तः किंतु यशः कायेन जीवन्ति। उक्तं च– 'नर पतितकायोऽपि यशः कायेन जीवति।' स्वार्थस्य परिणामोऽसुखावहः। ये स्वार्थमेव स्वीकुर्वन्ति ते सदैव शङ्कायमानाः सन्त, दुख–भागिनः भवन्ति समाजेऽनादरं लभन्ते। सम्मानं नैवाप्नुभन्ति।

स्वोदरपूर्तिः स्वार्थपूर्तिर्वा मानवस्य परममुद्देश्यम् नैव कष्टसाध्यम्, यद् उक्तम्–

'काकोऽपि जीवति चिराय वलिंच भुङ्क्ते' इति स्वार्थपरायणा निन्दाभागिनो भवन्ति।

न केवलं मनुष्यः, अपितु प्रकृतिजन्यवृक्षादयोऽपि परोपकारार्थमेव प्रेरयन्ति चन्द्रसूर्यनक्षत्रादयः परोपकारार्थमेव तपन्ति ज्योत्सनांच वितरन्ति। तरवः फलानि ददति मानवेभ्य नद्यो वहन्ति। उक्तं च–

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोकारार्थमिदं शरीरम्।।

इदन्तु सत्यमेव। परोपकारिणाम् एषः स्वभाव एव। तस्य लोकाः समानताः, यः परोपकारभावनयैव जीवति। उक्तं च–

गवामर्थे ब्राहाणार्थ स्वाम्यर्थे स्त्रीकृतेऽथवा।
स्थानार्थे यस्त्यजेत्प्राणास्तस्य लोकाः सनातनाः।।

वस्तुतः प्रकृतिः परार्था एव। यतः नद्यः स्वयमेव अम्भः न पिबन्ति। मेघोऽपि स्वार्थपूर्त्यर्थं न वर्षति। एवमेद्य साधवः परदुखेन– अत्यन्त– दुःखिताः भवति। महाकवि 'माघोऽपि परहित–दृष्टया– एव त्यागे रतिं वहतिदुर्ललितं मनो मे' इत्येनमाह।

परहितसाधनतत्परसज्जनानां मनांसि निजदुःखेषु नैव द्रवन्ति, अपि तु अन्येषु जनेषु एव। करूणापरायणानां कायः परोपकारेण विभातीति तु निश्चितम्। परोपकारिणः समस्तं भूतलं कुटुम्बमिव मन्यन्ते। धनं शरीरं च परहिताय भवतः।

इयमेव– ईश्वरसृष्टिः। उक्तं च–

सूर्यश्चन्द्रो धनो वृक्षो नदी धेनुश्च संजतः।
एते परोपकाराय विधात्रैव विनिर्मिताः।।

सज्जनानां विभूतिः सर्वजनहिताय भवति। ते परहितायैव जीवन्ति उत्पद्यन्ते च। अत एव सम्युक्तम्–

पद्माकरो दिनकरं विकचं करोति।
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रजालम्।।

नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति।
सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगाः।।
सज्जनानामिह भूतले आगमनं परोपकारायैव भवति। नहि
सामान्य- जनानामिव तेषां जीवनस्य लक्ष्यं स्वार्थसाधनम्।
अद्यत्वे सर्वत्रैव स्वार्थान्धकारस्य साम्राज्यम्। सन्त एव
परोपकारप्रकाशेन तद् दूरीकृत्य संसारमानन्दयन्ति। यदि
सन्तः स्वजन्मना इमां पृथ्वीं न पावयेयुस्तदा इयं पृथ्वी
नरकतुल्या भवेत्।
दुर्लभाः खलु सन्तस्तेषां निकषोऽपि कठिनाः कवेर्भर्तृहरेः
शब्देषु-
मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।
येषां जन्म जगतः कल्याणकामनायैव भवति, जीवनं
परोपकारणाय कल्पते ते एव सज्जनाः भर्तृहरिः आह-
भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः,
नवाम्बुभिर्भूमिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एषैव परोपकारिणम्।।
कष्टसाध्यम्, यद् उक्तम्-
'काकोऽपि जीवति चिराय बलिंच भुङ्क्ते' इति
स्वार्थपरायणा निन्दाभागिनो भवन्ति।

न केवलं मनुष्यः, अपितु प्रकृतिजन्यवृक्षादयोऽपि
परोपकारार्थमेव प्रेरयन्ति चन्द्रसूर्यनक्षत्रादयः
परोपकारार्थमेव तपन्ति ज्योत्सनांच वितरन्ति। तरवः
फलानि ददति मानवेभ्य नद्यो वहन्ति। उक्तं च-
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोकारार्थमिदं शरीरम्।।
इदन्तु सत्यमेव। परोपकारिणम् एषः स्वभाव एव। तस्य
लोकाः समानताः, यः परोपकारभावनयैव जीवति। उक्तं
च-
भवामर्थे ब्राह्मणार्थ स्वाम्यर्थे स्त्रीकृतेऽथवा।
स्थानार्थे यस्त्यजेत्प्राणास्तस्य लोकाः सनातनाः।।
वस्तुतः प्रकृतिः परार्था एव। यतः नद्यः स्वयमेव अम्भ न
पिबन्ति। मेघोऽपि स्वार्थपूर्त्यर्थं न वर्षति। एवमेव साधव
परदुखेन- अत्यन्त- दुःखिताः भवति। महाकवि 'माघोऽपि
परहित-दृष्टया- एव त्यागे रतिं वहतिदुर्ललितं मनो मे
इत्येनमाह। परहितसाधनतत्परसज्जनानां मनांसि
निजदुःखेषु नैव द्रवन्ति, अपि तु अन्येषु जनेषु एव।
करुणापरायणानां कायः परोपकारेण विभातीति तु
निश्चितम्। परोपकारिणः समस्तं भूतलं कुटुम्बमिव
मन्यन्ते। धनं शरीरं च परहिताय भवतः।
इयमेव- ईश्वरसृष्टिः। उक्तं च-
सूर्यश्चन्द्रो धनो वृक्षो नदी धेनुश्च संजतः।
एते परोपकाराय विधात्रैव विनिर्मिताः।।
सज्जनानां विभूतिः सर्वजनहिताय भवति।
ते परहितायैव जीवन्ति उत्पद्यन्ते च।
अत एव सम्यगुक्तम्-
पद्माकरो दिनकरं विकचं करोति।
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रजालम्।।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति।
सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगाः।।
सज्जनानामिह भूतले आगमनं परोपकारायैव भवति। न
सामान्य- जनानामिव तेषां जीवनस्य लक्ष्यं स्वार्थसाधन
अद्यत्वे सर्वत्रैव स्वार्थान्धकारस्य साम्राज्यम्। सन्त
परोपकारप्रकाशेन तद् दूरीकृत्य संसारमानन्दयन्ति। य
सन्तः स्वजन्मना इमां पृथ्वीं न पावयेयुस्तदा इयं पृ
नरकतुल्या भवेत्।

अग्निपुराणे तपसो महत्त्वम्

श्रीमती कनक लता यादव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

कूजन्ति वृक्षेषु पिकाः कपोता, गच्छन्ति विप्राः प्रणमन्ति देवान्।
गायन्ति बाला मधुरं च गीतं, तद्वत् प्रफुल्लस्तपसा हि लोकः।।

नित्यं हि पुष्पाणि विकसन्ति कुंजे, मत्ताः प्रफुल्ला मनुजा भवन्ति।
न्तिस्तपोभिः सुखदो विशिष्टो, भान्तीह लोकेऽत्र मनोरमो हि।।

चन्द्रमा शोभते रात्रौ कृषिः श्रमेण सर्वदा।
सत्येन तु यथा वाणी, जीवनं तपसस्तथा।।

हिंसा लोकेन विद्विष्टा, हिंसा धर्मभयावहा।
तपसा प्राप्यते धर्मस्तपसैव तथा सुखम्।।

तपसा क्षीयते पापं तपसा प्राप्यते यशः।
आचारस्तपसा मूले पुराणेऽस्मिन् प्रकथ्यते।।

किं कर्तव्यम्

गीता
बी.ए. प्रथम वर्ष

किं कर्तव्यं छात्रजीवने विद्याध्ययनम्
किं कर्तव्यं मूर्खसंगे मौनसाधनम्
किं कर्तव्यं एकान्ते भगवद्भजनम्
किं कर्तव्यं प्रातःकाले व्यायामः
किं कर्तव्यं अध्यापकसमक्षम् अनुशासनसाधनम्
किं कर्तव्यं युवाकाले धनोपार्जनम्
किं कर्तव्यं ज्ञानीसंसर्गे ज्ञानोपार्जनम्
किं कर्तव्यं महापुरूषसंगे गुणोपार्जनम्
किं कर्तव्यं अहंकारीसमक्षम् विनम्रताप्रदर्शनम्
किं कर्तव्यं गुरूजनसमक्षम् अभिवादनम्

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विमुगुप्सते।। ईशावास्योपनिषद्

प्रतीकेषु प्रयुक्तानि संस्कृतवाक्यानि

सत्यमेव जयते – भारत सरकार
धर्मचक्रप्रवर्तनाय – लोकसभा
यतो धर्मस्ततो जयः – उच्चतम न्यायालय भारत
ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत – गुरुकुलकांगडी विश्वविद्यालय
बहुजन हिताय – ऑल इण्डिया रेडियो
सत्यं शिवं सुन्दरम् – दूरदर्शन
सेवा अस्माकं धर्मः – थलसेना (आर्मी)
नभः स्पृशं दीप्तम् – वायुसेना
श्नं नो वरूणः – जलसेना
हवयाभिर्भगः सवितुर्वरेण्यं – भारतीय विज्ञान राष्ट्रिय अकादमी
योगः कर्मसु कौशलम् – भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी

विद्ययाऽमृतमश्नुते – एन.सी.ई.आर.टी.
गुरूः गुरुत्तमो धामः – नेशनल कौन्सिल फॉर टीचर एजुकेशन
तत्त्वं पूषन्नपावृणु – केन्द्रीय विद्यालय संगठन
असतो मा सद्गमय – केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
निष्ठा धृतिः सत्यम् – दिल्ली विश्वविद्यालय
अहर्निशं सेवामहे – डाकतार विभाग
योगक्षेमं वहाम्यहम् – भारतीय जीवन बीमा निगम
श्रम एव जयते – श्रम मन्त्रालय
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् – आर्यसमाज
व्यम् रक्षामः – भारतीय तटरक्षक बल
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् – हिन्दी अकादमी दिल्ली
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् – अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

प्रहेलिका

1. अहं तव शरीरात् उत्पन्ना भवामि।
   अहं तव प्रतिकूलं चलामि।
   अन्धकारे मम नाशः भवति।
2. अहं सम्पूर्णे संसारे व्याप्तः अस्मि।
   अहं सर्वेभ्यः विश्रामं यच्छामि।
   परं यत्र सूर्यः भवति तत्र अहं न तिष्ठामि।
3. मया सज्जनानां स्वागतं भवति।
   मया वरस्य शोभा भवति।
4. अस्माकं वर्णः कृष्णः अस्ति जनानां शीर्षेषु वसामः
   वयं सर्वेषां जनाः कृतन्ति तथापि वयं पुनः तथैव भवामः।

(उत्तराणिः– छाया, निशा, पुष्पाणि, केशाः)

न आवश्यकं किमपि

मनोज
एम.ए. द्वितीय वर्ष

आसीत् कश्चनवणिक्। कदाचित् कश्चन ज्योतिषिकः तस्य गृहम् आगत्य तदीयां जन्मकुण्डलीं परिशील्य अवदत्–"भवतः जातके गुरूः उच्चस्थाने अस्ति। सः भवदीयं जीवनं सुखमयं भविष्यति सदापि। यदि भवान् प्रतिदिनं साधुसज्जनेभ्यः दीनदुःखिभ्यः च अन्नस्य वितरणं कुर्यात् तर्हि भवद्वंशीया पंचमी सन्ततिः अपि सुखेन जीवेत्" इति।

तदन्तरदिनात् सः वणिक् महता प्रमाणेन अन्नवितरणम् प्रारब्धवान्। तथापि तस्य मनसि चिन्ता– 'मम षष्ठपरम्परायां जातानां का अवस्था भवेत्?'

तस्य एतां चिन्तां दृष्ट्वा तदीयः आप्तसहायकः अवदत्–'भवत्समीपे या सम्पत्ति स्यात् सा पंचम परम्परीयाणाम् अपि सुखाय भवेत्। तदाभ्यन्तरे भवत्कुले समर्थः कोऽपि जन्म प्राप्नुयात्। तस्य कारणातः भवत्कुलीयाः अग्रे अपि सुखेन तिष्ठेयुः' इति। किन्तु एतस्मात् अपि वणिजः चिन्ता न अपगता।

कदाचित् अन्नवितरणं समये कश्चन निर्धनः तेन एव मार्गेण गच्छन् दृष्टः वणिजा। सः तं निर्धनम् आहूय अवदत्–"अन्नदानं प्रचलति। कृपया अन्नं नीयताम्" इति।

तदा सः निर्धनं अवदत्–"आर्य! मध्यह्नाय यावत् आवश्यकम् तावत् मया प्राप्तम् अस्ति। अतः इदानीं दानं स्वीकर्तुं न इच्छामि अहम्।
सायंकालस्य निमित्तं नीयताम्।"
"सायंकालनिमित्तम् अपि कुतश्चित् किमपि प्राप्तं स्यात्। गृहं गत्वा विचार्य प्रत्यागत्य तद्विषये वदिष्यामि" इति उक्त्वा गृहं गत्वा प्रत्यागत्य सः अवदत्–
"सायंकालनिमित्तं गृहे तन्दुलादिकम् अस्ति। अतः मह्यं किमपि न आवश्यकम्।" भवादृशः विरलः लोके। अतः सेवकद्वारा तण्डुलधान्यादिकं भवद्गृहं प्रति प्रेषयिष्यामि। कानिचन दिनानि निश्चिन्तता भवतु भवतः 'गृहे'– वणिक् अवदत्। दयाधन! अद्यतनस्य आहारस्य व्यवस्था भगवता कल्पिता अस्ति। श्वस्तनस्य अपि आहारस्य व्यवस्थां सः एव कल्पयिष्यति। अतः भवतः किमपि स्वीकर्तुं न इच्छामि अहम्। अधिकस्य परिग्रहः पापाय। अन्येभ्यः दरिद्रेभ्यः दीयताम् अन्नादिकम्" इति उक्त्वा सः निर्धनः ततः निर्गतः।
एषः श्वस्तनव्यवस्थाविषयम् अपि न चिन्तयति। अहं तु षष्ठपरम्परीयां विषये चिन्तयन् अस्मि। धिक् माम्। धिक् मम अज्ञानम्' इति स्वगतं वदन् सः वणिक् चिन्ताकरणं परित्यक्तवान्। तस्य मुखे शान्तिः स्थिरा जाता।

मित्रं लघु अपि वरम्

रूबी
बी.ए. प्रथम वर्ष

कं वनम् अस्ति। वने एकः सिंहः निवसति। सिंहः गुहायां शयनं करोति। एकदा एकः मूषकः गुहां प्रविशति। सः सिंहस्य शरीरे इतस्ततः धावति। सिंहः कुपितः भवति। सः मूषकं निगृह्णाति। तदा मूषकः भीतः भवति। मूषकः सिंहं प्रार्थयते– "भोः मृगराज! कृपया मां न खादतु। मम विमोचनं करोतु। अग्रे अहं भवतः साहायतां करिष्यामि" इति।

सिंह हसति वदति च– "लघुमूषकः मम सहायतां करिष्यति? पश्यामि। इदानीं भवतः विमोचनं करोमि" इति। सिंहः मूषकस्य विमोचनं करोति।
एकदा एकः व्याधः जालं प्रसारयति। सिंहः जाले पतति। तदा सः उच्चैः गर्जति। बहिः आगमनार्थं प्रयत्नं करोति। तस्य गर्जनं मूषकः शृणोति। सः सिंहस्य समीपम् आगच्छति। जालं दन्तैः कर्तयति सिंह बन्धमुक्तः भवति। "मित्रं लघु अपि वरम्"

सुभाषचन्द्रः

के
एम. ए. प्रथम

सप्तनवत्युत्तराष्टादशशततमेऽब्दे जनवरीमासस्य त्रयोविंशतितिथौ श्रीसुभाषः स्वजन्मना बङ्गभुवमलंचकार। अस्य पिता जानकीनाथवसुः राजकीय–प्राड्विवाकः आसीत्। सुभाषः बाल्यादेव बुद्धिमान्, धीरः, साहसी, प्रतिभासम्पन्नश्चासीत्। अयं कलिकातानगर्यां शिक्षां प्राप्य सम्मानितम् आई०ए०एस० परीक्षामुत्तीर्णमपि विदेशीयशासनस्य भृत्यत्वं न स्वीकृतवान्। आंगलशासनस्य भारते नाधिकारः ते विदेशीयाः कथमत्र शासनं कुर्वन्ति इति चिन्तापरोऽयं स्वप्रयत्नेन भारतवर्षस्य स्वतन्त्र्यार्थं बहून् भारतीयान् स्वपक्षे अकरोत्। एवं विधेभ्यः अस्योग्रविचारेभ्यः भीताः आङ्ग्लशासकाः इमं पुनः पुनः कारागारे अक्षिपन् वीरोऽयं स्वतंत्र्यार्थं स्वप्रयासं नात्यजत्। 'अहिंसामात्रेण स्वातंत्र्यप्राप्तेः प्रयासः कल्पनामात्रेव' इति निश्चित्य सः क्रान्तिपक्षमङ्गीकृतवान्। अस्योग्रक्रान्तेः भीताः आङ्ग्लशासकाः पुनरिमं कलिकातोनगर्यां कारागारे अक्षिपन्। कष्टकरमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा सुभाषानुरक्तानां भारतीयानां हृदयं व्यदीर्यत। एकदा रात्रौ निद्रावशीभूतेषु कारागारनिरीक्षकेषु वीरोऽयं सहसा समुत्थाय 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' इति नीतिमनुसरन् स्वेष्टसिद्धिं कामयमानः सिद्धिदात्रीं जगदम्बां संस्मृत्य कारागाराद्बहिर्गतः। मलयदेशे स्वसङ्घटनकौशलेन 'आजाद हिन्द फौज' इत्याख्यां सेना सङ्घटितवान्। अस्यास्मिन्संघटने हिन्दुयवनादिसर्वदासम्प्रदायावलम्बिनः राष्ट्रानुरागिणः वीरवराः सम्मिलिता आसन्। अस्य संघटनस्य अभिवादनपदम् 'जय हिन्द' इति उद्घोषश्च 'दिल्ली चलो' इत्यासीत्।

'दिल्लीं चलतः दिल्लीं नातिदूरे वर्तते' इत्येवैः सुभाषस्य प्रोत्साहनवचनैः सैनिकाः दिल्लीं प्रति प्रस्थिताः। एतदेव दुर्भाग्यवशात् जयपाणिदेशस्य पराजयात् सुभाषस्य सैनिकाः आङ्ग्लशासकैः बन्दीकृताः।

टस्य वीरवर्यस्य स्वातन्त्र्यप्राप्तेः कामना सप्तचत्वारिंशदुत्तर एकोनविंशतिशततमेऽब्दे अगस्तमासस्य पंचदशतिथौ पूर्णा जाता। अद्यास्माकं मध्येऽनुपस्थितोऽपि सुभाषः 'कीर्तिर्यस्य स जीवति' इत्युक्त्वा सदैवामरः इति सुनिश्चितम्।

सदाचारः

एम. ए प्रथम

सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः। ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव वदन्ति, सद् एव आचारन्ति च, ते एव सज्जनाः भवन्ति।

सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैवाचरणं सदाचारः भवति। सदाचारेणैव सज्जनाः स्वीकायानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टं व्यवहारं कुर्वन्ति। विनयः हि मनुष्याणां भूषणम्। विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति। विनयः सदाचारात् उद्भवति सदाचारात् न केवलं विनयः अपितु विविधाः अन्येऽपि सद्गुणाः विकसन्तिः यथा–धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः आत्मविश्वासः, निर्भीकता। अस्माकं भारतभूमेः, प्रतिष्ठा– जगति सदाचारादेव आसीत्। पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं भारतस्य सदाचार–परायणात् जनात् शिक्षेरन्।

भारतभूमिः अनेकेषां सदाचारिणां पुरूषाणां जननी। महापुरूषाणाम् आचारः अनुकरणीयः। सदाचारः नियमसंयमोः पालनम्। इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य तिष्ठति। इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति। किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति सदाचारेण निर्णयः शक्यते। एकेऽपि पुरूषा महान्तः अभवन् ते सर्वे सदाचरेणैव उन्नतिं गताः। यः जनः नियमेन जीवति, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च स निश्चितं अभ्युदयं गच्छति।

सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः–

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्धालुरनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।
आचारल्लभते ह्यायुराचारल्लभते श्रियम्।

आचारल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम्।।

अतएव सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः। महाभारते अपि सत्यम् एव उक्तम् यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, चरित्रं यदि नष्टं स्यात् तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्तः क्षीणो वृत्ततस्तु हतोहतः।।

भ्रष्टाचारः

मोनिका रानी
एम. ए. द्वितीय वर्ष

अविवेकिनः जनाः स्वजनान् एव पोषयन्ति। वस्तुतः ये जनाः आत्मानां कृते भव्याः प्रियाः च भवन्ति, तान् प्रति तु पक्षपातः संजायते एव। जनाः अस्य अभिप्रायः इमं ग्रहणन्ति यत् स्वजातीयानां पारिवारिकाणां वा पक्षे स्वीकृते एवोदयः भवति भ्रष्टाचारस्य। अतः अतिप्राचीनकालाद् एव समाजे भ्रष्टाचारः प्रचलितः आसीत्।

भ्रष्टाचारस्य प्रमुखं कारणं व्यक्तेः आचरणे संस्कृते नैतिकतायाश्च हासः अस्ति। नैतिकताचरणेन एव मनुष्येषु त्यागः, तपः, विनयः, सत्यं न्यायप्रियता एवम् अन्येऽपि मानवीयाः गुणा उत्पद्यन्ते। नैतिकतायाः ह्रासेन अद्यत्वे व्यक्तौ एतेषां गुणानाम् अभावः जायतेः, अतः सः भ्रष्टाचारस्यंपङ्के आकण्ठः निमग्नः। सः सर्वत्र निजलाभं पश्यति। प्रत्येकक्षेत्रे सः आत्मने समुन्नयावसरो वांछति। अनेन कारणेन व्यक्तेः समाजस्य च जीवनम् अस्त व्यस्तं कण्टकाकीर्णं च अभवत्। अतः भ्रष्टाचारात् समाजस्य मुक्तये नैतिकशिक्षा सर्वप्रमुखो उपायः अस्ति।

जनसंख्यायाः अनिरूद्धवृद्धिः अपि भ्रष्टाचारस्य मुख्यं कारणम् अस्ति। जनसंख्यायाः वृद्धेः कारणात् नगरेषु, ग्रामेषु, आपणेषु चिकित्सालयेषु, विद्यालयेषु, न्यायालयेषु किं बहुना, यत्र–तत्र–सर्वत्रापि जनानां महान्तः सम्मर्दाः दृश्यन्तेः। यात्रिणो यानेषु, छात्रा विद्यालयेषु रोगिणः चिकित्सालयेषु च स्थानं न लभन्ते। योग्याः प्रशिक्षिताः शिक्षिताः अपि युवानो जीविकामलभमाना द्वाराद् द्वारं भृशम् अटन्ति। 'एकं दाडिमं, शतं रोगिणम्।' एवं विधे व्यतिकरे सर्वत्रापि अहमहमिका–कारणात् न केवलम् अव्यवस्था, अपितु भ्रष्टाचारोऽपि अलर्कविषमिव प्रसरति। एवं जनसंख्यावृद्धेः कारणात् सर्वविधे विकासे सत्यपि राष्ट्रे जनजीवनं संघर्षमयं, जिजीविषाकुलम्, नैराश्यपीडितं मनः क्षोभकारं च जातम् मानवीयगुणानां हासः भवति। अतएव व्यक्तिः जनसंख्यानियन्त्रेण विना भ्रष्टाचारस्य निवारणम् असम्भवम् अस्ति।

म्हार्घीशिक्षा अपि भ्रष्टाचारवृद्धेः एकं कारणम् अस्ति। यः युवाः शिक्षायाम् अनेकलक्षरूप्यकाणि व्ययं कृत्वा कर्मक्षेत्रे अवतरति, सः तानि लक्ष्यरूप्यकाणि प्राप्त्यर्थं प्रयतते। अतः सः उचितमनुचितं विस्मृत्य भ्रष्टाचारं करोति।

अस्माकं देशस्य बहुसंख्यकजनाः स्वाधिकारम् प्रति अनभिज्ञाः सन्ति, यस्य लाभम् अधिकाराणाम् अभिज्ञाः जनाः उत्थाप्य तेषां शोषणं कुर्वन्ति। एवं भ्रष्टाचारक्रम अनवरतं चलति। भ्रष्टाचारम् अवरोधनाय इदम् आवश्यकम् अस्ति यत् देशस्य प्रत्येकः नागरिकः स्वाधिकारान् प्रति जाग्रतः भवेत्।

वैलासिकं जीवनम् अपि व्यक्तौ अहमहमिकाभावानाम् उपजायते। आधुनिकः युवावर्गः पाश्चात्यसभ्यतायाः विलासितापूर्णजीवनशैल्या अत्यधिकः प्रभावितः अस्ति। अतः युवावर्गः येन–केन–प्रकारेण विलासितासाधनानि प्राप्त्यर्थं भ्रष्टाचारम् आत्मसात् करोति। अतः भ्रष्टाचारनिवारणाय भारतीय संस्कृतेः प्रचारं परमावश्यकम् अस्ति।

श्रीमद्भगवत्गीता के दार्शनिक संप्रत्यय

डॉ० दीप्ति बाजपेयी
विभागाध्यक्ष, संस्कृत

यह सम्पूर्ण संसार दुखमय है और दुःखनिवृत्ति जीवन का लक्ष्य है। दुःखनिवृत्ति के लिए उपनिषदों का अध्ययन, चिन्तन एवं मनन महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में उपनिषदों के गहन अध्ययन के लिए समयाभाव के साथ-साथ अपेक्षित प्रज्ञा का भी अभाव पाया जाता है अतः अल्प समय व सहज बोध की दृष्टि से गीता का ज्ञान ऐसा सुलभ सुधातत्व है जो उपनिषदों के सार से निर्मित हुआ है। जैसा कि कहा भी गया है–

"सर्वोपनिषदों गावों दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थोवत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतमहत्।।"

अर्थात् सभी उपनिषद् गाय हैं, श्रीकृष्ण दूध दुहने वाले हैं, अर्जुन दुग्ध पान करने वाले हैं तथा गीता रूपी अमृत दुग्धवत् है।

गीता के दार्शनिक विचारों का अवलोकन निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत किया जा सकता है–

1. तत्व मीमांसा–

(क) सर्वोपरि सत्ता या अन्तिम सत्य :–

सर्वोपरि सत्ता, परमात्मा या ब्रह्म है। यही एकमात्र अन्तिम सत्य है। इसे पुरूषोत्तम या ईश्वर भी कहा गया है। यह अविनाशी ,सर्व व्याप्त, सार्वकालिक, सर्वज्ञ, अनादि, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, सर्वनियन्ता, शुद्ध, सच्चिदानंद तथा अविद्या से परे हैं–

"उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
या लोकत्रय माविश्य, विभर्त्यव्यय ईश्वरः।"

ब्रह्म अद्वैत है, इसी में सम्पूर्ण जगत् मणियों के सदृश गुथा हुआ है–

"मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।"

यह सर्वोपरि सत्ता एक होते हुए भी अव्यक्त तथा भेद से दो रूपों में विभक्त है। अव्यक्त ब्रह्म निराकार, निर्गुण, अनादि, अविनाशी स्वरूप वाला है। अव्यक्त का व्यक्त रूप अजन्मा और सब प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन कर योगमाया से प्रकट होता है–

"अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृति स्वामधिष्ठाय संभावाम्यात्ममायया।।"

यह ब्रह्म पुरूषोत्तम स्वरूप में धर्म की हानि एवं अधर्म की वृद्धि पर साधुओं की रक्षा, दुष्टों के संहार व धर्म संस्थापना हेतु युग-युग में प्रकट होता है।

2. जीवात्मा :–

"ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः" कहकर श्रीकृष्ण ने जीवात्मा को परमात्मा का ही सनातन अंश स्वीकार किया है। आत्मा अविनाशी, अप्रमेय, नित्य व शाश्वत है। इसे न शास्त्र काट सकते हैं न आग जला सकती है न जल भिगो सकता है न वायु सुखा सकती है–

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायभूत्वा
भविता वा न भूयः।
अजोनित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

इस अविनाशी व निर्विकार आत्मा को प्रकृति से उत्पन्न तीन गुण–सत्, रज, तम शरीर से बाँधते हैं–

"सत्वं रजस्तमं इति गुणाः प्रकृति संभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्यम्।।

3. प्रकृति और पुरूष :–

गीता प्रकृति और पुरूष इन दो तत्वों से ही विश्व की उत्पत्ति मानती है। गीता में प्रकृति के दो रूप स्वीकार किए गए हैं– परा प्रकृति और अपरा प्रकृति। अपरा निम्न श्रेणी की प्रकृति है जिसके आठ विभाग हैं– पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि एवं अहंकार। परा उच्च श्रेणी की प्रकृति है जो सबको शक्ति देती है। यह चेतन प्रकृति है–

"अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिः विद्धि में पराम्।
जीवभूता महाबाहो यमेदं धार्यते जगत्।।"

गीता अद्वैत वादी दर्शन होने के कारण प्रकृति व पुरूष में द्वैत स्वीकार नहीं करती। पुरूष चेतना है, इस चेतना रूप पुरूष को ईश्वर जड़ प्रकृति के गर्भ में प्रवेश करता है तभी सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है–

"मम योनिमहद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भ दधाम्यहम्।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।।

अतः जड़ व चेतन प्रकृति के योग से जगत की उत्पत्ति होती है।

4. मनुष्य :–

मनुष्य को गीता में क्षेत्र कहा गया है। यह क्षेत्र (शरीर) पंच महाभूतों, मन, अहंकार, बुद्धि, मूल प्रकृति अर्थात् त्रिगुणमयी (सत–रज–तम) माया व दस इन्द्रियों तथा इनके विषयों से युक्त है। मनुष्य में शरीर तत्व नाशवान व आत्मा नित्य शाश्वत् तत्व है यह आत्मा परमात्मा का ही अंश है। सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले व मृत्यु के बाद आत्मा ही होते हैं–

"अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।"

ज्ञान मीमांसा–

गीता में ज्ञान की सर्वश्रेष्ठता स्वीकार करते हुए कहा गया है– "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" ज्ञानामृत का सेवन करने वाले ही परमब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं। ज्ञान के द्वारा ही पापों से मुक्ति मिलती है और ज्ञानाग्नि ही सम्पूर्ण कर्मों का नाश करती है। व्यक्ति ज्ञान के द्वारा ही सच्चिदानंद स्वरूप के दर्शन करता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है क्योंकि ज्ञान मानव का मोह नष्ट करके उसे चैतन्य बना देता है।

ज्ञान–प्राप्ति का लक्ष्य–

ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य परमब्रह्म है अर्थात् गीता के अनुसार ज्ञेय या जानने योग्य परमात्मा है। जिसे जानकर व्यक्ति परमानंद में विलीन हो जाता है–

"ज्ञेय मत्तत्प्रवक्ष्यामि मज्ज्ञात्वामृतमश्नुते"

गीता में ज्ञान प्राप्ति का स्रोत आत्मा को बताया गया है। आत्मा, जो कि बुद्धि से सूक्ष्म तथा सब प्रकार सा बलवान व श्रेष्ठ है को जानकर ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

ज्ञान–प्राप्ति की प्रक्रिया :–

गीता में ज्ञान–प्राप्ति की निम्नलिखित प्रक्रिया को स्वीकार किया गया है–

कामनाओं की समाधि –

मन कामनाओं से आवृत है। इन्द्रियाँ, मन व बुद्धि इस काम के निवास स्थान है। काम, मन, बुद्धि व इन्द्रियों के द्वारा ही ज्ञान को आच्छादित कर जीवात्मा को मोहित करता है अतः इसे समाधिस्थ करना आवश्यक है।

गुरू के प्रति श्रद्धा एवं तत्परता –

जितेन्द्रिय, गुरू के प्रति श्रद्धालु तथा ज्ञान प्राप्ति के लिए तत्पर मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त करता हैं–

"श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।"

गुरू सेवा व प्रश्न प्रतिप्रश्न –

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में गुरू सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अतिरिक्त ज्ञानी जनों से प्रश्न–प्रतिप्रश्न द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है–

"तद्विद्धि प्राणिपातेन प्रतिप्रश्नेन सेवया।"

अभ्यास –

अभ्यास तथा योग के द्वारा एकाग्रता प्राप्त करना एवं मन व इन्द्रियों को वश में करना भी ज्ञान प्राप्ति में सहायक है। गीता में सात्विक, राजस व तामस तीन प्रकार का ज्ञान बताया गया है जिसमें सात्विक ज्ञान श्रेष्ठ है जिसको योगाभ्यास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान कामनाओं से आवृत है। इन्द्रियाँ, मन व बुद्धि इस काम के निवास स्थान है। काम, मन, बुद्धि व इन्द्रियों के द्वारा ही ज्ञान को आच्छादित कर जीवात्मा को मोहित करता है अतः इसे समाधिस्थ करना आवश्यक है।

ज्ञानी व्यक्ति के लक्षण–

ज्ञानी व्यक्ति आध्यात्म ज्ञान में नित्य स्थित होकर प्राणिमात्र में परमात्मा के दर्शन करता है। ज्ञान–प्राप्ति व्यक्ति सरल, शुद्ध, दम्भाचरण रहित, क्षमावान् अन्तः करण से स्थिर, अनासक्त, मोह रहित, हर्ष–शोकादि में समभाव होता है। ऐसा ही व्यक्ति जीवनमुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करता है।

मूल्य मीमांसा–

गीता की आचार संहिता निष्काम कर्मयोग है जो मात्र भारतीयों के लिए न होकर समस्त मानव मात्र के लिए है। निष्काम कर्मयोग का आचरण कार्य से विरक्ति न होकर कार्य में विरक्ति है अर्थात् मानव कर्म कर्तव्यपूर्ति के निमित्त है।

मोक्ष जीवन का अन्तिम लक्ष्य है अतः मोक्ष ही सर्वोच्च मूल्य है। ब्रह्मत्व की प्राप्ति अथवा ब्रह्म के साथ सम्पर्क (ब्रह्मसंस्पर्शम्) ही मोक्ष है और यही जीवन का परम उत्कर्ष है।

ईश्वर सत् चित् एवं आनन्दमय है अतः गीता के अनुसार मानव जीवन के मूल्य हैं– सत्यं, शिवं, सुंदरं जिसे ज्ञान, कर्म व भक्ति से सम्बद्ध किया जा सकता है। ज्ञान, सत्य से सम्बन्धित है और कर्म ही कल्याणकारी है कर्म करना अधिकार कर्तव्य दोनों ही हैं। मानव को कर्महीन जीवन जीना चाहिए किन्तु कर्म, फल की इच्छा से रहित अनासक्त भाव से करना चाहिए।

भक्ति सुन्दरता से परिपूर्ण है। इस प्रकार सत्यं, शिवं, सुन्दरं या ज्ञान, कर्म, भक्ति का समन्वय मानव जीवन के विशिष्ट मूल्य है। इन मूल्यों का एक ही गन्तव्य है– मोक्ष। अतः मोक्ष ही गीता के अनुसार अन्तिम व सर्वोपरि मूल्य है। मोक्ष प्राप्त व्यक्ति राग–द्वेष, क्रोध–लोभ, मोह, हर्ष शोकादि से मुक्त होकर मन इन्द्रिय को निग्रह कर समत्व बुद्धि से सब प्राणियों में समभाव से परमात्मा के दर्शन करता हुआ एकीभाव से ब्रह्म में स्थित होता है।

English Section

Dr. Divya Nath

Ms. Diksha

Editors

Ms. Sakshi Adhana M.A. IVth Sem. (English)

Ms. Kanchan B.A. IIIrd

Student Editors

एन. सी. सी. एवं रेंजर गतिविधियाँ सत्र. 2015- 2016

राष्ट्रीय सेवा योजना- सत्र 2014-15 की विभिन्न गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर का रिबन काट कर उद्घाटन करती हुई प्राचार्या महोदया

उत्तम शिवारार्थी को पुरस्कृत करती हुई प्राचार्या महोदया

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर के कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत करती कार्यक्रम अधिकारी डॉ० दीप्ति वाजपेयी

पल्स पोलियो अभियान में सक्रिय सहभागिता करती राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं सेविकाएं

स्वयंसेवी शिविरार्थियों द्वारा निर्मित हस्त शिल्प का अवलोकन करती प्राचार्या जी एवं अन्य प्राध्यापकगण

Child Labour

Meenu Rani
M.A. IV

Oh! How painful scene that was a boy with shirt torn out, hunger in stomach & anxiety in mindpicking up plastics on a railway line. Everyday for food he would pray to earn a little meal,
He had to work hard on footpath he had to kneel,
And much important job that he had to do was to live with an empty belly,
A delightful heart to live with a smiling face and a broken heart.
To live with an empty belly, Are they born to see that day only?
Or we are making them to see it And even after watching that all
We all don't realise it. Its such a shame on us.
I can't even hide it. Every child with such a life
wants to have only one favour
Stop Child Labour
Stop Child Labour
Stop Child Labour.

Why India poor and backward

Meenakshi Kasana
B. Com II Year

.Work is less	-	Gossip is more
.Silence is less	-	Talking is more
.Thinking is less	-	Copying is more
.Followers are less	-	Advisers are more
.Honesty is less	-	Dishonesty is more
.Humanity is less	-	Inhumanity is more
.Country is less	-	Self is more
.Pity is less	-	Cruelty is more
.Shame is less	-	Shame proof are more
0. Duty is less	-	Cowardice is more
1. Bravery is less	-	Rights are more
2. Administration is less	-	Administration are more
3. Impartiality is less	-	Partiality is more

READ MY DEAR FRIENDS READ

Shalu Singh
M.A

This time is not for you to waste,
use it according to your taste
If you go on enjoying the fun,
you will weep at every time.
None will help you in your need
Read my dear friends Read.
If you are really anxious to pass,
you must daily attend your class.
If you want to build you future.
Serve your parents and obey you teachers.

Never do an evil deed,
Read my dear friends Read
Never be careless in school and college.
Because without attention
you can't get knowledge.
Try your best to be good and wise.
learn the screte of great men like.
Be a good character to succeed.
Read my dear friends Read.

FAITH

S
M.A

Little Boy and His mother
Are Crossing The Bridge
Mother Says :
"Son, Hold My Hand Tight"
Boys Says:
"No Mom, you Hold My Hand"

Mother asks :
"What is the difference ?"
Boy Answers :
"If I Hold your Hand,
I May Leave It in some Difficulty
But If you Hold my Hand
For Sure you will Hold Onto It fore

MY MOTHER

Jyoti Shar
M.A

Do you know "Why Love Is Blind"
Because our Mom started to Love us
Before seeing our face.
God told a nine months old baby
You are going to born Tomorrow
Baby asked "How will I talk to people."

God : " I had already sent an angel
To earth, she will teach you."
Child : "How do I find that Angel?
God : Its very simple usually peop
call that Angel As "Mother."

LIFE'S TRUTH

Priya
M.A. IV

Life is a challenge	-	Meet it	Life is a opportunity	-	follow it
Life is a gift	-	Accept it	Life is a journey	-	Complete it
Life is a adventure	-	Dare it	Life is a promise	-	fulfill it
Life is a tragedy	-	face it	Life is a love	-	Enjoy it
Life is a duty	-	perform it	Life is a Beauty	-	Praises it
Life is game	-	Play it	Life is a struggle	-	Fight it
Life is a mystery	-	Unfold it	Life is a goal	-	Achieve it
Life is a song	-	Sing it			

CHEMICAL ANALYSIS OF BACK BENCHERS

Mona Rani
M.A. IV

Element - Back Benchers
Atomic No. - 420
Equation - Naughty students - Attention
= Back Benchers

Relative Density - Heavier and smarter than other classmates.

Occurrence- Back benches of Class
- Hotels and Restaurants
- front rows of Cinema Halls
- Jewels of Parties
- First ones in passing remarks

Physical Properties
- Look like perfect heroes
- Steal a nervous glance at the watch during class.
- Generally busy in disturbing other classmates

Chemical Properties
- Extremely sensitive to movies
- Teacher's words are greek and latin
- React with chalk to make cartoon on board.

Uses
- Good Customer's of parent's money
- Helpful to restaurants owner
- Headache for teachers

Failure will never overtake me if my determination to succeed is strong enough.

JOKES

Mansi Sharma
M.A. I

Sardar Starts shouting in a store
Where is my free gift with this oil ?
Shopkeeper : There is nothing free with this.
Sardar : It is written Cholesterol free.
Why ?

Banta and his son went fishing one day. After a couple of hours the son started thinking about the world around him. Out of his curiosity, he started asking his father a few questions.
"How does this boat float ?"
Banta thought for a moment then replied. "Don't rightly. son."

It's Balle Balle time again !

Sardar ji One -
Manager asked sardar at an inter view
Can you spell a word that has more than 100 letters in it ? Sardar replied : P-O-S-T-B-O-X

Sardar Ji Two -
After returning from a foreign trip sardar asked his wife -
Do I look like a foreigner ?"
Wife : No ! Why ?
Sardar : In London a lady asked me "are you foreigner?"

Sardar Ji Three -
One tourist from U.S.A. asked
Sardar :
Any great man born in this village ?
Sardar : No Sir, only small babies

Sardar Ji Four -
Lecturer - Wtite a note on Gandhi Jayanti.
So Sardar writes - Gandhi was a great man b
I don't know who is Jayanti.

Sardar Ji Five -
Interviewer - Just imagine you are on the th floor, and it has caught fire, so how will y escape ?
Sardar : Its Simple. I will stop my imaginatio

Sardar Ji Six -
Sardar : My mobile bill how much ?
Call centre : Sir just dial 123 to know curr bill Status.
Sardar : Stupid, not Current Bill my Mob Bill.

THINGS IN LIFE NEVER TO FORGET

POOJA BHADA
M.A

1. **Control** - Desires, Temper, Tongue
2. **Preserve** - Good Books, Deeds, Friends
3. **Don't waste** - Energy, Money, Time
4. **Avoid haste in** - Business, Marriage, Travel
5. **Have consideration for** - Children Hung Handicapped
6. **These always pay** - prayers, Hard work knowledge.
7. **Be ready for** - Death, Down fall Sorrow

ACCOUNTS OF MY LIFE

POOJA BHADANA
M.A. IV

My parents are my opening stock.
What I take I Credit.
What I gave I debit.
My birth is my purchase account
My ideas are my assets.
My problem is my habit ties
Happiness is my profit.
Sorrow is my loss
Sour is my good will
Character is my capital
Bad habit I always depriciats.
Good things I always appreciats.
Knowledge is my investment.
Behaviour is my journal entry.
God is my closing stock.
My death is my sales.

FUNNY DEFINITIONS

SWETA DAGAR
M.A. II

Neighbour : Some who Knows more about that you know yourself.
Doctor : A person who kills your ills by pills.
Wife : Worries invited forever
Beauty : A battle fields where aged women fights off their ages.
Office : A place where you can relax from your work.
Boss : One who is always early when you are late
School : A place where papa pays and child plays.
Discipline : The word which is missing from students dictionary.
Music Sysiem : A machine is often used to disturb the neighbours.
Budget : A ghost of which common man is afraid of.

You are never to old to set another goal or to dream a new dream.

RIDDLES

SWETA DAGAR
M.A. II

Q.1 I am tall when I am young and I'am short when I am old. What am I?
Ans. A Candle
Q.2 What comes down but never goes up?
Ans. Rain
Q.3 How can a pants pocket be empty and still have something in it?
Ans. It can have a hole in it.
Q.4 What goes up when rain comes down?
Ans. An Umbrella
Q.5 What is the longest word in the dictionary?
Ans. Smiles, because there is a mile between each 's'.
Q.6 If I drink, I die. If I eat, I am fine. What am I?
Ans. Fire
Q.7 What has 4 eyes but can't see?
Ans. Missisipi
Q.8 If I have it, I don't share it. If I share it, I don't have it. What is it?
Ans. A Secret
Q.9 What is so delicate that saying its name breaks it?
Ans. Silence
Q.10 What has one eye but can not see?
Ans. A Needle
Q.11 How do you make the number one disappear?
Ans. Add the letter G and it's "Gone"
Q.12 What goes up but never comes down?
Ans. Your Age

FUNNY JOKES

FOZIA
M.A. IV

1. *Ek admi apne aap me Keheta hua ja raha tha ki, aisi zindgi se toh maut acchi. Achanak, Yamraj aa gaye or bole "Tumhari Jaan lene ka hukum hai" Aadmi - Lo batao, ab insan jokes bhi nahi kar skta hai kya.*
2. *Husband - Jab main acche kapade pahan kar bazar jata hu to, sabziwale sabzi mahngi dete hai. Jb gande Kapde phen kar jata hu to sasti. Wife - Tum Katora lekar jaya karo na, free me hi sabzi mil jayengi.*
3. *Madam - Last semester you were roaming with that girl and this Semester you are roaming with other. "What you think of yourself"? Student - Syllabus changed Madam.*
4. *Son - Papa main itna bada kab hounga ki main mummy se bina puche bahar ja saku? Papa- Beta abhi itna bada to main bhi nahi hua !!*

KNOW OUR INDIA

FOZIA
M.A. IV

Mizoram for	Duty	Mysore for	Silk
Orrisa for	Temples	Punjab for	Lighting
Kashmir for	Beauty	Haryana for	Milk
Himachal for	Apples	Bengal for	Writing
Rajasthan for	History	Uttar Pradesh for	Sugarcane
Madhya Pradesh for	Tribals	State for	Unity
Maharastra for	Victory	Kerala for	Brains
Jharkhand for	Minerals	India for	Integrity

'LIFE IS A CHALLENGE'

BHAVNA SINGH
M.A. IV

It is a fact of life
One day we have to die.
One day we smile
The other day we have to cry.
If there is a day
There has to be a night
If there is dark
There has to be light
If you are low
you are going to be high.
If all doors are closed
One window seems so bright.
If people are standing against you
just turn your back, you will be the leader.
Don't run because nothing is going right
Just sit calmly and fight with time.
Time is an integral part of life.
Be with it, you will be the leader.
Some people will try to push you from behind
Be brave & Kick them light.
Life is a challenge
Accept it the way it comes.
Life is a gift
Cherish it with love
Life gives you surprises
In every step you take.
Be wise, be brave, be strong
That's the only way
You will win the battle of life.

GIRL'S SAFETY

Asha Rani
M.A. IV

The sad reality is that we live in an increasingly violent society in which the year of crime is ever-present. Personal safety has become an issue of importance for everyone, but especially for women. Concerned about this state of affairs sgt. Darren Laur and his wife beth Laur began teaching self-defence classes and safety seminars-1993, and have since reached thousands of woman. The demand they saw for reliable safety information, coupled with the need to debunk widespread myths regarding self-defence measure, convinced the two experts to write a book.

The following points are four things that every woman should know about personal safety, and are covered in the Laurs newly published book, Total Awareness - A woman Safety book.'

1. Awareness - Your first line of defence. Most people think of kicks to the groin and blocking punches when they hear the term 'self-defence." However, true self-defence begins long before any actual physical contact. The first, and probably most important, component in self-defence is awareness, awareness of yourself, your surroundings, and your potential attacker's likely strategies.

2. Use your sixth sense - "Sixth Sense". "Gut instinct' Whatever you call it, your intuition is a powerful sub concious insight into situations and people. All of us, especially women, have this gift, but very few of us pay attention to it. Learn to trust this power and use it to your full advantage. Avoid a person or a situation which does not "feel" safe - you're probably right.

3. Safety in Cyberspace - Although the internet is educational and entertaining, it can also be full of danger if one isn't carefull. When communicating on-line. Use a nickname and always keep personal information such as home address and phone number confidential. Instruct family members to do the same. Keep current on security issues, frauds, viruses etc. by periodically referring to "The Police Notebook." Internet Safety Page.

4. Pepper Spray - If you are carrying it in your purse, you will only waste time and alert the attacker to your intentions while you fumble for it. Never depend on any self-defence tool or weapon to stop an attacker. Trust your body and your wits, Which you can always depend on it the event of an attack.

5. Escape - Always your best option. What if the unthinkable happens ? You are suddenly confronted by a predator. Who demands that you go with him - be it in a car, or into an alley, or a building. It would seem prudent to obey, but you must never leave the primary crime scene. You are for more likely to be killed or seriously injured if you go with the predator than if you run away. Run away, yell for help, throw a rock through a store or car window do whatever you can to attract attention. And if the criminal is after your purse or other material items, throw them one way while you run the other.

LOVE AND TIME

Shailendri
M.A. II

Once upon a time, there was an island where all the feelings lived : Happiness, Sadness, Knowledge and all of the others, including Love One day . It was announced to the feelings that the island would sink, so all constructed boats left, except for love. Love was the only one who stayed. Love wanted to hold out until the last possible moment. When the island had almost sunk, Love decided to ask for help.

Richness was passing by Love in a grand boat. Love said, " Richness, can you take me with you?" Richness answered. " No, I Can't. There is a lot of gold and silver in my boat." There is no place here for you."

Love decided to ask **Vanity** who was also passing by in a beautiful vessel. "Vanity, please help me!" "I Can't help you, Love. You are all wet and might damage my boat, " Vanity answered.

Sadness was close by So love asked,

"Sadness, let me go with you." "Oh..... Love, I am so sad that I need to be by myself!" Happiness passed by Love, too but she was so happy that she did not even bear when love called her.

Suddenly, there was a voice, " Come Love, I will take you." It was an elder.

So blessed and overjoyed. Love even forgot to ask the elder where they were going. When they arrived at dry land, the elder went his own way. Realizing how much was owed the elder, Love asked **Knowledge**, another elder, "Who helped me?" "It was **Time**" knowledge answered.

"Time?" asked Love, " But why did Time help me?" Knowledge smiled with deep wisdom and answered, "Because only Time is Capable of understanding how Valuable Love is."

HAPPIEST MAN

Bhavana Singh
M.A. IV

Many, Many years ago in North Africa there lived a chief. He was very rich and had many wives and children. But he was not happy. He thought, "I have everything But that does not make me happy. What must I do to be happy? I don't know. " Once he shouted angrily to his servants "Why can't I be happy ?" One of his servants said. "O my Chief! Look at the sky! How and the stars are! Look at them and you will see how good life is. That will make you happier." "Oh no, no, no! the chief answered angrily. "When I look at the moon and the stars, I become angry. Because I know I cannot get them." Then another servant said, "O my Chief! What about music ? Music makes a man happy. We shall play to you from morning till night and music will make you

happy. The chief's face became red with anger. "Oh no,no,no! he cried. "What a silly idea. Music is fine But to listen to music from morning till night day after day?" Never! No, Never " So the servants went away and the chief sat angrily in his rich room. Then one of the servants came back into the room and made a bow, : O my chief. " he said, "but I think I can tell you something that will make you very happy." What is it ? asked the chief. It is very easy to do." said the servant. "You must find a happy man take off his shirt and put it on. Then his happiness will go into your body & you will be as happy as he"! "I like your idea. "said the chief. He sent his soldiers all over the country look for a happy man. They went on and on. But It was not easy to find a happy man in the chief's country. But one day the soldier found a man in a small village who said I am the happiest man in the world." He was poor but he always smiled and sang the soldier brought him to the chief at least." I shall be a happy man! said the chief and took off his shirt at once." bring the man in!" The door of the chief's room open. A small walked in."Come here my friend!" said the chief." "Please take off your shirt!" The happy man with a little smile came up to the chief, the chief look a closer look at him and what did he see ? The happy man, the happiest man in the world, has no shirt !

MURDER OF ENGLISH

Bhavana Singh
M.A. IV

- All of you stand in a straight circle.
- Will you hang the calander or else I will hang myself..
- Open the window, let the air force come in.
- Pick up the paper and fall in dustbin.
- Why are you looking at the monkey outside when I am inside.
- I have two daughters. Both are girl.
- Give me a blue pen of any colour.
- The Principal is revolving in the Corridor.
- I am suffering from fever. Please declare one day holiday.
- Both of you stand together seperately.

Balance is the Ultimate Key to a Healthy Life

Pratibha
M.A. Eng IV Sem.

The concepts of Moderation and Balance are often used interchangeably, but they are actually very different. A life of moderation is one without excess- a little exercise, but no hard workout- enough food, but never overeating- the slightest bit of excitement, but minimum stress. Moderation is not a bad way to live. It is certainly for superior to a life of excess or a life of deprivation. However constant moderation has somewhat the character of uniform grayness. Think of a life of balance like an old- fashioned balance scale, with opposites weighed against each other. Living in balance, one indulges in the occasional hot fudge sundae, but balanced with a simple meal of 'Dal and Roti' in small portions. The occasional early morning 'Jog' balanced with an a afternoon sprawled in front of the television football game. An afternoon at the bungee- jump balanced with time drifting under the starry sky at night. Rather than the constant grayness of moderation, a life in balance, has points of interest and variability.

There is certainly a place for moderation in a balanced life. Although one could consider a life of extremes to be in balance, few of us could live successfully by balancing days of dangerous mountain climbing with days of floating in a pool. Balancing variability with constancy is another important aspect of a balanced life. Add balance and perspective to your life.....With the following-

Balance activity with serenity- Exercise and rest are both essential to a healthy and joyful life.

Balance wealth with simplicity- The best things in life truely are free, but there is also a place for material accomplishment- both for you own sake and for the sake of the world. Avoid the clutter of collecting excess possessions, but treat yourself with a few special items, trips and other benefits of the modern world.

Balance persistence with innovation- Elbert Einstein is sometimes quoted as saying "instantly is doing the same thing over again and expecting different results." Practice, patience and persistence are essential to success in life, but recognize when the time comes to stop what you are doing and to search for a different route toward your life goals.

Balance community with solitude- Life success requires teamwork with a community of like minded companions, yet you must also allow time for solitude- time for contemplation, time for relaxation and time to be your own self with no pressure to conform or to please others.

Balance familiarity with adventure- Adventure is like the seasoning on your meal- life is monotonous and boring without adventure, yet there is also a crucial place for the familiar Physically and emotionally comfortable surroundings are essential to your well being. There is no place like a comfortable home from where to launch your adventures and to which you return- either as the victorious hero or in shameless defeat, ready to recharge and set out on the next adventure.

A Glass of Milk - Paid in full

Resham Nagar
M.A. IV

One day, a poor boy who was selling goods from door to door to pay his way through school, found he had only one thin dine left, and he was hungry.

He decided he would ask for a meal at the next house. However, he lost his nerve. when a lovely young woman opened the door instead of a meal. He asked for a drink of water. She thought he looked hungry so brought him a large glass of milk. He drank it slowly, and then asked, "How much do I owe you?" You don't owe me every thing" she replied.

"Mother has taught us never to accept pay for a kindness he said, "then I thank you from my heart. As Howard Kelly left that House, he not only felt stranger Physically but his faith in God and man was strange also. He had been ready to give up and quit. Year's later young woman became critically ill. The local doctors were baffled. They finally sent her to the big city where they called in specialists to study her rare disease. Dr. Howard Kelly was called in for The consultation. When he heard the name of the town she came from, a stranger light filled his eyes.

Immediately he rose and went down the hall of the hospital to her room, dressed in his doctor's gown into see her. He recognized her at once. He went back to the consultation room determined to do his best to save her life. From that day he gave special attention to the case.

After a long struggle, the battle was won. Dr. Kelly requested the business office to pass the final bill to him for approval. He looked at it then wrote something on the edge and the bill was sent to her room. She feared to open it, for she was sure it would take the rest of her life to pay for it all.

Finally she looked and something caught her attention on the side of the bill. She began to read the following words:

"Paid in full with one glass of milk".
Signed Dr. Kelly

Aim of Education

Meenakshi Kasana
B.Com II

E - To eradicate ignorance and illiteracy
D - To develop the sense of discipline
U - To utilize the power of understanding
C - To cultivate a sense of curiosity and creativity

A - To acquire the quality of aspiration
T - To teach the quality
I - To inculcate interest for knowledge
O - To be obedient to elders
N - To be noble and humble

Strange But True

Sangeeta Sharma
Deptt. of English
M.A. II Sem.

Napoleon was born in 1760
Hitler in 1889
The difference is 129 years
Napoleon came to power in 1804
Hitler in 1993
The difference is 129 years
Napoleon declared war on Russia in 1812
Hitler in 1941
The difference is 129 years
Napoleon was dictator in 1816
Hitler in 1945
The difference is 129 years
Napoleon occupied Burma in 1809
Hitler in 1938
The difference is 129 years.

Cry of an aborted female foetus

Manisha Bhati
M.A. Eng
IV Sem

Why did you stop my arrival oh Mother?
Often conception is a source of pleasure
all near ones cherish it as a treasure
But, my inception placed you in trouble
Oh, mother nice! you ceased to be humble
Though my being was not required
Yet, if growth fallen and come out ripe
I would have become your prototype.
Giving birth to noble souls that shine
I too could make my life fine
Contributed my life for good of nation
There would have been enlightened generation
They too could attain the caliber high
As Indira, Sarojini and Laxmibai
And many others in the history of the nation
for freedom and progress who had deep passion.
Had you not stopped arrival?
Oh, mother, also my survival?

Time To Learn

Mona Rani
M.A. Eng
IV Sem.

A young but earnest Zen student approached his teacher and asked the Zen mater, "If work deligently how long will it take for me to become a Zen master." The master thought about this, then replied, "10 years." The students then said, "But what if I work very, very hard and really apply myself to learn fast - howlong then."
Replied the master, "Well 20 years."
"But if I really work at it. How long then?" asked the student.
"30 years." replied the master.
"But, I do not understand" said the disappointed student.
"Each time that I say I will work harder, you say it will take me longer. Why do you say that?"
The master replied, "Where you have one eye on the reward you only have one on the path."
"Travel sincerely along the path and reward will take care of itself."

Miss You Dad

Nisha Singh Tiger
B. Com II Year

Early in the morning when
I wake up I miss your lovely
good morning.
When I drink the tea alone
I miss your lovely talking
When I left my house for college
I miss your lovely good bye
I miss your lovely words take care.
When I play on the ground or I get hurt
I miss your care.
When I cross the road alone
I miss your hand
I miss your support.
When I am alone I miss your company
I miss your love towards me
I miss your guidance at every steps of my life.
I miss the way you correct me
When I speak wrong sentences
I miss you Dad.
When someone scold me that time
I miss you, I miss you Dad.
People said that you are always there with me but I never saw you I want you, your support, your love, you come.
You one of the best Dad in the world.
I miss you. I miss your lovely words,
Don't worry Nisha I am always there with you.
I miss you & I love you Dad.

Bollywood Films In Student's Life

Monika Yadav
B. Com
II Year

Exam - Kalyug
Classes - Kabhi Kabhi
Examination Hall - Chamber of secret
Examiner - Mrityudata
Course - Godzilla
Paper correction - Andha Kanoon
Exam time- Qayamat Se Qayamat Tak
Question Paper - Paheli
Answer Paper - Kora Kagaz
Marks - Asambhav
Paper Out - Plan, Cheating - Aksar
Last Exam - Independence Day
Result - Sadma
Pass - Ajooba/ Chamatkar
Fail - Devdas
Vacations - Masti

Fun facts

Ritu Nag
B. C
II Y.

- A snail can sleep for three years.
- Eating chewing gum while peeling onions will keep you from crying.
- You can't kill yourself by holding your breathe.
- It costs 7 million dollars to build the Titanic and 200 million to make a film about it..
- All polar bears are left handed.
- Human hairs and nails continue to grow even after death.
- Butterflies taste with their feet.
- The average person who stops smoking requires one hour less sleep at night.
- Everyone's tongue print is different.
- Your tongue is germ free only if it is pink. If it is white there is a thin film of bacteria on it.
- It is impossible to lick your elbow.
- If you are a right handed, you will tend to chew your food on your left side.
- The name of all continents starts and ends with same letter.
- Women blink nearly twice as much as men do.

Jungle Truth

Monika Yadav
B. Com II Year

- An ostrich's eye is bigger than its brain.
- A snail can have upto 25,000 teeth.
- The heaviest land mammal is African Elephant.
- Owls are one of the birds who see blue colour.
- A blue whale's heart beats only nine times per minute.

Mathematics

Monika Yadav
B. Com II Year

How to find your age:-

- Multiply your age by 20 and add today's date.
- Mutiply the result by 5 and keep aside.
- Mutiply today's date by 5.
- Substract the product from the result.
- In the balance, the first two digit give your age.

The Best Things in Life

Monika Yadav
B. Com II Year

1. The most precious day - Today
2. The most precious gift - Forgiveness
3. The best play - Work
4. The greatest need - Common Sense
5. Easiest thing to do - Finding fault
6. The greatest puzzles - Life
7. Most dangerous thing - Jealousy
8. The greatest thing - Giving up
9. Thing not to believe - Rumours
10. Things we have to do - Timely help
11. Asset to rekindle - Pride
12. The worst thing - Greed
13. Path for progressive life - Hard work
14. Things not to miss - Fortunes

Rules

Monika Yadav
B. Com II Year

Before you speak, listen.
Before you write, think.
Before you spend, earn.
Before you invest, investigate.
Before you criticize, wait.
Before you quit, try.
Before you retire, save.
Before you die, give.

Story - The Real King

Sakshi Adhana
M.A. IV Sem.

Once upon a time there lived a king in China. He was very old. He wanted to choose an honest and a good person to become the king after him. He thought to himself, "How will I find such a person ?" He then had an idea. He called all the children in his kingdom to his palace. He gave each of them a special flower seed and, "plant these seeds. Bring the plants to my palace next year. Whoever grow seeds into the best flower will become king." All the children went back home with the seed he filled a flowerpot with rich soil and plant the special seed. The plant did not sprout. He put the seed into a bigger pot with more soil. Still nothing happened. He became very sad at the end of the year with beautiful flowers to the king. Only Pong had an empty pot. He was ashamed. But Pong's father said, " you did your best, your best effort is enough for the king. Go to him with the empty pot."

Pong went to the palace. The King was looking at all the flowers slowly. He came to Pong's pot and asked, "Why is your pot empty?"

Pong cried and said, "I planted the seed you gave me. I watered it everyday. I took good care but the seed just did not sprout. This is the best I could do.

The King smiled and said, "I have found the next King." He said to the other children." The seeds I gave you were all cooked. They cannot grow into a plant. All of you have cheated. But Pong is an honest boy. He will be the next King."

Story - Unity Is Strength

Sakshi Adhana
M.A. IV Sem.

Once there were two bulls. They lived together happily on a farm. They were very good friends. No animal dared to go near them. The bulls would fight back any attack together. Even the lion did not have the courage to go near them. Once the lion thought of a plan. He went to one bull and said, "Your friend is eating more grass than you. Oh, what a pity!"

The lion told the same thing to the another bull so they started going to field alone. One day one bull was eating grass all alone. The lion sprang upon the bull, killed him and ate him up. The other bull did not go to his help. After few days, the lion killed the second bull and ate him up too.

Together the bulls were strong and safe. Nobody caused harm them. Alone, the bulls were weak. Thus, it is said that unity is strength.

Beti Bachao, Beti Padhao Yojana

Asha Gautam
M.A. English
IV Sem.

Beti Bachao, Beti Padhao (Save girl child, educate girl child) is a Government of India scheme that aims to generate awareness and improving the efficiency of welfare services meant for a woman. The scheme was initiated with an initial corpus of Rs. 100 crore.

According to census data, the child sex ratio (0-6 years) in India was 927 girls per 1,000 boys in 2001 which dropped drastically to girls for every 1,000 boys in 2011. At 2012 UNICEF report ranked in India 41st among 195 countries. The Government also proposed Rs. 150 crore to be spent by Minister of Home Affairs on a scheme to increase the safety of women in large cities.

Speaking on International Day of the Girl Child, Prime Minister Modi, called for eradication of female foeticide and invited suggestions from the citizens of India on "Beti Bachao, Beti Padhao" on the My Gov poertal.

Prime Minister Modi launched the programme on January 22, 2015 from Panipat, Haryana.

Programme Objectives

Prevent gender based sex selective elimination Ensure survival & protection of the Girl Child Ensure education of the Girl Child Improve the Nutrition status of Girl Child Promote a protective environment for Girl Child.

He also launched Sukanya Samridhi Yojna (girl child prosperity scheme), under which girl children below 10 years will have bank account with more interest and income tax benefits.

The campaign will be initially implemented in the 100 districts, including 12 in Haryana, and across the country where the sex ratio is rather poor.

Women and child development minister Maneka Gandhi said the 'Beti Bachao, Beti Padhao' campaign was the fourth major initiative of the Modi government after Jandhan Yojna, Swachh Bharat Abhiyan and Make in India campaign. She added that 2000 girls are killed everyday in the country which was 'Shameful'.

A reward of Rs. 1 crore will be given for the "inovative" village which attains a balanced sex ratio.

We may encounter many defeats but we must not be defeated.

समाचारिका

सम्पादक मण्डल

डॉ० निधि रायज़ादा

डॉ० नेहा त्रिपाठी

डॉ० अरविन्द यादव

''आत्मना विन्दते वीर्य विद्यया विन्दतेऽमृतम्''

वार्षिक आख्या - सत्र 2014-2015

श्रीमती रंजना जैन
प्रभारी–अंग्रेजी विभाग

शिक्षण संस्थायें किसी भी क्षेत्र के विकास की परिचायक होती हैं। महाविद्यालय का स्थान सर्वोपरि होता है। सम्प्रति कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, पूर्णतया ग्रामीण अंचल में स्थित है। महाविद्यालय की स्थापना अज्ञानता के तिमिर को दूर करने एवं ज्ञान विज्ञान के आलोक के विकीर्ण करने हेतु उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा जुलाई 1997 में की गयी।

अपनी शैशवास्था में महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर नौ विषय एवं बी०ए०, बी०कॉम० एवं बी०एस०सी० की कक्षायें प्रारम्भ हुई। वर्तमान में शासन द्वारा दूरदर्शिता एवं पारदर्शिता के कारण तथा प्राचार्या के अथक प्रयास, प्राध्यापकों की लगन एवं कर्मठता के कारण महाविद्यालय अपनी प्रगति के उत्तरोत्तर सोपान चढ़ते हुये आज महाविद्यालय में नौ विषयों में पी०जी० की कक्षायें संचालित हैं।

किसी भी महाविद्यालय की समृद्धि एवं विकास गति का परिचायक उसके अध्ययनरत शिक्षार्थी होते हैं। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 26 छात्र–छात्राओं से प्रारम्भ करते हुये अब 2009 छात्रायें महाविद्यालय में अध्ययनरत है, जो विकास की अनवरत प्रक्रिया का प्रत्यक्ष प्रमाण है। शिक्षकों के अथक प्रयास से वर्ष 2013–14 का परिणाम औसतम 95 प्रतिशत रहा है। महाविद्यालय में अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त तार्किक, बौद्धिक एवं सर्वांगीण विकास हेतु समय–समय पर विभागीय परिषदों द्वारा विभिन्न प्रतियोगितायें जैसे वाद–विवाद, कविता पाठ, निबन्ध, स्लोगन, पोस्टर, सामान्य ज्ञान आदि प्रतियोगितायें सम्पन्न करायी जाती हैं। जिनके विजयी प्रतियोगियों को वार्षिक समारोह में पुरस्कृत किया जाता है।

छात्राओं की नारी सुलभ रुचियों एवं प्रतिभाओं का ध्यान रखते हुये–मेहंदी, रंगोली, कलश–सज्जा, लोक–गीत, लोक–नृत्य आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन साहित्यिक, सांस्कृतिक परिषद् के माध्यम से वर्ष पर्यन्त किया जाता है।

महाविद्यालय की अन्य उपलब्धियों में "स्वामी विवेकानन्द एवं डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गयी। इन महापुरुषों के प्रेरणादायक विचारों एवं व्यक्तित्व से सम्बन्धित लघु पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इन नव स्थापित केन्द्रों का उद्घाटन क्रमशः सुविख्यात कवि कुमार विश्वास एवं डॉ० जिले सिंह, निदेशक बौद्ध अध्ययन केन्द्र मवाना द्वारा किया गया।

महाविद्यालय में सामाजिक चेतना एवं राष्ट्र सेवा से सम्बन्धित इकाईयां जैसे रा०से०यो० एन०सी०सी० में 50 केडिट तथा रैन्जर्स में 65 रैन्जर्स छात्रायें पंजीकृत है। इन इकाइयों के तत्वावधान में विभिन्न प्रकार के शिविर एवं प्रशिक्षण आयोजित किये जाते हैं।

हमारा भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उत्तर प्रदेश शासन के आदेश द्वारा 11 नवम्बर को छात्रसंघ चुनाव निष्पक्ष रुप से सम्पन्न कराये गये।

समय–समय पर उत्तर प्रदेश एवं केन्द्र सरकार द्वारा निर्देशित कार्यक्रम भी आयोजित किये गये जैसे 23 जनवरी को मतदाता जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र द्वारा निर्देशित स्वच्छता अभियान तथा बेटी बचाओ तथा बेटी पढाओं अभियान को उच्च प्राथमिकता प्रदान कर कार्यक्रम सम्पन्न किये गये।

महाविद्यालय में 13 फरवरी 2015 को 'नैकडोर' जैसे स्वैच्छिक संगठन ने महिला हिंसा के विरुद्ध एक वैचारिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। विश्व मानवाधिकार दिवस पर मानव श्रृंखला एवं शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में वैचारिक एवं शोध कार्य को समृद्ध करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश राज्य परिषद के अनुदान के अन्तर्गत एक राष्ट्रीय सेमिनार "महिला सुरक्षा एवं गौरव के संरक्षण में शिक्षा की भूमिका" आयोजित किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन अखिल भारतीय महिला संगठन की

महाविद्यालय में संचालित विविध गतिविधियां

मतदाता जागरुकता रेली, मानवाधिकार दिवस, गाँधी जयन्ती, स्वच्छता अभियान, क्रीड़ा दिवस व बेटी बचाओ रेली आदि।

वार्षिकोत्सव - 2015

मुख्य अतिथि - सम्मानित श्री हरीश कुमार वर्मा जी, अपर मुख्य कार्यवाहक अधिकारी ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण, गौतम बुद्ध नगर, उ०प्र०

अध्यक्षा एनी राजा के द्वारा तथा समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ० अश्वनी कुमार गोयल, संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया।

महाविद्यालय में छात्राओं के स्वस्थ मन एवं स्वच्छ तन की उपयोगिता को देखते हुये समान अवसर केन्द्र एवं बौद्धिक प्रचार प्रसार समिति के तत्वावधान में प्राकृतिक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। इसी तारतम्य में महाविद्यालय का क्रीड़ा समारोह 19–20 फरवरी को आयोजित किया गया। समारोह का उद्घाटन सुप्रसिद्ध क्रिकेटर श्री मदन लाल द्वारा किया गया।

महाविद्यालय का प्रवेश ग्रामीण अंचल में हाने के कारण बहुत सी छात्रायें परिस्थितिवश संस्थागत कोर्स में सम्मिलित नहीं हो पाती। उनकी सुविधाओं को दृष्टिगत करते हुए एवं शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु अग्नू अध्ययन केन्द्र सफलता पूर्वक संचालित हो रहा है, जिसमें लगभग 210 विद्यार्थी विभिन्न विषयों में पंजीकृत हैं।

महाविद्यालय की विकास की असीमित सम्भावनाओं को देखते हुऐ प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग निरन्तर नई योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु प्रयासरत रहती है। इस क्रम में बी०एड० पाठ्यक्रम की प्रक्रिया अपने अन्तिम चरण में है। अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित करना चाहती हूँ कि महाविद्यालय को बी०एड० का लैटर ऑफ रिकोगनीशन प्राप्त हो चुका है। आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि आगामी सत्र में विकास की श्रृंखला में बी०एड० पाठ्यक्रम की एक नयी कड़ी जुड जायेगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना
''सेवा परमो धर्मः''

डॉ० दीप्ति वाजपेयी
कार्यक्रम अधिकारी
रा० से० यो०

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित की जा रही राष्ट्रीय सेवा योजना देश में समाज सेवा का एकमात्र ऐसा कार्यक्रम है जो विद्यार्थियों व शिक्षकों में अध्ययन अध्यापन के मध्य सेवा भाव का सृजन तो करता ही है साथ ही विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्यक्रमों से जुड़े विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम, साम्प्रदायिक सौहार्द, अनुशासन एवं एकता की भावना विकसित होती है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धान्त वाक्य अथवा प्रत्यवचन है ''मुझको नहीं तुमको''। यह सिद्धान्त वाक्य प्रजातान्त्रिक ढंग से जीने का सार बताता है कि हम दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण की सराहना करने वाले बने तथा सभी के प्रति सहानुभूति रखें। इस प्रत्यवचन का आशय है कि व्यक्ति का कल्याण अन्तिम रुप से समस्त योजना का कल्याण होने में ही निहित है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत प्रत्येक स्वयं–सेवक/सेविका को दो वर्ष की अवधि में 240 घंटों का सामुदायिक कार्य करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना की सभी स्वयं सेवी छात्रायें पूर्ण तत्परता एवं मनोयोग से सामान्य प्रशिक्षण एवं श्रमदान आदि के द्वारा शिविरों के माध्यम से योजना को मूर्त रुप देने हेतु सतत् संलग्न है।

वर्तमान सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत चार एकदिवसीय शिविरों के माध्यम से अधिग्रहीत ग्राम सादोपुर में श्रमदान, स्वच्छता, साक्षरता, वृक्षारोपण, एड्स से बचाव, मतदान के प्रति जागरुकता, विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के प्रति जाग्रति, स्वास्थ्य एवं आहार–पोषण सम्बन्धी जानकारी, पल्स–पोलियो एवं टीकाकरण आदि राष्ट्रीय अभियानों में स्वयं सेवियों द्वारा सक्रिय योगदान, सर्वेक्षण एवं परिचर्चा कार्यक्रमों के माध्यम से जागरुकता अभियान चलाया गया। इसके साथ ही समय–समय पर भाषण, चार्ट, स्लोगन व निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

सत्र 2014–15 में 50 स्वयं सेविकाओं का सात दिवसीय विशेष शिविर दिनांक 17 जनवरी 2015 से 23 जनवरी 2015 तक ग्राम सादोपुर में आयोजित किया गया। शिविर जिस लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य को संकल्पित कर आयोजित किया गया था उन लक्ष्यों को पूर्ण करने में पूर्णतः सफल रहा।

शिविर के प्रथम दिवस दिनांक 17 जनवरी 2015 को प्रातः सर्वधर्म प्रार्थना के पश्चात् शिविर का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग जी द्वारा रिबन काटकर एवं दीप प्रज्जवलन कर किया गया। द्वितीय सत्र में पूर्व कार्यक्रम अधिकारी डॉ० मिन्तू द्वारा ''राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य–उद्देश्य एवं शिविरार्थियों की आचार संहिता'' पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। तत्पश्चात् शिविरार्थी छात्राओं ने अधिग्रहीत ग्राम सादोपुर की मलिन बस्तियों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त की।

शिविर के दूसरे दिन दिनांक 18/01/15 को सर्वधर्म प्रार्थना एवं शिविर गीत के पश्चात् शिवारार्थी छात्राओं ने धार्मिक स्थलों (सादोपुर ग्राम के) की स्वच्छता का कार्य किया एवं पौधारोपण कर ग्रामीणों को वृक्ष लगाने हेतु प्रेरित किया। द्वितीय सत्र में डॉ० मकसूद अहमद, सेवानिवृत प्रभारी विज्ञान संकाय ने ''जलवायु परिवर्तन एवं जनसंख्या'' विषय पर सारगर्भित जानकारी प्रदान की गई।

पोलियो रविवार होने के कारण शिविरार्थी छात्राओं ने सादोपुर के पोलियो बूथ पर जाकर बच्चों को पोलियो की दवा भी पिलाई तथा इस राष्ट्रीय अभियान में बढ़ चढ़ कर भागीदारी की।

दिनांक 19/10/15 को शिविर के तीसरे दिन शिविरार्थी छात्राओं द्वारा मतदाता जागरुकता रैली निकाली गई तथा ग्राम सादोपुर का मतदाता पहचान पत्र सर्वेक्षण कार्य किया गया तथा लोगों को मतदान करने हेतु प्रेरित किया। बौद्धिक

सत्र में डॉ० अर्चना सिंह, हिन्दी विभाग, द्वारा ''राष्ट्रीय सेवा योजना में युवाओं का योगदान' विषय पर प्रकाश डाला गया। व्याख्यान के उपरान्त नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें शिविरार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया व सामाजिक समस्याओं पर रोचक नारे प्रस्तुत किए।

शिविर के चतुर्थ दिवस दिनांक 20/1/15 को ईशवन्दना के पश्चात् छात्राओं द्वारा महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकार विषय पर सादोपुर की जनता के मध्य जागरुकता कार्यक्रम के अन्तर्गत परिचर्चा का आयोजन किया गया।

बौद्धिक सत्र में श्रीमती शिल्पी, गृह विज्ञान विभाग ने स्वयंसेवी छात्राओं को ''सामुदायिक विकास में दृश्य–श्रव्य साधनों की उपयोगिता'' विषय पर रोचक व्याख्यान दिया। इसके पश्चात् शिविर में साहिल गैस – ''सुरक्षा की ओर एक कदम'' की ओर से नुक्कड नाटक का आयोजन हुआ। जिसमें छात्राओं ने भी उत्साह से प्रतिभाग किया। तदुपरान्त हस्तशिल्प प्रतियोगिता आयोजित की गई।

शिविर के पाँचवे दिन दिनांक 21/1/15 को ग्राम सादोपुर की प्रमुख सड़को की साफ सफाई की गई एवं स्वच्छता का महत्व बताने वाली नुक्कड़ नाटिका का आयोजन किया गया। द्वितीय सत्र में डॉ० अरविन्द यादव प्रभारी वाणिज्य संकाय द्वारा 'वैश्वीकरण– भारत के लिए उचित अथवा अनुचित'' विषय पर परिचर्चा कराई गई। तृतीय सत्र में लघु नाटिका प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसके अन्तर्गत विभिन्न शिविरार्थी टोलियों ने शिक्षा का महत्व, बेटा–बेटी एक समान तथा दहेज एक अभिशाप इत्यादि विषयों पर प्रेरक लघु नाटिकाएँ प्रस्तुत की।

दिनांक 22/01/15 को शिविर के छठे दिन अधिग्रहीत ग्राम सादोपुर का साक्षरता सर्वेक्षण किया तथा लोगों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरुक किया। बौद्धिक सत्र में श्री विजयपाल सिंह सेवानिवृत प्रधानाचार्या द्वारा ''भारत में साक्षरता परिदृश्य पर विचारोत्तेजक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् हस्तशिल्प एवं हस्त कौशल विकसित करने की दृष्टि से कढ़ाई प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शिविर के अन्तिम दिन दिनांक 23/01/15 को समापन समारोह के सुअवसर पर माँ शारदे के सम्मुख दीप प्रज्जवलन के पश्चात् कार्यक्रम अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी आगन्तुकों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् शिविरार्थी छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। इसके पश्चात् कार्यक्रम अधिकारी द्वारा शिविर की आख्या प्रस्तुत की गई तथा शिविरार्थी छात्राओं ने शिविर की उपलब्धियों पर वक्तव्य दिए।

अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर का समापन मुख्य अतिथि श्री नगेन्द्र बैसोया ग्राम प्रधान सादोपुर एवं विशिष्ट अतिथि डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग, प्राचार्या जी के आर्शीवचन के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम अधिकारी डॉ० दीप्ति वाजपेयी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना की सम्पूर्ण समिति डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० मिन्तु, श्रीमती शिल्पी, डॉ० ऋचा, डॉ० विनीता सिंह एवं सुश्री नीलम शर्मा के विशेष योगदान से राष्ट्रीय योजना के विशिष्ट एवं सामान्य समस्त कार्यक्रमों को गति प्रदान की जा सकी।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग जी के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन तथा महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों व कर्मचारी वर्ग के उल्लेखनीय सहयोग से राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई सत्र 2014–15 के निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति में सफल रहीं।

महिला सशक्तिकरण की ओर एक कदम महिला प्रकोष्ठ - 2014-15

डॉ० दिव्या नाथ
प्रभारी
महिला प्रकोष्ठ

महिला एवं पुरुष जीवनरुपी रथ के दो पहिए हैं। समाज तथा राष्ट्र की उन्नति तभी सभव है, जब इस रथ के दोनों पहिए समान आकार धारण कर, कंधे से कंधा मिला कर चले। किंतु नारी सशक्तिकरण एवं समानता के अनगिनत प्रयासों के बावजूद, आज भी महिलाएँ, अपने अनुसार जीवन जीने के अधिकार से वंचित है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, यौन उत्पीड़न तथा प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने संबंधी समस्याओं से आज भी भारतीय नारी जूझती नजर आती है। हम सब यह जानते हैं कि महिला परिवार की वह धुरी होती है, जिसके चारों और सभी सदस्यों का जीवन घूमता है। परन्तु जहाँ एक ओर महिलाओं के उत्थान एवं समान अधिकारों की चर्चा होती है, वहीं दूसरी ओर उनके उत्पीडन एवं शोषण के दुखद पक्ष प्रदर्शित होते है, जो समाज की प्रगति पर एक धब्बा है। इसी अन्याय से लड़ने के परिप्रेक्ष्य में, सभी कार्य क्षेत्रों में महिला प्रकोष्ठ का गठन आवश्यक कर दिया गया है, जो महिलाओं को शोषण के खिलाफ आवाज उठाने तथा उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरुक बनाता है।

महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ इकाई की स्थापना सर्वथम सितम्बर 2007 में की गई थी। प्रति वर्ष की भांति वर्तमान सत्र 2014–15 में भी महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया, जिसके सदस्य निम्नवत् हैं :–

संयोजक – डॉ० दिव्या नाथ
सह संयोजक – डॉ० दीप्ति वाजपेई
सदस्य – डॉ० रश्मि कुमारी, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० सुशीला चौधरी, डॉ० प्रतिभा तोमर

प्रत्येक कक्षा से एक–एक छात्रा प्रतिनिधि भी नामित सदस्य के रुप में, प्रकोष्ठ में सम्मिलित की गई, जिनके नाम निम्नवत् हैं – कु० निधि (BA I), कु० संजु नागर (BA II), कु० मंजु नागर (BA III), कु० माधुरी (विज्ञान संकाय), कु० निशा सिंह (वाणिज्य संकाय), कु० पूजा (M.A. I) तथा कु० सानू (M.A. II)

महाविद्यालय शैक्षिक कैलेण्डर के अनुपालन में प्रकोष्ठ की गतिविधियों का आरम्भ, दिनांक 18 अक्टूबर 2014 को एक शैक्षिक आयोजन के द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत एक व्याख्यान आयोजित हुआ, जिसका शीर्षक था – "महिला अधिकार –सुरक्षा एवं जागरुकता। संगोष्ठी के प्रारम्भ में प्रभारी डॉ० दिव्या नाथ द्वारा महिला प्रकोष्ठ के स्वरुप एवं उददेश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त महिला आयोग के स्वरुप, कार्यविधि, एवं महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नं० इत्यादि के विषय में भी छात्राओं को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। तदुपरान्त महिला प्रकोष्ठ की सदस्या, डॉ० सुशीला चौधरी द्वारा महिला अधिकार से जुड़े मुददों पर छात्राओं को प्रभावशाली भाषण दिया गया। व्याख्यान के पश्चात् महिला प्रकोष्ठ सह–प्रभारी डॉ० दीप्ति वाजपेई द्वारा, कौमी एकता सप्ताह के अन्तर्गत राष्ट्रीय अखण्डता दिवस के विषय में छात्राओं का ज्ञानवर्धन किया गया तथा समिति सदस्यों सहित छात्राओं ने संयुक्त रुप से देश की एकता एवं अखण्डता, साम्प्रदायिक सद्भाव, अहिंसा, राष्ट्र सुरक्षा एवं स्वच्छता हेतु शपथ ली। इसके अतिरिक्त छात्राओं से सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधान हेतु महिला प्रकोष्ठ के सदस्यों एवं प्रभारी छात्रा छात्राओं को आश्वासन दिया गया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा महाविद्यालयों में संचालित महिला प्रकोष्ठ कार्यक्रमों को 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' अभियान से जोड़े जाने के उपरान्त, दिनांक 2 अक्टूबर 2014 को आयोजित छात्राओं की जागरुकता रैली में, महिला प्रकोष्ठ प्रभारी ने छात्राओं को स्वच्छता सम्बन्धी ज्ञानोपयोगी तथ्यों से अवगत कराया। महाविद्यालय के विभिन्न छात्रा शौचालयों में स्वच्छता सम्बन्धी दिशा निर्देश भी चस्पा किए गए। साथ ही, महाविद्यालय प्रशासनिक भवन के प्रथम तल में हिन्दी विभाग से सीढियों तक छात्राओं से स्वच्छता कार्य कराया गया। छात्रा प्रतिनिधियों के नेतृत्व में कई टोलियाँ बना कर, उन्हें महाविद्यालय परिसर के

सभी क्षेत्रों में समय–समय पर स्वच्छता अभियान चलाने हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही, महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' विषय पर एक नारा लेख प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उक्त प्रतियोगिता में जिन छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया उन सभी छात्राओं को महाविद्यालय वार्षिक समारोह में दिनांक 27 फरवरी 2015 को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 10 फरवरी 2015 को महाविद्यालय रेंजर्स टीम एवं महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में, सरकार के 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जागरुकता अभियान के अंतर्गत एक अंतर–संकाय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था – "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण –

तीनों संकायों के प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष एवं विपक्ष में शक्तिशाली तर्क रखते हुए बहुत सुंदर प्रदर्शन किया, जिसमें कला संकाय विजयी रहा।

विश्व की समस्त महिलाओं से जुड़े विषयों, समस्याओं, समाधानों इत्यादि को एक सूत्र में पिरोकर नारी शक्ति जागृत करने हेतु, संयुक्त राष्ट्र संघ ने दिनांक 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित किया है। इस उपलक्ष्य पर महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ इकाई ने छात्राओं की एक संगोष्ठी आयोजित की जिसमें प्रकोष्ठ सह–प्रभारी डॉ० दीपित वाजपेई द्वारा "नारी सुरक्षा एवं सम्मान में शिक्षा की भूमिका" विषय पर एक व्याख्यान दिया गया।

इसके अतिरिक्त समय–समय पर छात्राओं की बैठक आहूत कर समिति सदस्यों द्वारा छात्राओं की समस्या एवं उनके निवारण हेतु प्रयास किया गया। उक्त सभी गतिविधियों का उद्देश्य यही था, कि छात्राओं में यह संदेश जाए, कि यदि शोषण की कोई घटना होती है, तो उसे छिपाने के बजाए उजागर कर उचित कदम उठा कर, उत्पीड़न करने वाले व्यक्ति को दण्ड दिलाना चाहिए। ऐसा करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षित होना तथा जागरुक होना अति आवश्यक है।

साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद्

डॉ अनीता रानी राठौर
परिषद् प्रभारी

किसी भी देश या समाज के विभिन्न जीवन व्यापारों में या सामाजिक सम्बन्धों में मानवीयता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले आदर्शों की समष्टि को संस्कृति कहा जाता है। वस्तुतः संस्कृति एक पूर्ण अवस्था है जिसमें धर्म, दर्शन व कला का समावेश होता है। संस्कृति मानव की मानसिक, नैतिक, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं कलात्मक जीवन की समग्रता का नाम है। संस्कृति के व्यक्ति एवं समाज पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव के दृष्टिगत संस्कृति को उसके अभिभूत साहित्य से जोड़ते हुए विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी छात्राओं के उत्तरोत्तर विकास एवं परिष्कार हेतु साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद् का गठन किया गया जिसका एकमात्र उद्देश्य छात्राओं की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिभाओं को निखारना उन्हें इन गतिविधियों की तरफ आकृष्ट करना इस तरफ रूझान पैदा करना तथा प्रोत्साहित करना था।

02 अक्टूबर को गांधी – शास्त्री जयन्ती के अवसर पर विश्वविद्यालय निर्देशानुसार महाविद्यालय की चित्रकला विभाग की प्रवक्ता डॉ० सुनीता शर्मा के निर्देशन में "Violence Against world peace" विषय पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कु. मंजू नागर (बी.ए. III) कु. सजू नागर (बी.ए. II) तथा कु. निशा (बी.ए. I)ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किये।

24 अक्टूबर, 2014 को डॉ० ममता उपाध्याय के निर्देशन में प्रेरक प्रसंग लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कु. सिमरन यादव (बी.ए. I) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

11 नवम्बर 2014 को एक बार पुनः डॉ० ममता उपाध्याय के कुशल निर्देशन में 'वर्तमान शिक्षा पद्धति राष्ट्र की आवश्यकता के कितने अनुकूल है' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें छात्राओं ने सोत्साह भाग लिया तथा अत्यन्त रुचिकर तरीके से विषय के पक्ष –विपक्ष में अपने विचार रखें।

04 दिसम्बर 2014 को विस्तृत रुप में संस्कृत विभाग की प्रवक्ता डॉ० दीप्ति वाजपेयी के निर्देशन में 'आशु भाषण प्रतियोगिता, डॉ० अर्चना सिंह (प्रवक्ता हिन्दी) द्वारा 'स्वरचित कविता पाठ' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्या महोदया की उपस्थिति, महावि. प्रवक्ता गण द्वारा भी स्वरचित कविता पाठ अत्यन्त उत्साह वर्धक एवं सराहनीय थे। कार्यक्रम का संचालन परिषद् प्रभारी डॉ० अनीता रानी राठौर द्वारा किया गया।

16 जनवरी 2015 को गृह विज्ञान विषय की प्रवक्ता डॉ० शिल्पी द्वारा 'धर्म निरपेक्ष भारत' विषय पर रंगोली प्रतियोगता करायी गयी जिसमें कु. ललिता पुण्डीर (एम.ए. प्रथम अंग्रेजी) ने प्रथम, कु. अल्का चौधरी (एम.ए. II) गृह विज्ञान) ने द्वितीय तथा कु. मीनाक्षी (बी.ए. III) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त साहि. सां. परिषद् के अन्तर्गत मेहंदी, नृत्य गीत, गजल, गायन इत्यादि प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न करायी गयी। विजयी छात्राओं को सत्रान्त आयोजित होने वाले 'वार्षिकोत्सव' में मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा प्रतियोगिताओं सम्बन्धी प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये। परिषद् के समस्त सदस्य डॉ० अनीता रानी राठौर, डॉ० दीप्ति वाजपेयी, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० ममता उपाध्याय, डॉ० शिल्पी, डॉ० राजेश कुमार यादव, डॉ० प्रमोद मिश्र, डॉ० सुनीता शर्मा एवं डॉ० बबली अरुण वर्षपर्यन्त छात्राओं के मार्गदर्शन, उत्साहवर्धन एवं निर्देशन हेतु कृत संकल्प रहे हैं।

बी० एड० सम्बद्धता
महाविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धि

डॉ० दिव्या नाथ
प्रभारी / सम्बद्धकार्य
बी०एड० सम्बद्धता

उच्च शिक्षा उन्नयन हेतु कृतसंकल्प कु० मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर के लिए वर्तमान सत्र अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा। पाठ्यक्रम तथा पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के अतिरिक्त, छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित करना, महाविद्यालय की संकल्पनाओं में से एक रहा है। इसी सम्बन्ध में छात्राओं की मांग को देखते हुये विगत कई वर्षो से बी०एड० कार्यक्रम संचालित करने हेतु प्रयास किये जा रहे थे, जिनके फलस्वरुप महाविद्यालय में दिनांक 19.11.13 को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ,छब्ब्म्द्ध द्वारा गठित पैनल के निरीक्षण के उपरान्त Letter of Intent (cl.7(9)) प्राप्त हो गया था। तत्पश्चात् उ० प्र० शासन द्वारा महाविद्यालय में बी० एड० संकाय हेतु सृजित पदों पर सात् प्रवक्ताओं की तैनाती की गई, जिन्होंने माह जुलाई 2014 से महाविद्यालय में कार्यभार ग्रहण कर लिया।

सम्बद्धता की अगली कड़ी के रुप में वर्तमान प्राचार्या डा० ज्योत्स्ना गर्ग के व्यक्तिगत प्रयासों के फलस्वरुप महाविद्यालय को NCTE से बहुप्रतिक्षित Letter of Recognition (Cl.7(16)) प्राप्त हुआ जिसके अनुसार महाविद्यालय को 50–50 की दो यूनिट हेतु बी. एकृ पाठ्यक्रम की मान्यता प्रदान की गई। उक्त के आधार पर चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा गठित पैनल के दिनांक 04.03.15 को सफलतापूर्वक निरीक्षण कर महाविद्यालय में बी.एड. संकाय सम्बद्धता हेतु अपनी संस्तुति दिनांक 04.03.15 को सफलतापूर्वक निरीक्षण कर महाविद्यालय में बी.एड. संकाय सम्बद्धता हेतु अपनी संस्तुति वि.वि. धे प्रेषित कर किये जाने की प्रक्रिया की। इस पैनल के नामित सदस्य डॉ. के.सी. शर्मा, प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नोएडा, डॉ. सिंधुबाला, विषय विशेषज्ञ, बी.एम.एल.जी. कॉलेज गाजियाबाद तथा प्रो. इंदिरा ढुल, एम.डी. विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा थे।

ठस सन्दर्भ में भी यह भी उल्लेखनीय है कि बी. एड. सम्बद्धता के प्रयासों के मध्य, Justice Verma Committee के सुझावों के अनुसार, NCTE ने अपने मानकों से परिवर्तन कर दो वर्षो का पाठ्यक्रम लागू कर दिया है। महाविद्यालय में बी. एड. भवन का निर्माण शासन द्वारा पूर्व में ही पूर्ण हो गया था, और जब जुलाई 2015 से नवीन संकाय प्रारम्भ होने की सूचना से जहां एक ओर उ.प्र. शासन उच्च शिक्षा निदेशालय एवं महाविद्यालय सम्बद्धता समिति के प्रयासों को सफलता मिलि वहीं ग्रामीण अंचल में बहुप्रतीक्षित बी.एड. पाठयक्रम खुल जाने से छात्राओं को शैक्षिक उन्नति हेतु नए अवसर प्राप्त हुए।

समान अवसर केन्द्र (प्रायोजक- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली)

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रभारी

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर में समान अवसर केन्द्र की स्थापना जुलाई 2011 में हुई थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित इस केन्द्र की स्थापना विशेष उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की गई –

1. महाविद्यालय की छात्राओं को विभिन्न योजनाओं में समान अवसर प्रदान करना व समाज की मुख्य धारा से जोड़ना।
2. महाविद्यालय की छात्राओं, अध्यापकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के मध्य बेहतर तालमेल को बढ़ावा देना व भेदभावपूर्ण विचारों को हतोत्साहित करना।
3. महाविद्यालय में सामाजिक सद्भावपूर्ण वातावरण को सृजित करना जिसमें विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आई छात्राओं के मध्य शैक्षणिक आदान प्रदान एवं स्वस्थ अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों का विकास हो सके।
4. विद्वत्समाज को, समाज के हाशिये पर जीवन जी रहे व्यक्तियों की समस्याओं एवं उनकी आकांक्षाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना।
5. छात्राओं के मध्य भेदभाव से सम्बन्धित समस्याओं का प्रभावकारी समाधान करना।
6. समाज के कमजोर वर्गों से आने वाली छात्राओं की शिकायतों को सुनाना व उनकी समस्याओं का संतोषजनक समाधान करना व सुझाना।
7. समाज के कमजोर वर्गों के लिये समय–समय पर जारी नोटिफिकेशन / मेमोरेंडा / सरकारी आदेशों एवं विभिन्न सम्बन्धित संस्थाओं और एजेन्सियों की सूचनाओं को प्रचारित व प्रसारित करना।
8. कमजोर वर्गों से आने वाली छात्राओं को शैक्षिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु सरकारी एवं अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करके शैक्षिक एवं आर्थिक संसाधनों का विकास करना।
9. कमजोर वर्गों से आने वाली छात्राओं के लिये प्रवेश / पंजीकरण आदि की प्रक्रिया को आसान बनाना।
10. प्रवेश, नियुक्तियों (शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर पदों) पर कमजोर वर्गों को अनुमन्य प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करना, ताकि उनके कार्य प्रदर्शन को सुधारा जा सकें।
11. महाविद्यालय प्रशासन को अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा लाभ से वंचित रह गये वर्गों की समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना।

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये महाविद्यालय की छात्रा को केन्द्र सरकार व राज्य सरकार तथा अन्य संस्थाओं की लाभकारी योजनाओं के बारे में समय–समय पर सूचित किया जाता रहा है। इन योजनाओं का लाभ वे किस प्रकार उठा सकती हैं, इस हेतु समान अवसर केन्द्र समिति के सदस्य डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० अनीता सिंह, श्री संजीव कुमार व डॉ० ऋचा द्वारा छात्राओं का यथोचित् मार्गदर्शन किया जाता रहा है।

छात्राओं के ज्ञान के सम्यक् विकास हेतु समान अवसर केन्द्र द्वारा निम्नवत् व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

दिनांक 14.11.14 विषय–'वास्तविक प्रसन्नता' वक्ता–श्री अतेन्द्र रावत दिनांक 9.12.14 विषय–'प्राकृतिक चिकित्सा' वक्ता–डॉ० सन्त प्रकाश गोयल।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सेवा योजना, विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र, श्री अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र द्वारा भी विविध अकादमिक गतिविधियों का संचालन व आयोजन किया गया।

समान अवसर केन्द्र के संचालन व विविध व्याख्यानों के आयोजन में महाविद्यालय परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। समस्त कार्यक्रमों का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में ही सम्पन्न हो सका।

बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रभारी

महाविद्यालय में बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम का संचालन सत्र 2013–14 के प्रारम्भ से ही किया जा रहा है। प्रसार कार्यक्रम का उद्देश्य है कि छात्राओं के विविध विषयों पर व्याख्यानों व अन्य माध्यमों से ज्ञान प्रदान किया जाये। इसी उद्देश्य से बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम के तत्वावधान में विभिन्न व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

दिनांक 14.11.14 को विषय 'वास्तविक प्रसन्नता' पर श्री अतेन्द्र रावल द्वारा बोधपरक व्याख्यान दिया गया। दिनांक 9.12.14 को विषय 'प्राकृतिक चिकित्सा' पर डॉ० सन्त प्रकाश गोयल द्वारा विस्तार से जानकारी दी गई डॉ० गोयल द्वारा बताया गया कि किस प्रकार प्रकृति द्वारा चिकित्सा की जा सकती है। उचित आहार विहार द्वारा हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। दिनांक 18.12.14 को विषय मानवाधिकार पर श्री अतेन्द्र रावल द्वारा उपयोगी जानकारी दी गई।

बौद्धिक प्रसार कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान 'जनसंख्या एवं जलवायु परिवर्तन' 'साक्षरता' 'दृश्य–श्रव्य साधनों की सामुदायिक विकास' आदि विषयों पर सारगर्भित व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में संचालित 'श्री अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र' एवं 'स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र' में भी उक्त सम्मानित महापुरुषों के विचारों से वर्तमान युवा पीढी को अवगत कराने हेतु विविध व्याख्यानों, संगोष्ठी एवं सेमीनार का आयोजन किया गया।

समस्त कार्यक्रमों का आयोजन प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के कुशल निर्देशन में ही सम्भव हो सका। बौद्धिक प्रसार समिति की सह–संयोजक डॉ० आशा रानी एवं सदस्य डॉ० जीत सिंह, डॉ० सुशीला, डॉ० मिन्तु, डॉ० प्रमोद कुमार मिश्र का भी कार्यक्रमों के आयोजन में अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

ई० एस० पी० डी० क्लब

श्रीमती रंजना जैन –संयोजक
श्रीमती दीक्षा – सह–संयोजक
श्री अरविन्द यादव – सदस्य

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर के आँगन में संचालित ESPD CLUB का उद्देश्य ग्रामीण अंचल की छात्राओं को अंग्रेजी भाषा ज्ञान एवं व्यक्तित्व विकास के लिये प्रेरित करना है। छात्राओं को एक अवसर प्रदान करना जिससे उनके अंदर के संकोच को दूर करने में उनकी सहायता की जा सके। इस क्लब के प्रति छात्राओं का उत्साह परिलक्षित है कि पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 75 छात्राओं ने इसकी सदस्यता ग्रहण की। क्लब के द्वारा दिनांक 05 / 12 / 14 को छात्राओं के लिये एक Orientation Programme का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में क्लब प्रभारी श्रीमती रंजना जैन ने छात्राओं को व्यक्तित्व का महत्व बताते हुये, व्यक्तित्व विकास के तरीकों से अवगत कराया। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान एवं उसके वार्तालाप में प्रयोग हेतु आवश्यक नियमों की जानकारी भी दी। भूतपूर्व सदस्यों के द्वारा नये सदस्यों को अपने अनुभवों से परिचित कराया गया। छात्राओं की उपलब्धियों को परिलक्षित करने के लिये क्लब के द्वारा दिनांक 09 / 02 / 15 को एक Extempore competition का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम निम्नलिखित है –

1. कु. तनु – B.A. I (प्रथम)
2. कु. तानषी – M.A. II (द्वितीय)
3. कु. अनु – B.A. I (तृतीय)

उक्त तीनों प्रतिभागियों को महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में पुरस्कृत किया गया।

राष्ट्रीय सेमिनार
"महिला सुरक्षा एवं सम्मान के संरक्षण में शिक्षा की भूमिका"
14 फरवरी 2015

डॉ० दीप्ति वाजपेयी
संयोजक

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में दिनांक 14 फरवरी 2015 को उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा अनुदानित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विषय की समसामयिकता से कोई भी संवेदनशील व्यक्ति अनभिज्ञ नहीं है। इस वर्ष गणतन्त्र दिवस की मुख्य थीम "महिला सशक्तिकरण" होने से विषय की अपरिहार्यता और अधिक पुष्ट हुई है।

यह सर्वमान्य लक्ष्य है कि नारी को सशक्त किए बिना किसी भी प्रकार का स्थाई विकास संभव नहीं है। विभिन्न सरकारी एवं स्वयं सेवी संगठनों के बहुविध प्रयासों के फलस्वरूप सैद्धान्तिक स्तर पर इस दिशा में किंचित सफलता अर्जित भी कर ली गई है किन्तु व्यवहारिक स्तर पर स्थिति अभी भी असंतोषजनक ही है जिसका सबसे महत्वपूर्ण कारण समाज में नारी असुरक्षा की भयावह स्थिति है। वस्तुतः विगत कुछ दशकों से नारी की समाज में अपेक्षाकृत कुछ सशक्त होती हुई स्थिति के बावजूद भी उसकी सामाजिक सुरक्षा एक ज्वलन्त प्रश्न बन चुका है जबकि नारी सुरक्षा को सुनिश्चित कर ही परिवार, समाज व राष्ट्र का सर्वोत्तम व स्थाई विकास सम्भव है यह लक्ष्य मात्र कानून बनाने से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए शिक्षा द्वारा समाज में वैचारिक क्रांति लाने की आवश्यकता है। इसी भाव से प्रेरित होकर महाविद्यालय में "नारी सुरक्षा एवं सम्मान में शिक्षा की भूमिका" विषयक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन कर इस समस्या के समाधान की दिशा में एक सार्थक कदम उठाने का प्रयास किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि श्रीमती एनी रजा, महासचिव नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन वूमेन द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलन कर किया गया। श्रीमती एनी रजा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि नारी की सुरक्षा और अस्मिता आज कटघरे में है। जब हम झण्डे व मोमबत्तियाँ लेकर सड़कों पर निकलते है तो हम एक मुद्दा उठाने की कोशिश कर रहे होते है किन्तु हमें सड़कों पर नहीं हर दिल में मशाल जलानी होगी तभी यह समस्या जड़ से विनिष्ट हो सकती है।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन डॉ० अश्वनी कुमार गोयल, संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा ने इस बात पर बल दिया कि नारी सुरक्षा व आत्मसम्मान का मुद्दा क्षणिक चर्चा का विषय नहीं है अपितु इस पर गंभीर मथन होना चाहिए। उन्होने व्यवहारिक उपाय सुझाते हुए कहा कि इसकी शुरुआत हमें अपने घरों से करनी होगी। बचपन से ही संस्कारों के रूप में नारी सम्मान के बीज रोपने होगे तभी भविष्य की सम्भावनाएँ सुन्दर बनेंगी।

संगोष्ठी की अन्य विशिष्ट अतिथि मिस उम.ए.कुलसूम, सीनियर एंकर, एन.डी.टी.वी. ने शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा ही समस्त सफलताओं की कुंजी है तथा नारी सुरक्षा व सम्मान के वर्तमान ज्वलन्त प्रश्न का हल भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। संगोष्ठी संरक्षक डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या) ने आत्मावलोकन व आत्मचिंतन को आवश्यक बताते हुए कहा कि नारी अपनी सुरक्षा के लिए समाज की ओर प्रश्न सूचक निगाहों से देख रही है अतः सामाजिक व्यवस्थाओं के पुनर्मूल्याकंन की आवश्यकता है।

संगोष्ठी का विषय परिचायत्मक उद्बोधन संगोष्ठी संयोजिका डॉ० दीप्ति वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत करते हुए इस बिन्दु पर बल दिया गया कि महिला सशक्तिकरण का मूल भाव महिलाओं को सुरक्षित व सम्मानजनक ढंग से अपने मनोनुरुप जीवन जीने की स्वतन्त्रता, शिक्षा और संस्कारों द्वारा समाज की दुर्गंधित मानसिकता को विनिष्ट कर समाज की प्रत्येक इकाई में सकारात्मक सोच उत्पन्न कर ही प्राप्त की जा सकती है। सेमिनार के मुख्य वक्ता श्री जे.के. पुण्डीर

समाज शास्त्री व प्रो० वी.सी. चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में महिला सुरक्षा एवं गरिमा के विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की।

संगोष्ठी में बुद्धिजीवियों में उमड़ते विचार-प्रवाह को समय सीमा में बाँधना एक कठिन कार्य हैं इसलिए समय प्रबन्धन करते हुए तकनीकी सत्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० राजेश कुमार, एसो० प्रो० दिल्ली विश्वविद्यालय डॉ० रंजना जैन, एसो० प्रो० अंग्रेजी विभाग, कु० मायावती राज० महिला महाविद्यालय बादलपुर एवं तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० दिव्या नाथ, सेमिनार सचिव द्वारा की गई। डॉ० वी.के. शनवाल ने महिलाओं की विभिन्न समस्याओं के समाधान में शिक्षा की प्रभावी भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला । विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रतिभागियों द्वारा महिला सुरक्षा और सम्मान से जुड़े व्यवहारिक पहलुओं पर विस्तृत विचारभिव्यक्ति की गई।

संगोष्ठी में समापन सत्र की विशिष्ट अतिथि का पद श्रीमती सुनीता गोदरा, प्रसिद्ध एशियन मैराथन चैम्पियन द्वारा सुशोभित किया गया। उन्होंने नारी सुरक्षा और सम्मान में खेल एवं शिक्षा के महत्व पर सारगर्भित वक्तव्य प्रदान किया। संगोष्ठी के समापन पर सेमिनार सचिव डॉ० अनीता रानी राठौर द्वारा संगोष्ठी की विस्तृत आख्या प्रस्तुत की गई तथा डॉ० दिव्या नाथ द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

संगोष्ठी के उदघाटन सत्र का संचालन डॉ० ममता उपाध्याय द्वारा, तकनीकी सत्र का संचालन डॉ० अर्चनासिंह द्वारा किया गया। समापन सत्र का संचालन डॉ० किशोर कुमार द्वारा समापन किया गया।

उच्च शिक्षा केन्द्रों में आयोजित इस प्रकार की संगोष्ठियाँ जहाँ छात्र-छात्राओं के बहुमुखी विकास में सहायक होती है वहीं समाज में वैचारिक परिपक्वता उत्पन्न कर किसी समस्या के समाधान हेतु व्यवहारिक पृष्ठभूमि का निर्माण करती है। महाविद्यालय परिवार के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सुखद एवं अविस्मरणीय अनुभव है। विगत वर्षों की भाँति आगामी सत्रों में भी महाविद्यालय इस प्रकार के अकादमिक आयोजनों द्वारा समाज को आदर्श स्वरूप प्रदान करने में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने हेतु कृत संकल्प है।

सेमिनार आख्या

''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की प्रासंगिकता''

(Relevance of Swami Vivekananda's Thoughts in Today's Perspective)

स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र

डॉ० किशोर कुमार
संयोजक–राष्ट्रीय सेमिनार

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा विभिन्न युग प्रवर्तक महान विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अकादमिक जगत तथा जनसामान्य को अवगत कराने हेतु ''भारतीय युग प्रवर्तक सामाजिक विचारक'' (Epoch Making Social Thinks of India) योजना के अन्तर्गत अध्ययन केन्द्रों की स्थापना निःसन्देह एक सराहनीय प्रयास है हम जानते है कि दार्शनिकों का दर्शन, परिपेक्ष्य, परिकल्पना और प्रतिभा सदैव वैश्विक होती है और साथ ही उनकी दृष्टि किसी एक क्षेत्र तक सीमित न रहकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को समृद्ध करती है। उपर्युक्त उददेश्यों की पूर्ति हेतु स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के द्वारा ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की प्रासंगिकता'' (Relevance of Swami Vivekananda's Thoughts in Today's Perspective) विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन दिनांक 19 मार्च 2015 को महाविद्यालय परिसर में किया गया। ''उतिष्ठ, जाग्रत, प्राप्य, वरान्निबोधत्'' अर्थात् उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक अपने लक्ष्य पर न पहुँच जाओ, इस वेदान्तीय वाक्य को समाज में प्रेरक वाक्य के रुप में स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानन्द भारतीय नवजागरण के अग्रदूत माने जाते हैं। समस्त विश्व में भारतीय आध्यात्म का परचम लहराने वाले स्वामी विवेकानन्द ने भारत की गौरवशाली परम्परा एवं संस्कृति के प्रति तत्कालीन भारतीयों के अन्तस् में न केवल आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान का संचार किया अपितु उन्हें यह भी बोध कराया कि कैसे बिना किसी साधन व सुविधा के मात्र एक संकल्प के बल पर समाज को एक नई दिशा प्रदान की जा सकती है।

स्वामी विवेकानन्द के युगयुगीन विचारों एवं शाश्वतः जीवन–दर्शन के स्मरण मात्र से ही अक्षय ऊर्जा का संचरण होता है। समाज को स्वाभिमान, साहस व कर्म की प्रेरणा देने वाले स्वामी विवेकानन्द के इन त्रिमंत्रों से समकालीन मूर्छित समाज में नई ऊर्जा का संचार हुआ। जब स्वामी विवेकानन्द जी यह कहते हैं कि सब कुछ खो देने से बुरा उस उम्मीद को खो देना है जिसके भरोसे हम सब कुछ पुनः पा सकते हैं, तो विश्व की समस्त आशावादी सोच उनके इस वाक्य में समाहित हो जाती है। आज समाज में पुनः सकारात्मक दृष्टिकोण एवं नव जागरण की महती आवश्यकता है। इस उद्देश्य के दृष्टिगत ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की प्रासांगिकता'' विषयक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन, स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र द्वारा इस दिशा में एक लघु परन्तु सकारात्मक प्रयास है।

सेमिनार का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि डॉ० अरूण मोहन शैरी, मुख्य अकादमिक अधिकारी, ब्रिज इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमैंट, नोएडा द्वारा माँ शारदे के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर किया गया। डॉ० अरूण मोहन शैरी ने अपने उद्बोधन में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता के व्यवहारिक पक्ष पर बल देते हुए कहा कि स्वामी विवेकानन्द धैर्य, साहस, उत्तम चरित्र व अनवरत कर्म को सफलता का मूल मंत्र मानते थे और आज समस्त प्रबन्ध

संस्थानों में इसे ही सफलता मंत्र के रूप में युवाओं को प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आन्तरिक प्रसन्नता को अपनाने पर जोर दिया और कहा कि जो जितना मुस्कुराता है वह ईश्वर के उतना ही करीब होता है।

सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ० संजीव कुमार शर्मा, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, ने स्वामी विवेकानन्द के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी विवेकानन्द युवाओं के प्रेरणा स्रोत एवं आदर्श व्यक्तित्व के धनी थे। समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव जगाने वाले स्वामी जी के विचारों को यदि हम आत्मसात् कर लें तो पुनः भारत को समस्त विश्व का सिरमौर बना सकते हैं।

सेमिनार का विषय प्रवर्तन संगोष्ठी संयोजक डॉ० किशोर कुमार द्वारा प्रस्तुत करते हुए कहा गया कि स्वामी विवेकानन्द जी एक युग प्रवर्तक विचारक के रूप में अपने जन्म के 151 वर्ष पश्चात् एवं अपने शरीर त्याग के 112 वर्ष के पश्चात् मानवतावाद, धर्म–अध्यात्म, योग, कर्म, समाज एवं राष्ट्र आदि समस्त विषयों पर पूर्ण प्रासांगिक हैं। वर्तमान भारत में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, यथा धर्म के संबंध में एकान्तिक दृष्टिकोण ने साम्प्रदायिकता के प्रसार में योग दिया है। सामान्यतः धर्म जीवन की आलौकिक आस्था एवं सर्वोच्च सत्य को जानने की अभीप्सा है। जब से मानव जाति ने शब्द संरचना का ज्ञान अर्जित करना आरम्भ किया, सभ्यता और संस्कृति के नये–नये सोपान रचना और आचरण संहिता का सृजन कर समाज को सभ्य तरीके से संचालित करने का क्रम आरम्भ हुआ, भौतिक उपलब्धियों का सुख मानव को लंबे समय तक बांधे नहीं रख सका, फलतः भौतिकता के इतर परमार्थ के धरातल पर कुछ आध्यात्मिक चिंतन की धारा फूटी और विस्तृत हुई। इस आध्यात्मिक चिंतन का लक्ष्य था–शश्वतः सुख की प्राप्ति और परम सत्ता का दर्शन लाभ। धर्म और आध्यात्मिकता का यह सच्चा स्वरूप विश्व के सभी धर्मों का आधार है। स्वामी विवेकानन्द धर्म के इसी स्वरूप को स्वीकार करते हैं। स्वामी जी की पुस्तक धर्म रहस्य के अनुसार धर्म मानव को बन्धनों से मुक्त करने का सशक्त माध्यम है। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब धर्म–सम्प्रदाय को राजनीति तथा सत्ता और शक्ति पाने के लोभ से जोड़ दिया जाता है और धर्म के प्रति संकीर्ण प्रवृत्ति अपनायी जाती है तब स्वामी विवेकानन्द के विचार अधिक प्रासांगिक हो जाते हैं। भारतीय विविधताओं का अध्ययन एवं भारतीय सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चुनौतियों का समाधान, अवधारणागत एकान्तिक मतों को त्यागकर समग्र अनेकान्तवादी संकल्पना से ही संभव है। यह एक वैश्विक सत्य है कि किसी समाज की गतिशीलता उस समाज के व्यक्तियों की मनोदशा, उनकी तार्किकता, वैज्ञानिक अभिरूचि एवं औचित्य की अवधारणा में निहित होती है, जिससे विभिन्न आधुनिक समाज का निर्माण होता है, परन्तु उत्तर आधुनिक सामाजिक संकल्पना उपर्युक्त अवधारणाओं के विभिन्न अवयवों को समग्रता से परीक्षण करने में, निहित है। हमारा वर्तमान उत्तर आधुनिक समाज आज भी प्रायः राष्ट्र के समक्ष उपस्थित चुनौतियों, विचारधाराओं, दार्शनिकों और दर्शनों आदि को तर्क रहित अवधारणाओं पर आधारित पूर्वाग्रहों से ग्रस्त अभिव्यक्ति प्रदान करता है। स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन के आलोक में यह सेमिनार विभिन्न विषयों–मुद्दों पर तार्किक, पूर्वाग्रह रहित, औचित्यपूर्ण नवीन आयाम प्रदान करने में सक्षम होगी हम यही आशा करते हैं।

सेमिनार में तीन तकनीकी सत्रों का संचालन किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० राजेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, आर्य भट्ट कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा, द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० वी० के० शानवाल, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय गौतमबुद्ध नगर द्वारा तथा तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्रीमती रंजना जैन, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर द्वारा की गई। विभिन्न तकनीकी सत्रों में विषय–विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों द्वारा स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन–दर्शन, युवाओं एवं महिलाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण, ओजस्विता से परिपूर्ण उनके सकारात्मक विचारों की प्रासंगिकता और विवेकानन्द जी के कालजयी व्यक्तित्व से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तार से संवाद किया गया।

सेमिनार में समापन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ० राजेश

कुमार ने अपने वक्तव्य में इस बात पर बल दिया कि आज युवा वर्ग को स्वामी विवेकानन्द के विचारों के अनुरूप कर्म का संदेश देने, सामाजिक समानता व नैतिकता प्रदान करने की आवश्यकता है। वर्तमान परिस्थितियों में कोई राजनेता नहीं वरन् स्वामी विवेकानन्द जैसे विचारक एवं क्रान्तिकारी नेतृत्व समाज की सोच बदलकर एक नवजागृत युग की आधारशिला रख सकते हैं।

सत्र के अतिथि वक्ता श्री हीरालाल यादव ने स्वामी विवेकानन्द के पदचिन्हों पर चलने वाले मेजर संदीप उन्नीकृष्णन् का मातृत्व प्रेम, कर्त्तव्य बद्धता एवं संवेदनाओं को हृदय–स्पर्शी शब्दों के माध्यम से वर्णित किया साथ ही हर नागरिक से स्वामी जी के विचारों के अनुरूप स्वः की भावना का परित्याग कर राष्ट्रहित में सर्वस्व अर्पित करने का आह्वान किया।

सेमिनार के अंत मे समापन सत्र की मुख्य अतिथि डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग, प्राचार्या द्वारा अत्यधिक सारगर्भित शब्दों कहा गया कि सकारात्मक सोच वर्तमान समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि हम विवेकानन्द जी के विचार–दर्शन से एक भी सकारात्मक विचार अपने अन्दर समाहित कर अपने कर्म में ढाल सकते हैं तो यह सेमिनार अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल है।

कार्यक्रम के अंत में सेमिनार की आयोजन सचिव डॉ० मोनिका सिंह, द्वारा सेमिनार की विस्तृत आख्या प्रस्तुत की गई तथा सेमिनार संयोजक डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा, ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ० दिव्या नाथ द्वारा, प्रथम तकनीकी सत्र का संचालन डॉ० दीप्ती वाजपेयी द्वारा, द्वितीय तकनीकी सत्र का संचालन डॉ० सुशीला द्वारा तथा तृतीय सत्र का संचालन डॉ० अनीता रानी राठौर द्वारा किया गया। समापन सत्र का मंच संचालन डॉ० अर्चना सिंह ने किया।

हम कृतज्ञ हैं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के जिनके अमूल्य मार्गदर्शन, अनवरत समर्थन एवं सहयोग से सेमिनार का सफल आयोजन सहज रूप में सम्पन्न हो सका।

हम विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करने वाले मुख्य वक्ताओं का भी आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमारे आमंत्रण को सहज रूप में स्वीकार कर अपने अपने सारगर्भित वक्तव्यों से सेमिनार को सार्थक बनाया। देश के विभिन्न भागों से प्रतिभागिता करने आये प्रतिभागी भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने उपस्थिति एवं सक्रिय भागीदारी से सेमिनार की संपूर्ण अवधि को जीवंत बनाए रखा।

मैं व्यक्तिगत रूप से महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्रत्येक कार्य में यथासम्भव अपना सहयोग प्रदान कर सेमिनार को सफल बनाने में महती भूमिका प्रदान की।

डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र

डॉ० ममता उपाध्याय
एसो० प्रो० राजनीति विज्ञान

सुप्रसिद्ध सामाजिक, राजनीतिक चिन्तक, भारतीय संविधान के निर्माता डॉ० भीमराव अम्बेडकर के व्यक्तित्व उनके कार्यों व उनके द्वारा प्रसारित मूल्यों से छात्राओं व स्थानीय नागरिकों को परिचित कराने एवं इस संबंध में अध्ययन तथा शोध को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सत्र 2014–15 में **कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ०प्र०** में **विश्वविद्यालय अनुदान** आयोग के अनुदान से **डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र** का संचालन प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय कि प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के निर्देशन व राजनीति विज्ञान विभाग की प्रवक्ता डॉ० सीमा देवी के समन्वय के साथ यह केन्द्र संचालित हो रहा है। नियमानुसार गठित केन्द्र के सलाहकार मण्डल द्वारा विभिन्न बैठकों दिनांक – 20.12.14, 19.01.15, 21.01.15, 22.01.15 व 31.01.15 में दिए गये सुझावों के अनुसार केन्द्र के तत्वावधान में अनेक कार्य किए गए, जिनका विवरण निम्नवत् है –

त्रैमासिक डिप्लोमा कोर्स का संचालन

6 जनवरी 2015 से 31 मार्च 2015 तक केन्द्र द्वारा छात्राओं के लिए एक त्रैमासिक डिप्लोमा कोर्स का संचालन किया गया, जिसके लिए स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की 51 छात्राओं का पंजीकरण किया गया। डॉ० अम्बेडकर का जीवन व उनकी शिक्षा विषयक पाठ्यक्रमानुसार कुल व्याख्यान संपन्न कराए गए। ये व्याख्यान डॉ० निधि रायजादा, एसो० प्रो० इतिहास, श्रीमति रन्जना जैन, प्रवक्ता अंग्रेजी, डॉ० हेमलता, डॉ० सरिता रानी P.D.F. डॉ० अभय विक्रम सिंह, डॉ० सीमा रानी, श्री अजय कुमार, श्री सचिन कुमार, कु० रीना–शोध छात्रों द्वारा दिए गए। पाठ्यक्रम की पूर्णता पर 7 अप्रैल 2015 को परीक्षा का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र –

केन्द्र के तत्वावधान में "समाज सुधार में डॉ० अम्बेडकर की भूमिका " विषय पर शोध प्रस्ताव तैयार कर पंजीकृत महाविद्यालय एवं पंजीकृत छात्राओं ने अपने अपने स्थानीय ग्रामों में डॉ० अम्बेडकर से संबंधित साहित्य का वितरण कराया।

व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन –

दिनांक 14.01.15 से लेकर 14.03.15 तक केन्द्र द्वारा व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया जिसमें व्याख्यान व परिसंवाद युक्त व्याख्यान दिए गए डॉ० जिले सिंह, समन्वयक– बौद्ध अध्ययन केन्द्र, मवाना, मेरठ द्वारा दिनांक 14.01.15 को "अम्बेडकर लाइफ एण्ड वर्क: ए कन्सैप्चुअल फ्रेमवर्क" विषय पर व्याख्यान दिया गया। द्वितीय व्याख्यान 22.01.15 को प्रो० अर्चना शर्मा, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, विश्व विद्यालय मेरठ द्वारा "डॉ० अम्बेडकर की राष्ट्रीय एकीकरण एवं सामाजिक न्याय की अवधरणा" विषय पर दिया गया। तृतीय व्याख्यान 24.01.15 को जय कुमार सरोहा, एसो० प्रो० रा० वि० एस० डी० कॉलेज गाजियाबाद द्वारा "Social and educational philosophy of DR. B.R. Ambedkar" विषय पर दिया। 29.01.15 को डॉ० डी०वी० सेहरा सेवा निवृत्त–वैज्ञानिक एवं समाज सेवक द्वारा अम्बेडकर के दर्शन व चिन्तन में व्याप्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण विषय पर अतः क्रियात्मक व्याख्यान दिया गया। पाँचवा व्याख्यान प्रो० अजित पाण्डेय, प्रो० समाजशास्त्र, काशी हिन्दु विश्वविधालय द्वारा "social exclusion and effect of ambedkar's thought on contemporary India" विषय पर दिया गया। 13.2.15 को (Hindu Code Bill & Present Status of Women) विषय पर डॉ० वैभव गोयल प्राचार्य स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ द्वारा व्याख्यान दिया गया। 18.2.15 को हिन्दू कोड बिल एण्ड डॉ० सुधीर कुमार टीचिंग असिस्टेंट, समाजशास्त्र विभाग मेरठ विश्वविद्यालय ने "Dr. Ambedkar & Subaltron Presctive" विषय पर व्याख्यान दिया। इन सभी व्याख्यानों को केन्द्र की लाइब्रेरी में सुरक्षित रखा गया है।

वैचारिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम–

डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र व नैक्डोर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 13.2.15 को "महिला हिंसा के विरूद्ध

उमड़ते सौ करोड़" के अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर "हिन्दु कोड बिल एवं वर्तमान में महिलाओं की स्थिति" विषय पर एक वैचारिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अशोक भारती, चेयरमैन नैक्डोर थे। अन्य विशिष्ट अतिथियों– श्रीमति एनी राजा, महासचिव नेशनल फेडरेशन ऑफ इण्डियन वूमेन, डॉ० मनोज कुमार त्रिपाठी, सुश्री सुमेधा भारतीय दलित महिला संगठन की सदस्य, डॉ० वैभव गोयल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर छात्राओं एवं नैक्डोर के प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे नुक्कड़, काव्य–पाठ, लघु नाटिका, गीत, विचार आदि प्रस्तुत किए।

नेशनल सिम्पोजियम का आयोजन–

केन्द्र के सौजन्य से महाविद्यालय में 30.3.15 को एक सिम्पोजियम का आयोजन किया गया जिसका विषय था– भारत में जाति व्यवस्था व समानता की अवधारणा में डॉ० अम्बेडकर के विचार। सिम्पोजियम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग जी ने की मुख्यवक्ता के रुप में सामाजिक कार्यकर्ता श्री रघुबीर सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए । गाँधी अध्ययन केन्द्र, चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय, पंजाब की डॉ० आशु प्राशिका व डॉ० शिवाली अग्रवाल, समन्वयक गाँधीयन अध्ययन केन्द्र इस्माईल पी० जी० कॉलेज, मेरठ, भी इस अवसर पर विशिष्ट वक्ताओं के रुप में उपस्थित रही। सिम्पोजियम में कुल 112 प्रतिभागियों व 51 छात्राओं ने भाग लिया।

प्रोत्साहनात्मक कार्यक्रम –

छात्राओं के मध्य डॉ० अम्बेडकर के विचारों को सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रसारित करने एवं उनके प्रोत्साहन हेतु 9.1.15 को अम्बेडकर के जीवन व कार्यो पर एक पोस्टर व उद्धरण प्रतियोगिता का आयोजन केंद्र के सौजन्य से किया गया। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं कु० रचना, कु० साक्षी गौतम को 15 अप्रैल को डॉ० अम्बेडकर जयन्ती के उपलक्ष्य मे आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया। साथ ही त्रैमासिक डिप्लोमा कोर्स को पूर्ण करने वाली छात्राओं को प्रमाण –पत्र भी दिए गए एवं प्रथम स्थान प्राप्त 3 छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

आगामी सत्र की तैयारियों के साथ महाविद्यालय का यह अध्ययन केंद्र निरन्तर गतिशील है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर

नीलम शर्मा
केयरटेकर टेकर एन.सी.सी.

महाविद्यालय में छात्राओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से आयोजित विभिन्न गतिविधियों में राष्ट्रीय कैडेट कोर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय कैडेट कोर नई दिल्ली में अपने मुख्यालय सहित एक भारतीय सैन्य कैडेट कोर है। यह विद्यालय और महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए एक स्वैच्छिक संगठन है। राष्ट्रीय कैडेट कोर का आदर्श वाक्य है – एकता और अनुशासन। इसका उद्देश्य युवाओं में चरित्र, साहस, मैत्री, साहचर्य, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, क्रीडा कौशल और निस्वार्थ सेवा की भावना आदि गुणों का विकास करके उन्हें सुयोग्य नागरिक बनाना है। इसके अतिरिक्त संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित ऐसी युवाशक्ति का निर्माण करना है जो सशस्त्र सेना सहित, जीवन की समस्त स्थितियों में नेतृत्व प्रदान करे और राष्ट्रसेवा के लिए तत्पर रहें।

इन्हीं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय में छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु राष्ट्रीय कैडेट कोर की यूनिट संचालित है। वर्ष 2014–15 में 36 नवीन कैडेट्स नामांकित किए गए एवं 'C' सर्टिफिकेट परीक्षा हेतु 10 कैडेट्स मार्च माह में आयोजित परीक्षा में सम्मिलित हुए। महाविद्यालय में 13 यू. पी. गर्ल्स बटालियन के P.T. स्टाफ के सहयोग से वर्ष पर्यन्त 40 परेड आयोजित की गई। महाविद्यालय के कैडेट्स ने दो कैम्पों में भाग लिया।

CATC126, GDM Modinagar 18 सितम्बर से 27 सितम्बर 2014 NIC सावित्री देवी फुले गर्ल्स इन्टर कॉलेज, कासना (ग्रेटर नोएडा) 20 जनवरी 2015 से 31 जनवरी 2015

22 नवम्बर 2014 को महाविद्यालय में एन.सी.सी. दिवस का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर जी.सी. आई. आकांक्षा सिन्हा, बी.एच.एम. धर्मेन्द्र सिंह, एस. मण्डल एवं एस.के. गुप्ता ने उपस्थित होकर एन.सी.सी. दिवस के आयोजन के कारण और महत्व पर विचार व्यक्त किये। जी. सी.आई आकांक्षा सिन्हा ने छात्राओं को जीवन में एकता और अनुशासन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए एक अच्छे नागरिक बनने की प्रतिज्ञा दिलाई।

राष्ट्रीय कैडेट कोर ने सामुदायिक विकास की विभिन्न गतिविधियों को स्वीकार किया है, जिनका उद्देश्य कैडेट्स में समुदाय के प्रति निःस्वार्थ सेवा भाव, श्रम के सम्मान, स्वावलम्बन की महत्ता पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता और समाज के कमजोर वर्ग के उन्नयन की भावना को आत्मसात् कराना है। राष्ट्रीय कैडेट कोर की विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों में छात्राओं ने पूर्ण उत्साह में भाग लिया। 22 नवम्बर 2014 को एन.सी.सी. दिवस के आयोजन पर गाँव बादलपुर में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता रैली निकाली गई और वृक्षारोपण किया गया। इनके अतिरिक्त मानवाधिकार दिवस, एकता दिवस, मतदाता दिवस एवं महाविद्यालय में आयोजित अन्य कार्यक्रमों में एन.सी.सी. कैडेट्स ने अपनी मुख्य भूमिका का निर्वाह किया। साहिल गैस एजेन्सी के सहयोग से आयोजित एच.पी.गैस सुरक्षा कार्यक्रम में पूर्ण सहभागिता प्रदान की।

रेंजर्स

डॉ० सुशीला
प्रभारी

भारत स्काउट एवं गाइड एक ऐसा अभियान है जो 'व्यक्ति' से ज्यादा सेवा को महत्व देता है, राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करने और युवा विकास गतिविधियों को बढावा देनें में और युवाओं के विकास हेतु एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना बहुत जरूरी है ताकि उन्हें राष्ट्र एवं मानव सेवा के लिये तैयार किया जा सके। भारत की 54% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला 25 वर्ष से कम आयु वर्ग का युवा है। राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करने और युवा विकास गतिविधियों को बढावा देने वाले सहयोगपूर्ण वातावरण का निर्माण करने व परिश्रम, अनुशासन समर्पण का दृढ संकल्प और युवा वर्ग के मन में सम्यक् मूल्यों का संचार करना और उनके व्यक्तित्व के मानसिक शारीरिक व आध्यात्मिक पहलुओं में निखार लाना तथा एक आदर्श लोकतंत्र आर्थिक शक्ति और एक प्रगतिशील समाज बनाने में आज भारत स्काउट एवं गाइड महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

राष्ट्रीय एकता और युवा वर्ग की शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिये स्काउटिंग एवं गाईडिंग भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण वियव में एक सशक्त माध्यम के रूप में सीपित है। महाविद्यालय में वर्ष 2001 से अहिल्याबाई टीम के नाम से रेंजर इकाई संचालित है। रेंजर इकाई के माध्यम से रेंजर्स के बहुमुखी व्यक्तित्व विकास, उनका प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने एवं उनमें सेवा, सौहार्द सहयोग, स्वावलम्बन, स्वदेश प्रेम और विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास करना है।

सत्र 2014–15 में रेंजर्स इकाई का महाविद्यालय विकास में योगदान एवं आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं मे कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत् है :

1. रेंजर्स में हस्तशिल्प के कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक हस्त शिल्प कला कौशल प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 04–12–2014 को किया गया।
2. दिनांक 20. 12. 2014 को रासायनिक विषयों पर एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें विषय का चयन लॉटरी प्रणाली के माध्यम से किया गया।
3. रेंजर्स इकाई व महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में महा० वि० में महिला कल्याण एवं बाल विकास विभाग केन्द्र सरकार द्वारा चलाये जा रहे जनहित में जारी बेटी बचाओ बेटी पढाओ जागरूकता अभियान का आरम्भ 9 फरवरी 2015 से हुआ इसके अन्तर्गत स्लोगन, पोस्टर निर्माण, निबन्ध आदि प्रतियोगिता आयोजित की गई।
4. कार्यक्रम की इसी श्रृंखला के अन्तर्गत 10 फरवरी 2015 को अर्न्तसंकाय वाद–विवाद प्रतियोगिता विषय – "वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण : एक वास्तविकता या भ्रम" Women Empowerment in Contemporare Sehario : A reality or myth" आयोजित की गई।
5. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ श्रृंखला के अन्तर्गत दिनांक 11 फरवरी 2015 को एक जागरूकता रैली रेंजर यूनिट व महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई जो N.H 91 से होकर गाँव बादलपुर में समाप्त हुई।
6. त्रिद्विवर्षीय रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 09 फरवरी 2015 से 11 फरवरी 2015 तक सम्पन्न हुआ। शिविर मे प्रशिक्षण के दौरान रेंजर्स को गाँठे बन्धन, गैजेर व प्राथमिक चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
7. रेंजर्स यूनिट द्वारा सत्र 2014–15 के अन्तर्गत महाविद्यालय में मतदाता जागरूकता रैली, मानव अधिकार जागरूकता रैलियों का आयोजन N.S.S., N.C.C. व Rangers के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण सत्र (2014–2015) व प्रशिक्षण शिविर के दौरान रेंजर यूनिट द्वारा आयोजित प्रतियेगिताओं का परिणाम निम्नवत रहा :–

क्रम स.	प्रतियोगिता	छात्र का नाम व कक्षा	स्थान
1.	हस्तशिल्प कला कौशल प्रतियोगिता	कु० बबीता B.A. II कु० वर्षामार्य M.A. II कु० रीता B.A. I कु० अंजू नागर B.A. III	प्रथम स्थान द्वितीय स्थान तृतीय स्थान तृतीय स्थान
2.	निबन्ध प्रतियोगिता	कु० मनीषा B.Sc. I कु० निधि B.Sc. I कु० रूबी M.A. I (अर्थ शा०)	प्रथम स्थान द्वितीय स्थान तृतीय स्थान
3.	पोस्टर प्रतियोगिता	कु० प्रियंका M.A. I कु० निधि B.Sc. I कु० स्नेहा B.Com. II	प्रथम स्थान द्वितीय स्थान तृतीय स्थान
4.	स्लोगन प्रतियोगिता	कु० अंजू नागर B.A.III कु० नेहा गोस्वामी B.A. I कु० स्नेहा B.Com. II	प्रथम स्थान द्वितीय स्थान तृतीय स्थान
5.	वाद–विवाद प्रतियोगिता	कु० रूबी M.A.I पक्ष कु० गीता M.A.I विपक्ष	विजेता टीम कला संकाय
6.	तम्बू निर्माण प्रतियोगिता सर्वश्रेष्ठ टोली पुरस्कार – हरियाणा राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए दुर्गाभाभी टोली ने सत्र 2014–15 का सर्वश्रेष्ठ टोली पुरस्कार प्राप्त किया।		
7.	सर्वश्रेष्ठ रेंजर सत्र 2014–15 सम्पूर्ण सत्र की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए सर्वश्रेष्ठ रेंजर का पुरस्कार प्रदान किया जाता है सत्र 2014–15 में कु० रूबी शर्मा M.A. II year ने सर्वश्रेष्यठ रेंजर का पुरस्कार हासिल किया। इसके अतिरिक्त सत्र भर में रेंजर यूनिट पौधा रोपण अभियान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं केन्द्र सरकार के मिशन 2019, स्वच्छ भारत, स्वथ्थय भारत आदि अभियान जो कि महाविद्यालय स्तर पर चलाया जा रहा है इत्यादि में अपना योगदान दे रही हैं।		

हिन्दी साहित्य परिषद्

डॉ. अर्चना सिंह
हिन्दी विभाग

महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं के विकास व उनके व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षा के महत्व के साथ–साथ शिक्षणेत्तर गतिविधियों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। महाविद्यालय में विभागीय परिषद् इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई सतत् प्रयास रत रहती हैं। हिन्दी साहित्य परिषद् के तत्वावधान में समय–समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती रही हैं जो कि छात्राओं को एक दिशा देने के साथ–साथ ही उनके मनोबल को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। इसी क्रम में हिन्दी साहित्य परिषद् में सत्र 2014–15 में विभागीय परिषद् का गठन कर अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्वरचित कविता लेखन प्रतियोगिता में कु० अमृता (एम०ए० द्वितीय ने) प्रथम स्थान प्राप्त किया। निबन्ध लेखन प्रतियोगिता "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कबीर की प्रासंगिकता" विषय पर प्रथम स्थान के (एम०ए० द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान सरिता (बी०ए० प्रथम वर्ष) ने तृतीय स्थान कु० गीता शर्मा (एम०ए०) प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया। समस्त विजेता छात्राओं को वार्षिक समारोह में पुरस्कृत किया गया।

संस्कृत परिषद्

''सं गच्छध्वं, सं वदध्वं,
सं वो मनांसि जानताम्''

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
परिषद् प्रभारी

अह की भावना से मुक्त ऋग्वेद के इस मंत्र से अभिप्रेरित महाविद्यालय की संस्कृत परिषद् का उद्देश्य छात्राओं का शैक्षिक व मानसिक विकास करना मात्र नहीं है अपितु यह विद्यार्थियों मे सामाजिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं समस्त मानवीय गुणों का अभ्युदय करने के लक्ष्य को लेकर हर सत्र मे महाविद्यालय में गठित की जाती है। इस दृष्टि से विगत वर्षों की भाँति सत्र 2014–15 में भी निम्नवत् संस्कृत परिषद् का गठन किया गया –

अध्यक्ष	–	प्राचार्या
परिषद् प्रभारी	–	डॉ० दीप्ति वाजपेयी
सह–प्रभारी	–	सुश्री नीलम शर्मा
उपाध्यक्ष	–	कु० पूजा रानी
सचिव	–	कु० अन्नू
सह–सचिव	–	कु० कविता रानी
कक्षा प्रतिनिधि	–	कु० संजू नागर, कु० चित्रा

सत्र पर्यन्त संस्कृत परिषद् के तत्वावधान में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत दो प्रतियोगितायें भी आयोजित की गयी। जिनके परिणाम निम्नवत् रहे –

1. श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता –
कु० ज्योति, बी०ए० II – प्रथम स्थान
कु० गीता, बी०ए० I – द्वितीय स्थान
कु० मोनिका, एम०ए० I – तृतीय स्थान
2. निबन्ध प्रतियोगिता –
कु० सन्जू नागर, बी०ए० II – प्रथम स्थान
कु० अन्नु, एम०ए० I – द्वितीय स्थान
कु० पूजा रानी, एम०ए० II – तृतीय स्थान

भारतीय संस्कृति की भाषा होने के कारण संस्कृत का महत्व स्वयंसिद्ध है ही, किन्तु संस्कृत आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी सदुपयोगी है। संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता संस्कृत साहित्य में वर्षित पर्यावरण चेतना, नारी सशक्तिकरण का चित्रण, संस्कृत का व्यापक शब्दकोश, संस्कृत से अन्य भाषाओं की उत्पत्ति इत्यादि अन्तहीन तथ्य संस्कृत के महत्व को द्विगुणित कर देते है। महाविद्यालय संस्कृत परिषद्, छात्राओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास कर उनके सर्वांगीण अभ्युदय के साथ–साथ संस्कृत भाषा की समसामयिकता व महत्व को जन–जन तक प्रचारित व प्रसारित करने के लक्ष्य के प्रति कृत संकल्प है।

अंग्रेजी परिषद्

श्रीमती रंजना जैन
परिषद प्रभारी

अंग्रजी परिषद् के तत्वावधान में वर्ष 2014–15 में विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें बी.ए. एवं एम.ए. की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विभाग में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत् है –

1. Paper Presentation Competition :-

A. ललिता पुण्डीर M.A. I प्रथम
B. भावना सिंह M.A. II द्वितीय
C. प्रतिमा M.A. I तृतीय

2. Essay Writing Competition :-

A. अंजु नागर – B.A. III प्रथम

B. मीनाक्षी – B.A. III द्वितीय
C. ज्योति शर्मा – B.A. II तृतीय

विजेता छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कार प्रदान किये गये। दिनांक 15/10/2014 को विभागीय छात्र–परिषद् का गठन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के लिये निम्नलिखित छात्राओं का चयन किया गया –
अध्यक्ष – कु० भावना सिंह M.A. III sem.
उपाध्यक्ष – कु० मनीषा भाटी M.A. I sem.

इतिहास परिषद्

डॉ० निधि रायजादा
परिषद् प्रभारी

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (जिला गौतमबुद्ध नगर) की स्थापना 1997 में हुई। प्रारम्भिक सत्र से महाविद्यालय में इतिहास विषय को पाठ्यक्रम में स्थान प्राप्त हुआ। वर्ष 2004 में जब इतिहास विषय में एम.ए. की कक्षाएं प्रारम्भ हुईं, स्नातक स्तर से यह महाविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर इतिहास विभाग को 2012 में चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के द्वारा शोध केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त हुई तथा शोध निर्देशन हेतु डॉ० अर्चना वर्मा, एसो. प्रो. डॉ० आशा रानी, डॉ० किशोर कुमार, डॉ० निधि रायजादा तथा डॉ० अनीता सिंह को अनुमोदन प्राप्त हुआ। वर्तमान में अनेक छात्र/छात्राएं शोध कार्य में संलग्न हैं।

अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त छात्राओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए सम सामयिक शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों में सहभागिता करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 16 सितम्बर 2014 को इतिहास परिषद् का गठन निम्नवत् किया गया, जिसके तत्वावधान में वर्ष पर्यन्त अनेक कार्यक्रमों तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया–

1. संरक्षक	डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या)
2. अध्यक्ष	डॉ० अर्चना वर्मा (एसोसिएट प्रोफेसर)
3. उपाध्यक्ष	डॉ० आशा रानी (एसोसिएट प्रोफेसर)
4. सचिव	डॉ० निधि रायजादा (एसोसिएट प्रोफेसर)
5. सहसचिव	डॉ० अनीता सिंह (एसोसिएट प्रोफेसर)
7. सहकोषाध्यक्ष	डॉ० राजेश यादव (असिसटेन्ट प्रोफेसर)

विभाग के सभी प्राध्यापकों सहित प्रत्येक कक्षा से दो–दो प्रतिनिधि छात्राओं करा चयन किया गया, जिनके नाम निम्नवत् हैं–

छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा
1. अनु भाटी	श्री सूरजभान	M.A. II
2. मधु पायला	श्री वीरसिंह	M.A. II
3. कोमल नागर	श्री विनोद नागर	M.A. I
4. सोनिका नागर	श्री रविन्द्र सिंह	M.A. I
5. रेशमा	श्री आस मोहम्मद	B.A. III
6. साक्षी कसाना	श्री सुभाष चन्द कसाना	B.A. III
7. शालू	श्री उदयवीर सिंह	B.A. II
8. निशा गलिक	श्री नसरूद्दीन	B.A. II
9. रीता	श्री राजवीर सिंह	B.A. I
10. पिंकी	श्री रविन्द्र सिंह	B.A. I

सत्र के प्रारम्भ में बी.ए. प्रथम वर्ष तथा एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए एक ओरियन्टेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को इतिहास विषय के अध्ययन की उपयोगिता के विषय से संबंधित जानकारी प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त समय–समय पर अन्य कार्यक्रम छात्राओं के ज्ञानवर्धन हेतु आयोजित किये गये जिनके विषय निम्नवत् हैं–

1. राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता
2. भारतीय पर्यटक स्थल व भारतीय विरासत
3. ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा तथा पर्यावरण प्रदूषण के उन पर कुप्रभाव

[illegible] के अवसर पर स्नातकीय स्तर में छात्राओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके सौजन्य पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभाग में छात्राओं हेतु स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन निरन्तर किया गया। स्नातक स्तर पर निम्न प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

निम्न प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार — कु० अंजु पुत्री श्री जयसिंह सिंह (बी०एस०सी)

द्वितीय पुरस्कार — कु० मिताली पुत्री श्री महेन्द्र सिंह (बी०एस०सी)

तृतीय पुरस्कार — कु० मालिका सिंह भारी पुत्री श्री नरेन्द्र भारी (बी०एस०सी)

स्नातकोत्तर स्तर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था — भारत पर्यावरण स्थली का ऐतिहासिक महत्व विषयक में स्थायी विकास का सौजन्य। इस संगोष्ठी में छात्राओं के विचार

1 प्रथम स्थान — कु० नवेमल नागर पुत्री श्री विनीत कुमार एम०ए०।

2 द्वितीय स्थान — कु० सोनिका रानी पुत्री श्री सोमनाथ एम०ए०।

द्वितीय स्थान — कु० वर्षा नागर पुत्री श्री जयसिंह सिंह एम०ए०।

3 तृतीय स्थान — कु० सोनिका नागर पुत्री श्री रविन्द्र सिंह एम०ए०।

उपर्युक्त सभी छात्राओं को 27/2/15 को हुये वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह में प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

राजनीतिशास्त्र विभागीय परिषद् - 2014-15

डॉ० दिव्या नाथ
परिषद् प्रभारी

शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का उद्देश्य, ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ, विद्यार्थी जीवन का सर्वांगीण विकास करना भी है। इस हेतु, जीवन में सफलता के शिखर तक पहुँचने के लिए विद्यार्थियों का पठन-पाठन के अलावा शिक्षणेतर गतिविधियों में सहभागिता भी अति आवश्यक है। इससे, न केवल सम-सामाजिक विषयों एवं समस्याओं से उनका परिचय बढ़ता है, बल्कि एक ऐसा मंच भी उपलब्ध होता है, जिससे वे अपने विचारों एवं प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त कर, अपनी बुद्धि की विशेषात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं को निखारित कर सकें। महाविद्यालय में विभागीय परिषदें, इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई, सतत प्रयासरत रहती हैं। महाविद्यालय की छात्रायें भी विभाग की गतिविधियों में रूचि लेती हुई, न केवल अधिक संख्या में राजनीति शास्त्र का एक पाठ्य विषय के रूप में चयन करती हैं, बल्कि शिक्षणेतर कार्यक्रमों में भी सहर्ष एवं उत्साहपूर्वक भाग लेती हैं।

छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिवर्ष एक परिषद् का गठन किया जाता है। विद्यमान सत्र 2014-2015 में निम्नलिखित प्राध्यापक एवं छात्राएं सर्वसम्मति से विभिन्न पदों के लिए चयनित की गईं-

परिषद् प्रभारी- डॉ० दिव्या नाथ

सदस्य- डॉ० ममता उपाध्याय, डॉ० सीमा देवी, डॉ० पंकज चौधरी

कक्षा प्रतिनिधि - कु० रचना नागर (एम.ए. द्वितीय वर्ष)
कु० नेहा रानी (एम.ए. प्रथम वर्ष)
कु० अनीता (एम.ए. प्रथम वर्ष)
कु० अंजु नागर (बी.ए. तृतीय वर्ष)
कु० रेखा (बी.ए. द्वितीय वर्ष)
कु० तनु (बी.ए. प्रथम वर्ष)

वर्तमान सत्र में राजनीतिशास्त्र परिषद् के तत्वावधान में दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रथम प्रतियोगिता आशु भाषण के रूप में थी, जिसमें दहेज प्रथा, फैशन, पर्यावरण संरक्षण, विद्यार्थी जीवन जैसे विषयों पर छात्राओं को त्वरित विचार व्यक्त करना था। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया बी.एस.सी तृतीय वर्ष की कु. सोनाली तथा बी.ए. प्रथम वर्ष की कु. चित्रा शर्मा ने। बी.एस.सी. प्रथम वर्ष की कु. निधि वर्मा, तथा बी.एस.सी तृतीय वर्ष की कु. चंचल नागर क्रमशः द्वितीय स्थान पर रहीं। प्रतियोगिता का निर्णय डॉ० ममता उपाध्याय एवं डॉ० सीमा देवी ने किया।

दूसरी प्रतियोगिता क्विज प्रतियोगिता के रूप में आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागी छात्राओं से सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे गए। सर्वाधिक अंक प्राप्त कर इस प्रतियोगिता में भी कु. सोनाली बी.एस.सी. तृतीय वर्ष प्रथम स्थान पर रहीं। कु. शाइन बी.ए. प्रथम वर्ष एवं कु. सोनू एम.ए. द्वितीय वर्ष द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं। प्रतियोगिता का निर्णय डॉ० पंकज चौधरी द्वारा किया गया। उपर्युक्त सभी छात्राओं को महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में दिनांक 27 फरवरी 2015 को विभागीय परिषद् द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस वर्ष दिनांक 14 फरवरी 2015 को महाविद्यालय में उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा अनुदानित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें राजनीति शास्त्र तथा अंग्रेजी विभाग सह-संयोजक विभाग थे, तथा विभाग प्रभारी डॉ० दिव्या नाथ एवं डॉ० अनीता राठौर आयोजन सचिव। विभाग की एम.ए. द्वितीय वर्ष की दो छात्राओं कु. रचना नागर एवं कु. सोनू द्वारा उक्त सेमिनार में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

अर्थशास्त्र परिषद्

श्रीमती भावना यादव
परिषद् प्रभारी

छात्राओं की सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु सत्र 2014–15 में अर्थशास्त्र परिषद् का गठन दिनांक 27.10.2014 को निम्नवत् किया गया :–

अध्यक्ष	– प्राचार्या
परिषद् प्रभारी	– श्रीमती भावना यादव
उपाध्यक्ष	– कु. बीना शर्मा M.A. III Sem.
सचिव	– कु. नेहा रावत M.A. I Sem.
सह–सचिव	– कु. संघमित्रा B.A. III
सदस्य	– कु. चेतना शर्मा B.A. II
सदस्य	– कु. आरती चौहान B.A. I

छात्राओं की कलात्मक अभिव्यिक्त को प्रोत्साहित करने के लिए अर्थशास्त्र परिषद् के तत्वावधान में एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक 'सतत् विकास' था। परिषद् द्वारा एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें बी.ए. की छात्राओं द्वारा उत्साहपूर्वक सहभागिता की गई। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाली छात्राओं के उत्साहवर्धन हेतु वार्षिकोत्सव में दिनांक 27 फरवरी 2015 को विभागीय परिषद् द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

समाजशास्त्र परिषद्

डॉ० ने०पी० सिंह
विभाग प्रभारी
समाजशास्त्र

सत्र 2014–15 में पूर्व की भाँति इस सत्र में भी समाजशास्त्र परिषद् का गठन किया गया। समाजशास्त्र परिषद् के अन्तर्गत छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया –

निबन्ध प्रतियोगिता :–

प्रथम स्थान – कु० गीता शर्मा पुत्री श्री राजेन्द्र शर्मा बी.ए. II
द्वितीय स्थान – कु० मोनिका भाटी पुत्री श्री ऋषिपाल – एम.ए. I
तृतीय स्थान – अनीता पुत्री श्री जगबीर सिंह – एम.ए. II

स्लोगन प्रतियोगिता :–

प्रथम स्थान – कु० संघ मित्रा नागर पुत्री श्री ज्ञानेन्द्र नागर बी.ए. III
द्वितीय स्थान – कु० सीमा शर्मा पुत्री श्री बिजेन्द्र शमा एम.ए. II
तृतीय स्थान – निशा पुत्री श्री राजेश – एम.ए. I

पोस्टर प्रतियोगिता :–

प्रथम स्थान – कु० तुलिका पुत्री श्री परमजीत सिंह एम.ए. I
द्वितीय स्थान – कु० लीना शर्मा पुत्री श्री महेश शर्मा – एम.ए. II
तृतीय स्थान – कु० नेहा तेवतिया पुत्री श्री जसबीर तेवतिया – एम.ए. II

शैक्षणिक सत्र 2013–14 के अन्तर्गत राजवती श्री अतसिंह एम.ए. II ने सर्वाधिक अंक (64.85) प्राप्त किये।

गृहविज्ञान परिषद्

डॉ० संगीता गुप्ता
परिषद् प्रभारी

सत्र 2014–2015 में गृहविज्ञान विभाग द्वारा परिशद् का गठन दिनांक 22.11.2014 को किया गया।

गृहविज्ञान विभाग छात्राओं के सर्वांगीण विकास का पक्षधर है, जो न केवल सैद्धान्तिक शिक्षा पर बल देता है बल्कि छात्राओं को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करते हुए उन्हें रोजगार परक शिक्षा के प्रति भी जागरूक बनाने का प्रयास करता है। विभाग के समस्त प्रवक्तागण अपनी उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के द्वारा छात्राओं के विकास हेतु प्रतिवर्ष विभिन्न क्रियाकलापों पर भी विशेष बल देती है। साथ ही उनके पाठ्यक्रम को दृश्यश्रव्य, संचार माध्यमों के द्वारा प्रस्तुतीकरण, व्याख्यान आदि के द्वारा उन्हें सेमेस्टर परीक्षा व वार्षिक परीक्षा के लिए तैयार कराया जाता है।

गृहविज्ञान विभाग की छात्राओं को नवीन तकनीकियों से परीचित कराने एवं शैक्षिक गतिविधियों को सरल बनाने की दृष्टि से विभाग द्वारा समय–समय पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाता रहा है। प्रत्येक वर्ष छात्राओं की प्रतिभा को बाहर निकालने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है। प्रतियोगी छात्राओं को उनके उत्साहवर्धन हेतु पुरस्कृत भी किया जाता है।

इस वर्ष छात्राओं के द्वारा दिनांक 11.12.2014 को थाल सज्जा प्रतियोगिता तथा 17.12.2014 को 'अनुपयोगी वस्तु को उपयोगी बनाना' प्रतियोगतिओं का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम क्रमशः निम्न रहा:–

थाल सज्जा प्रतियोगिता

अंजलि चौधरी – प्रथम – एम.ए. प्रथम वर्ष
शिवानी यादव – द्वितीय – एम.ए. प्रथम वर्ष
अनीता – तृतीय – बी.ए. तृतीय वर्ष

अनुपयोगी वस्तु को उपयोगी बनाना

आरती – प्रथम – बी.ए. द्वितीय वर्ष
सोरता – द्वितीय – एम.ए. प्रथम वर्ष
ज्योति शर्मा – तृतीय – बी.ए. प्रथम वर्ष

हमारी छात्रायें महाविद्यालय से डिग्री प्राप्त करके विभिन्न संस्थानों में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं। इग्नू से डिप्लोमा प्राप्त करके कई विख्यात अस्पतालों में 'डाइटीशियन' का कार्य कर रही हैं।

महाविद्यालय द्वारा आयोजित प्रत्येक क्रिया–कलापों में गृहविज्ञान की छात्राएं रंगोली–अल्पना, पुष्प सज्जा बनाकर उत्साहपूर्वक अपना हुनर प्रदर्शित करती हैं। गृहविज्ञान–विभाग को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग तथा विभाग की समस्त योग्य एवं कर्मठ प्राध्यापिकाओं डॉ० दीपा चन्द, डॉ० संगीता गुप्ता, डॉ० शिवानी वर्मा, श्रीमती शिल्पी का विशेष सहयोग रहता है।

भौतिक विज्ञान परिषद्

डॉ० ऋचा
परिषद् प्रभारी

गत वर्षों की भाँति वर्ष 2014–15 में दिनांक 14/10/2014 को भैतिकविज्ञान परिषद् का गठन किया गया। परिषद् के विभिन्न पदों पर जिन छात्राओं का चयन किया गया उनका विवरण निम्नवत् है –

संरक्षक – डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या)
प्रभारी / अध्यक्ष – डॉ० ऋचा
उपाध्यक्ष – कु० ज्योति पुत्री श्री लोकेश शर्मा B.Sc. III
सचिव – कु० प्रज्ञा रघुवंशी पुत्री श्री श्री मनोज रघुवंशी B.Sc. II
संयुक्त सचिव – कु० शालू शर्मा पुत्री श्री बृजेश शर्मा B.Sc. III
कक्षा प्रतिनिधि –
B. Sc. I - कु० साक्षी रानी पुत्री श्री सतेन्द्र पाल
B.Sc. II - कु० मधु शर्मा पुत्री श्री विनोद कुमार शर्मा
B. Sc. III - कु० ज्योति पुत्री श्री हरीश

इस परिषद् के अन्तर्गत दिनांक 2.2.2015 को एक प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें तीनों कक्षाओं से लगभग 40 छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत निम्नलिखित छात्राओं ने स्थान प्राप्त किये, जिन्हें भौतिक विज्ञान परिषद् की तरफ से वार्षिकोत्सव में पुरस्कृत किया गया।

प्रथम स्थान – सृष्टि बैसोया पुत्री श्री श्री सतेन्द्र बैसोया B.Sc. III (Bio)
द्वितीय स्थान – मनीषा चौहान पुत्री श्री जोगेन्द्र सिंह चौहान B. Sc. (Maths)
तृतीय स्थान – नम्रता सिंह पुत्री श्री हरीश सिंह B.Sc. I (Maths)

संगीत परिषद्

डॉ० बबली अरूण
परिषद् प्रभारी

संगीत प्रकृति के कण–कण में विद्यमान होने के कारण इस धरातल के समस्त जीवों को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित करता है। संगीत मात्र मनोरंजन का साधन ही नहीं, जीविकोपार्जन का साधन भी है। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014–15 से महाविद्यालय में संगीत विषय का शुभारम्भ किया गया।

महाविद्यालय में होने वाले राष्ट्रीय पर्वों (26 जनवरी, 2 अक्टूबर व 15 अगस्त) पर छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में आयोजित होने वाली 2 'राष्ट्रीय संगोष्ठियों' में भी छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। महाविद्यालय में संचालित "डॉ० बी. आर. अम्बेडकर शिक्षा संस्थान" के अन्तर्गत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में भी छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया गया और इस अवसर पर "उठेंगे सौ करोड़ लोग संस्था" द्वारा संगीत विभाग' को पुरस्कृत भी किया गया। महाविद्यालय में होने वाले 'वार्षिक क्रीड़ा समारोह व महाविद्यालय के 'वार्षिक समारोह' के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति का उत्तरदायित्व संगीत विभाग द्वारा पूर्ण निष्ठा से निभाया गया और छात्राओं का प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा। छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु 'संगीत विभागीय परिषद्' का गठनः किया गया जिसके अन्तर्गत संगीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम निम्नवत् रहा –

गोल्डी कुमारी – बी.ए. I प्रथम
प्रिया नागर – बी.ए. I द्वितीय
सोनिया – बी.ए. I तृतीय

समस्त विजयी छात्राओं को वार्षिक समारोह में पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

भूगोल परिषद्

कनक कुमार
परिषद् प्रभारी

भूगोल प्रकृति एवं मानव जीवन का विज्ञान है। इसका अध्ययन क्षेत्र पृथ्वी से लेकर समस्त ज्ञात ब्रहमाण्ड तक फैला है। यही कारण है कि संसार में मौजूद सभी विषयों का कोई न कोई पक्ष हम अवश्य ही भूगोल में पढते हैं। भूगोल इन्हीं कारणों से अन्तरा अनुशासनिक विषय बन पाया है। इसके साथ भूगोल सांस्कृतिक विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान को जोड़ने वाली कडी है। वर्तमान समय से भूगोल का मुख्य केन्द्र बिन्दु मानव हो गया है। इसीलिए भूगोल विभाग परिषद् द्वारा समय–समय पर अनेक प्रतियोगितायें होती रहती हैं, जिससे छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके।

भूगोल विभागीय परिषद् के अन्तर्गत शैक्षणिक सत्र 2014–15 में आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नलिखित है –

1. वाद–विवाद प्रतियोगिता :–
प्रथम स्थान – सोनम नागर पुत्री श्री ब्रहमपाल सिंह नागर – एम० ए० प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान – बुशरा रिज़वी पुत्री श्री मुज़ाहिद – एम० ए० प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान – मोनिका पुत्री श्री शीशपाल – एम० ए० प्रथम वर्ष

2. क्विज प्रतियोगिता :–
प्रथम स्थान – पूजा पुत्री श्री जयवीर सिंह – बी० ए० तृतीय वर्ष
द्वितीय स्थान – पिंकी पुत्री श्री सत्यवीर सिंह – बी० ए० तृतीय वर्ष
तृतीय स्थान – सोनू नागर पुत्री श्री धर सिंह – बी० ए० प्रथम वर्ष

वार्षिक क्रीड़ा समारोह

डॉ० सत्यन्त कुमार
परिषद् प्रभारी

दिनांक 19 फरवरी 2015 को कु० मायावती राजकीय महिला महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर में दो दिवसीय 15 वाँ वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन किया गया इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री मदनलाल, पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेटर ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर एवं दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया इस अवसर पर उनके स्वागत में छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया और आख्या क्रीड़ा परिषद् के सदस्य श्री कनक कुमार द्वारा प्रस्तुत की गयी मुख्य अतिथि ने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि छात्रायें क्रीड़ा क्षेत्र में आये व अपना नाम रोशन करें और साथ में सकारात्मक सोच भी रखनी चाहिए क्योंकि सकारात्मक सोच और अनुशासन से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। पूर्व क्रीडा चैम्पियन द्वारा मशाल दौड़ एवं खिलाड़ी छात्राओं को शपथ ग्रहण करायी गयी, प्रभारी के द्वारा मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय परिवार को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत् रहे

100 मी. दौड़

	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
1. काजल नागर	कर्मवीर	B.A. I	प्रथम
2. गुड्डी शर्मा	रामअवतार शर्मा	B.A. II	द्वितीय
3. रीतू नागर	राजपाल नागर	B.Com. II	तृतीय

चक्र–प्रक्षेपण

1. रचना नागर	श्री तेग सिंह	M.A. II	प्रथम
2. अन्जु नागर	श्री सरदार सिंह	B.A. III	द्वितीय
3. अनु भाटी	श्री सूरजभान भाटी	M.A. II	तृतीय

गोला प्रक्षेपण प्रतियोगिता

1. रचना नागर	श्री तेग सिंह	M.A. II	प्रथम
2. लक्ष्मी नागर	श्री सरदार सिंह	B.A. I	द्वितीय
3. ज्योति भाटी	श्रीनिवास भाटी	B.Com. II	तृतीय

माला फेंक प्रतियोगिता

1. लक्ष्मी नागर	श्री सरदार सिंह	B.A. I	प्रथम
2. ज्योति भाटी	श्रीनिवास सिंह	B.Com. II	द्वितीय
3. अन्जु नागर	श्री सूरजभान भाटी	B.A. III	तृतीय

लम्बी कूद प्रतियोगिता

1. रूमाना	श्री यामीन खान	B.A. II	प्रथम
2. शमा राघव	श्री रामकुमार	B.A. III	द्वितीय
3. गुड्डी शर्मा	श्री रामअवतार शर्मा	M.A. II	तृतीय

ऊँची कूद प्रतियोगिता

1. अनुपम नागर	श्री सतपाल नागर	B.A. III	प्रथम
2. मासूम	श्री अनिल नागर	B.A. III	द्वितीय
3. रचना नागर	श्री तेग सिंह नागर	B.A. II	तृतीय

रस्सी कूद प्रतियोगिता

1. गीता शर्मा	श्री राजेन्द्र शर्मा	B.A. II	प्रथम
2. गुलिरता	श्री नोशेर	B.A. III	द्वितीय
3. मीनाक्षी	श्री महेन्द्र सिंह	M.A. II	तृतीय

म्यूजिकल चेयर

1. ज्योति भाटी	श्री निवास भाटी	B.Com. II	प्रथम
2. रचना नागर	श्री तेग सिंह नागर	M.A. II	द्वितीय
3. गीता शर्मा	श्री राजेन्द्र शर्मा	B.A. II	तृतीय

200 मी. दौड़

1. काजल नागर	श्री कर्मवीर नागर	B.A. I	प्रथम
2. गुड्डी शर्मा	श्री रामअवतार शर्मा	B.A. II	द्वितीय
3. गीता शर्मा	श्री राजेन्द्र शर्मा	B.A. II	तृतीय

20 फरवरी 2015 को वार्षिक क्रीड़ा का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री एस के त्यागी, प्रोजैक्ट मैनेजर लोक निर्माण विभाग ग्रेटर नोएडा उपस्थित रहे।

क्रीड़ा प्रभारी डॉ० सत्यन्त कुमार ने मुख्य अतिथि का पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा खेल खिलाड़ी की आत्मा है। खेल धैर्य, ईमानदारी एवं

परिश्रम जैसे गुणों का विकास करते हैं।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि क्रीड़ा में भाग लेने का महत्व है विजय प्राप्त करने का नहीं। "खेलों से स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का निर्माण होता है।" प्राचार्या महोदया जी ने प्रभारी को सफल आयोजन हेतु बधाई दी।

इस वर्ष की चैम्पियन छात्रा रचना नागर पिता श्री तेग सिंह M.A. द्वितीय वर्ष रही। मुख्य अतिथि श्री एस के त्यागी एवं महाविद्यालय की प्राचार्या के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किये गये। महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों एवं समस्त कर्मचारियों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम के सफल आयेजन में अपना योगदान दिया।

जन्तु विज्ञान परिषद्

डॉ दिनेश चन्द्र शर्मा
परिषद् प्रभारी

जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा सत्र 2014–15 में समस्त कक्षायें स्मार्ट कक्ष में पी.पी.टी., ऐनीमेशन, वीडियो, विजुलाइजर आदि के द्वारा ली गयी तथा छात्राओं को शिक्षण के बाद प्रत्येक दिन आई.सी.टी. के उपयोग कर 5 मिनट के लिये विषय से सम्बन्धित किसी भी प्रसंग पर व्याख्यान देने की अनिवार्यता की गयी। जिसमें समस्त छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जन्तु विज्ञान की छात्राओं में शोध भावना विकसित करने हेतु प्रोजैक्ट बनाने को कहा गया, जिसे समस्त छात्राओं ने सत्र के अंत में उपलब्ध कराया। प्रोजैक्ट के अंक भी निर्धारित किये गये जो प्रायोगिक परीक्षा में बाह्य परीक्षक के आंकलन के बाद जोडें भी जायेंगे। सत्र में विभाग में एक छात्रा को इन्सपायर फेलोशिप भी प्राप्त हुई है।

पाठ्यक्रम के अतिरिक्त छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु विभाग द्वारा सत्रपर्यन्त विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस–2015" के अवसर पर विज्ञान सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत दिनांक 23.02.15 को "राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की भूमिका" विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी, दिनांक 24 को डॉ० मकसूद अहमद द्वारा व्याख्यान दिया गया, दिनांक 26 को "राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की भूमिका" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया दिनांक 27 को "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस" पर स्लाईड शो दिखाया गया तथा सप्ताह के अंत में डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग, प्राचार्या के सहयोग एवं मदद से एक वृहद विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें अपोलो हॉस्पिटल , लक्ष्मीनगर, नई दिल्ली के डॉ० जितेन्द्र गुप्ता, डॉ० रश्मी एवं महाविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० मकसूद अहमद निर्णायक के रुप में आमंत्रित थे तथा उसी दिन विजेता छात्राओं को प्राचार्या एवं निर्णायक मंडल के सदस्यों द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

सत्र के समापन पर प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा अपने कनिष्क साथियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

आख्या शिक्षाशास्त्र विभाग

डॉ० सोनम शर्मा
परिषद् प्रभारी

शिक्षा मनुष्य के अन्दर निहित जन्मजात और अर्जित प्रतिभाओं का पूर्ण विकसित करती है। शिक्षा के द्वारा मानसिक, शारीरिक, अध्यात्मिक ही नहीं अपितु सामाजिक गुणों का भी विकास होता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये केवल पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है अपितु पाठ्येत्तर क्रियाओं की भी आवश्यकता है। इसी लिए गत वर्षो की भांति इस सत्र में भी शिक्षाशास्त्र परिषद् का गठन किया गया जिसके अन्तर्गत निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियागिताओं के परिणाम निम्नवत् है :–

निबन्ध प्रतियोगिता :–

सन्जू नागर – बी.ए. I प्रथम पुरस्कार
साक्षी कसाना – बी.ए. III द्वितीय पुरस्कार
मन्जू नागर – बी.ए. III तृतीय पुरस्कार

निबन्ध प्रतियोगिता :–

पायल शर्मा – बी.ए. I प्रथम पुरस्कार
पूजा शर्मा – बी.ए. I द्वितीय पुरस्कार
नेहा – बी.ए. I तृतीय पुरस्कार

विजयी छात्राओं को वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

चित्रकला विभाग

डॉ० सुनीता शर्मा
परिषद् प्रभारी

किसी भी देश की संस्कृति आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक उपलब्धियों की प्रतीक होती है। यह संस्कृति उस सम्पूर्ण–देश के मानसिक विकास को सूचित करती है अतः किसी देश की संस्कृति का अध्ययन करने के लिए उस देश की कलाओं का ज्ञान परम आवश्यक है, कला के द्वारा देश के समाज, दर्शन तथा विज्ञान की यथोचित छवि प्रतिबिम्बित हो जाती है, परन्तु कला मानव आत्मा की वह क्रिया है, जिसमें मन और शरीर दोनों की अनुभूति निहित है अतः कला मानव संस्कृति का प्राण है। जिसमें देश तथा काल की आत्मा मुखरित होती है, मानव ने अपने जीवन की कोमलतम भावनाओं को तथा संघर्षमय जीवन को कला कृतियों के रुप में रेखा और आकार के माध्यम से अपनी प्रगति, आत्मा और युग का सदैव स्वागत तथा चित्रांकन किया है।

इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 2014–15 में महाविद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में छात्राओं ने चित्रकला विभाग की ओर से साज–सज्जा की । विभिन्न राष्ट्रीय पर्वो जैसे – 26 जनवरी, 15 अगस्त 2 अक्टूबर और महाविद्यालय में आयोजित नेशनल सेमिनार 15 फरवरी 2015 एवं 19 मार्च को तथा वार्षिक क्रीड़ा–समारोह, वार्षिकोत्सव एवं महाविद्यालय के सौन्दर्यकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु चित्रकला विभाग में चित्रकला परिषद् का गठन करके विभिन्न प्रतियोगितायें की गयीं। जिसमें दो प्रतियोगितायें पोट्रेट एवं स्टिल लाइफ विषय पर हुयी। जिसके परिणाम स्वरुप बी०ए० प्रथम एवं बी०ए० द्वितीय, तृतीय सम्मिलित हुये हैं।

1. पोट्रेट
   प्रथम पुरस्कार – निर्मल – बी०ए०II, श्री शान्ति स्वरुप
2. स्टिल लाइफ
   प्रथम पुरस्कार – निशा – बी०ए० I, श्री जोगेन्द्र सिंह
   समस्त प्रतियोगी छात्राओं को वार्षिकोत्सव 2014–15 में पुरस्कृत किया गया।

महाविद्यालय परिवार

डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग, प्राचार्या

कला संकाय

हिन्दी विभाग

1. डॉ. रश्मि कुमारी : एसो. प्रोफेसर
2. डॉ. अर्चना सिंह : एसो. प्रोफेसर
3. डॉ. जीत सिंह : असि. प्रोफेसर
4. डॉ. मिन्तु : असि. प्रोफेसर

अंग्रेजी विभाग

1. श्रीमती रंजना जैन : एसो. प्रोफेसर
2. डॉ. अनीता रानी राठौर : एसो. प्रोफेसर
3. श्रीमती ज्योति यादव : असि. प्रोफेसर
4. श्रीमती दीक्षा : असि. प्रोफेसर

संस्कृत विभाग

1. डॉ. दीप्ति वाजपेई : असि. प्रोफेसर
2. कु. नीलम शर्मा : असि. प्रोफेसर
3. श्री प्रमोद कुमार मिश्र : असि. प्रोफेसर
4. श्रीमती कनक लता यादव : असि. प्रोफेसर

इतिहास विभाग

1. डॉ. अर्चना वर्मा : एसो. प्रोफेसर
2. डॉ. आशा रानी : एसो. प्रोफेसर
3. डॉ किशोर कुमार : असि. प्रोफेसर
4. डॉ. निधि रायजादा : एसो. प्रोफेसर
5. डॉ. अनीता सिंह : एसो. प्रोफेसर
6. डॉ. राजेश यादव : असि. प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

1. डॉ. दिव्या नाथ : एसो. प्रोफेसर
2. डॉ. ममता उपाध्याय : एसो. प्रोफेसर
3. डॉ. सीमा देवी : असि. प्रोफेसर
4. डॉ. पंकज चौधरी : असि. प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

1. श्री जितेन्द्र पाल सिंह : एसो. प्रोफेसर
2. डॉ. सुशीला : असि. प्रोफेसर
3. डॉ. हरेन्द्र कुमार : असि. प्रोफेसर
4. डॉ. विनीता सिंह : संविदा प्रवक्ता

अर्थशास्त्र विभाग

1. डॉ. मोनिका सिंह : एसो. प्रोफेसर
2. श्रीमती भावना यादव : असि. प्रोफेसर
3. श्रीमती पवन : असि. प्रोफेसर
4. डॉ. वन्दना शर्मा : संविदा प्रवक्ता

शिक्षाशास्त्र विभाग

1. डॉ. सोनम शर्मा : संविदा प्रवक्ता

गृहविज्ञान विभाग

1. डॉ. दीपा चन्द : एसो. प्रोफेसर
2. डॉ. संगीता गुप्ता : एसो. प्रोफेसर
3. डॉ. शिवानी वर्मा : असि. प्रोफेसर
4. श्रीमती शिल्पी : असि. प्रोफेसर

भूगोल विभाग

1. डॉ. मीनाक्षी लोहनी : असि. प्रोफेसर
2. श्री कनक कुमार : असि. प्रोफेसर
3. श्रीमती निशा यादव : असि. प्रोफेसर

शारीरिक शिक्षा विभाग

1. डॉ. सत्यन्त कुमार : असि. प्रोफेसर
2. श्री धीरज कुमार : असि. प्रोफेसर

चित्रकला विभाग

1. डॉ. अनु महाजन : असि. प्रोफेसर

संगीत विभाग

1. डॉ. बबली अरुण : असि. प्रोफेसर

विज्ञान संकाय

जन्तु विज्ञान विभाग

1. डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा : एसो. प्रोफेसर

वनस्पति विज्ञान विभाग

1. डॉ. प्रतिभा तोमर : असि. प्रोफेसर

रसायन विज्ञान विभाग

1. श्रीमती नेहा त्रिपाठी : असि. प्रोफेसर

भौतिक विज्ञान विभाग

1. डॉ. ऋचा : असि. प्रोफेसर

गणित विभाग

1. डॉ. ऋचा जैन : असि. प्रोफेसर

वाणिज्य संकाय

1. डॉ. अरविन्द कुमार : असि. प्रोफेसर
2. श्री संजीव कुमार : असि. प्रोफेसर

शिक्षा संकाय

1. मो० वकार रजा : असि. प्रोफेसर
2. श्री सुधीर कुमार : असि. प्रोफेसर
3. श्री अरविन्द कुमार : असि. प्रोफेसर
4. श्री मणिक रस्तोगी : असि. प्रोफेसर
5. श्री बलराम सिंह : असि. प्रोफेसर
6. श्री उदय प्रकाश पासवान : असि. प्रोफेसर
7. श्री रतन सिंह : असि. प्रोफेसर

शिक्षणेत्तर कर्मचारी

पुस्तकालयाध्यक्ष : पद रिक्त
कार्यालय अधीक्षक : पद रिक्त
वरिष्ठ लिपिक : श्री दीपक कुमार गुप्ता (सम्बद्ध क्षेत्रीय उ.शि.का. मेरठ)
कनिष्ठ लिपिक : श्री महेश सिंह भाटी
अर्दली : 3 पद रिक्त
स्वीपर : 1 पद रिक्त
कार्यालय परिचर : 1 पद रिक्त
प्रयोगशाला सहायक : श्री चन्द्र प्रकाश कुमदानन्द भट्
प्रयोगशाला परिचर : 1 पद रिक्त
भूगोल विभाग : 4 पद रिक्त
: श्री मुकेश शर्मा
: 6 पद रिक्त

महाविद्यालय परिवार

प्रथम पंक्ति (बाएँ से दाएँ) डॉ. दिनेश चन्द्र, डॉ.अनीता रानी राठौर, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. मोनिका सिंह, डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या), श्रीमती रंजना जैन, डॉ. संगीता गुप्ता, डॉ. दिव्या नाथ, श्री जे.पी. सिंह

द्वितीय पंक्ति (बाएँ से दाएँ) डॉ. राजेश कुमार यादव, श्री संजीव कुमार, श्री धीरज कुमार, डॉ. अनीता सिंह, डॉ.कृचा, श्रीमती दीक्षा, श्रीमती भावना यादव, डॉ. दीप्ति वाजपेयी, श्रीमती शिल्पी, डॉ. विनीता सिंह, डॉ. मिन्तु, डॉ. निधि रायजादा, डॉ. बबली अरुण, डॉ. सीमा, डॉ. आशा रानी, डॉ. सुशीला, डॉ. अरविन्द कुमार यादव, डॉ. जीत सिंह आनन्द

तृतीय पंक्ति (बाएँ से दाएँ) डॉ. सत्यन्त कुमार, डॉ. हरेन्द्र कुमार, डॉ. कनक कुमार, डॉ. वन्दना शर्मा, डॉ. सुनीता शर्मा, डॉ. सोनम शर्मा, डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. निशा यादव, डॉ. वकार रजा, डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र, डॉ. पंकज चौधरी, डॉ. किशोर कुमार, श्री आनन्द स्वरुप त्यागी

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

प्रथम पंक्ति (बाएँ से दाएँ) श्री आनन्द स्वरूप त्यागी (पुस्तकालयाध्यक्ष) डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या), श्री महेश भाटी (कार्यालय अधीक्षक)
द्वितीय पंक्ति (बाएँ से दाएँ) श्री मुकेश कुमार, श्री कुमुदानन्द, श्री चन्द्रप्रकाश

VISION

To provide low cost quality higher education to the girl students of socio-economically weaker sections of the area, in order to bridge the rural-urban divide and thus bring about holistic national development.

परिकल्पना

इस क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभेदों को दूर करते हुए समग्र राष्ट्र का विकास करना।

MISSION

As a unit of Uttar Pradesh Government Higher Education, "Kumari Mayawati Govt. Girls Post Graduate College, Badalpur" is engaged in pursuit of academic excellence, in order to achieve the empowerment of women in the adjoining rural area by:

- the development of leadership skills, inner strength and self-reliance,

- inculcate moral values and tolerance and

- making new technological innovations available to the target group, in order to prepare them to face national and global challenges.

संकल्प

उ.प्र. राज्य उच्च शिक्षा की इकाई के रूप में ''कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर'' ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर निम्न बिन्दुओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है।

– छात्राओं में मनोबल, आत्मनिर्भरता एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना।

– उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सहिष्णुता की भावना विकसित करना।

– नवीन तकनीकी एवं नवाचारों के माध्यम से छात्राओं में राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना।